ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

भक्ति की लहरें

(भजन माला - तृतीय पुष्प)

प्रकाशक : ✆ : 4007123

आर्य समाज (सैन्ट्रल) सैक्टर-15, फरीदाबाद

सौजन्य : वर्मा परिवार, 1455/14, फरीदाबाद

आर्य समाज (सैन्ट्रल) सैक्टर–19

द्वारा संचालित गतिविधियाँ

दैनिक यज्ञ व सत्संग

प्रातः 6.00 से 7.00 बजे तक

धर्मार्थ औषाधालय

हौम्योपैथिक :– सायं 5.00 से 7.00 बजे तक
एक्यूप्रेशर :– प्रातः 9.00 से 11.00 बजे तक

धर्माथ होम्योपैथिक चिकित्सालय

सायं 5.00 से 7.00 बजे तक
स्थानः– कम्युनिटी सेंटर, निकट ब्लॉक 1–ए पार्क एन.आई.टी. फरीदाबाद

योग, आसन एवं प्राणायाम

प्रातः 6.00 से 7.00 बजे तक

(केवल महिलाओं के लिए)
प्रातः 10.00 से 11.00 बजे तक
सायं 5.00 से 6.00 बजे तक

दयावती धर्मार्थ फिजियोथैरेपी चिकित्सा केन्द्र

प्रातः 9.00 से 12.00 बजे तक
सायं 4.30 से 7.30 बजे तक

महिला सत्संग

वीरवार, सायं 4.00 से 6.00 बजे तक

साप्ताहिक सत्संग

रविवार, प्रातः 7.30 से 9.30 बजे तक

बच्चों का कार्यक्रम

माह के प्रत्येक पाँचवें रविवार प्रातः 7.30 से 9.30 बजे तक

रक्तदान शिविर

आर्य समाज में समय–समय पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है।

विवाह संस्कार

वैदिक रीति से विवाह संस्कार कराया जाता है तथा इस का प्रमाण–पत्र भी दिया जाता है।

कम्बल वितरण

प्रति वर्ष शरद् ऋतु में झुग्गी–झोपड़ी के गरीबों की पहचान कर उन्हें कम्बल वितरण किये जाते हैं।

आर्य समाज में यज्ञ संस्कार हेतु पूर्णकालिक सुयोग्य पुरोहित का प्रबन्ध है। अपने यहाँ यज्ञ, सत्संग करवाने हेतु प्रधान, मंत्री अथवा पुरोहित से सम्पर्क करें।
सम्पर्क सूत्र : 9811254275, 9810741014
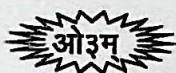
भक्ति की लहरें

(भजनावली-तृतीय पुष्प)

परामर्श : शिव कुमार टुटेजा, प्रधान

संयोजक एवं संपादक : आनन्द स्वरूप चावला, मन्त्री

प्रकाशक : आर्य समाज (सैण्ट्रल) सैक्टर-15, फरीदाबाद

भक्ति की लहरें

मुद्रक : रोनिज़ा प्रिंटर्स,
3B-6, B.P., एन.आई.टी. फरीदाबाद

संस्करण : प्रथम

सृष्टि संवत् : 1,97,29,49,110

दयानन्दाब्द : 186

वि० सं० श्रावण वदी कृष्ण, पंचमी 2066
तदनुसार रविवार, दिनांक 12 जुलाई 2009

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.

स्मृतियाँ-श्रद्धासुमन

ईश्वर स्तुति गीत

प्रार्थना गीत

उपासना गीत

प्रार्थना

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर! आप अनन्तकाल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को आप ही प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो कुछ शुभ और हितकर है उसे आप बिना माँगे स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो, आप के आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। आपकी चरण-शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत्पिता परमेश्वर! हम में सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो। हम आपकी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें। अन्तःकरण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो! हम आप को ही पुकारते हैं और आप का ही आँचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभो! हम में सात्त्विक प्रवृत्तियाँ जागृत हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अंहकार-शून्यता इत्यादि शुभ भावनाएँ हमारी सम्पत्ति हों। हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो, आप के संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान् तथा विशाल हो।

हे प्रभो! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो। दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले आप के चरणारविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो। इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करें।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

संपादकीय

स्व० श्री घनश्याम लाल वर्मा जी का संक्षिप्त परिचय

प्रेरणा के स्रोत स्व० श्री घनश्याम लाल वर्मा जी का जन्म 20.3.1937 को बटाला (पंजाब) निवासी गण्डोत्रा परिवार में हुआ। आप के पिता जी का नाम श्री चुन्नी लाल तथा माता जी का नाम श्रीमती प्रीतम देवी था। आप के पिता जी रेलवे विभाग में कार्यरत थे। श्री वर्मा जी अपने माता-पिता के परिवार में सब से अनुज सन्तान थे। आप के बड़े भ्राता श्री आनन्द किशोर गण्डोत्रा तथा उन की धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्रा गण्डोत्रा जी हैं। आप की तीन बहनें थी। श्रीमती दर्शन स्व. श्री खरैती लाल जी की धर्मपत्नी हैं। दूसरी बहन श्रीमती कमला जी स्व. श्री मोहन लाल जी की धर्मपत्नी हैं। तीसरी बहन स्व. श्रीमती बिमला जी स्व. श्री कुन्दन लाल जी की धर्मपत्नी थी।

श्री वर्मा जी ने बारहवीं कक्षा तक शिक्षा पंजाब में प्राप्त की। ततपश्चात् पटियाला के थापर कॉलेज से प्रथम श्रेणी में इन्जीनियरिंग की परीक्षा पास की। पढ़ाई पूरी हो जाने पर आपने एस्कोर्ट ट्रेक्टर्स में नौकरी शुरु की। 25.11.1964 में आपका विवाह आयु० शशि जी के साथ हुआ। आप की धर्मपत्नी आई.ए.आर.आई. में वैज्ञानिक पद पर सेवारत थी।

कालान्तर में आप ने निजी फैक्ट्री लगाने का मन बनाया। वर्ष 1983 में एस्कोर्ट की नौकरी से त्यागपत्र देकर अपने इस विचार को क्रियान्वित किया तथा 'के.डी. ऑटो' के नाम से फैक्टरी लगा ली। इस नये कार्य के शुरु में अनेक अड़चनों का सामना किया तथा धैर्यपूर्वक कार्य करते रहे।

अक्टूबर 1984 में ब्रेन ट्यूमर का आप्रेशन कराना पड़ गया। आपने कार्य को इतने सुचारु रूप से सैट किया था कि आप की अनुपस्थिति में भी कार्य में कोई विघ्न नहीं पड़ा। लगभग 3 माह स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण घर से ही टेलीफोन पर निर्देश देकर कार्य करवाते रहे।

ठीक हो जाने पर फिर दुगुने वेग से कार्य किया तथा अब नये स्थान पर अपनी फैक्टरी 'लिब्रा ऑटो' के नाम से खोली। कठोर श्रम के कारण यहाँ भी सफलता मिली। परिणाम स्वरूप बड़ी जगह खरीदकर 'श्री चक्रा प्रा. लि.' के नाम से नई फैक्टरी स्थापित की। अकेले इतने बड़े कार्य को संभालना, उसका बार-बार विस्तार करना, उनके कठोर श्रम, दृढ़-संकल्प, शक्ति, साहस, धैर्य और दूर-दर्शिता का परिचय देता है।

वर्ष 1989 में आप के पुत्र श्री दीपक जी ने त्रिचुर से इंजीनियरिंग की परीक्षा पास की। एस्कोर्टस ट्रेक्टर में एक वर्ष काम किया। फिर अपने पिता जी के साथ अपनी कम्पनी का कार्य सम्भालना शुरु कर दिया। पिता पुत्र दोनों ने मिलकर बड़े पुरुषार्थ से कार्य को खूब आगे बढ़ाया।

दिनांक 22-02-1992 को श्री वर्मा जी ने अपने पुत्र चि० दीपक का शुभ विवाह आयु० तनु के साथ बड़े हर्षोल्लास के साथ किया जिनकी दो पुत्रियाँ कु० तरुनिमा तथा कु० रिधि घर की लक्ष्मी बनी। दिनांक 10-12-1994 को अपनी पुत्री कु० संगीता का शुभ विवाह चि० संदीप विज के साथ बड़ी धूम-धाम से किया जिनका एक पुत्र मिहिर घर का चिराग बना।

जुलाई 1997 में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शशि वर्मा जी आई.ए.आर.आई. से सेवा निवृत्त हो गई। उसके उपरान्त आप ने फरीदाबाद सैक्टर-14 में अपना घर बनाया तथा

22.2.99 को गृह प्रवेश किया। फरीदाबाद में आ कर वर्मा जी धार्मिक कार्यों में अत्यधिक रुचि लेने लगे। वर्ष 2003 में अपने पुत्र श्री दीपक वर्मा जी को फैक्ट्री का पूरा कार्यभार सौंप कर स्वयं धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में लीन हो गये। सर्वप्रथम उन्होंने आर्य समाज सैक्टर-15 की यज्ञशाला का विस्तार अपने व्यय द्वारा अपनी देखरेख में करवाया। इस यज्ञशाला का उद्घाटन भी उन के कर कमलों द्वारा कराया गया।

अब श्री वर्मा जी का अधिकांश समय सन्ध्या, हवन, सत्संग, भजन-कीर्तन, स्वाध्याय तथा परोपकार कार्यों में बीतने लगा तथा फिर अपने बड़ भ्राता श्री आनन्द किशोर तथा भाभी श्रीमती इन्द्रा गण्डोत्रा जी के साथ देहरादून के वैदिक साधन आश्रम तपोवन जाने लगे। वहाँ साधना भी की तथा तपोवन आश्रम हेतु साथ लगती 1000 वर्ग गज भूमि खरीदकर पार्क का निर्माण कराया। आश्रम के बीच की दीवार तुड़वा कर यज्ञशाला को भव्य रूप पदान कर चार चाँद लगा दिये। श्री वर्मा जी ने आश्रम का भण्डार-गृह भी संगमरमर का बनवा दिया।

वर्ष 2006 में आश्रम के अपने पार्क में एक सुन्दर भवन का निर्माण कराया। 24.11.06 को आश्रम के आन्तरिक सदस्यों ने स्वामी दिव्यानन्द जी के कर कमलों द्वारा उद्घाटन करवाया।

26.11.2006 को देहरादून से वापिस फरीदाबाद आ गये। भवन निर्माण कार्य पूरा होने पर वह अपनी जीवन संगिनी के साथ 15.04.07 से 22.04.07 तक आश्रम में साधना करने चले गये। तथा 23.04.07 को फरीदाबाद वापिस आ गये।

अब उनकी योजना थी कि वह जुलाई मास में आश्रम

के भवन का उद्घाटन करवायेंगे तथा इस अवसर पर पारिवारिक यज्ञ का भी आयोजन करवायेंगे। किन्तु विधाता को शायद यह मंजूर नहीं था।

23 मई 2008 को वर्मा जी ने प्रातः सैर की और यज्ञ किया। फिर नाश्ता करने के उपरान्त 8.30 बजे सो गये। लगभग 9.50 बजे सोते-2 बेहोशी की हालत में सोफे से गिर गये। फिर से ब्रेन ट्यूमर के रोग ने उन्हें घेर लिया। दोबारा फिर आप्रेशन करवाया। दिल्ली तथा कोलकाता के डाक्टरों का इलाज चलता रहा, परन्तु सफलता नहीं मिली। शरीर धीरे-2 साथ छोड़ने लगा परन्तु वर्मा जी ने परमात्मा का साथ नहीं छोड़ा। वह गायत्री का जाप करते; ओ३म् का ध्यान करते; ईश्वर भक्ति गीत गुनगुनाते; परिवार को आशीर्वाद तथा सभी को प्यार भरी मुस्कान देते हुए 24 अगस्त 2008 को जन्माष्टमी के दिन रविवार सायं 7.40 बजे अन्तिम श्वास द्वारा 'ओ३म्' का उच्चारण करते हुए जीवन रूपी यज्ञ में पूर्णाहूति कर गए।

इस प्रकार वैदिक धर्म में अनन्य आस्था रखने वाली दिव्य आत्मा स्वर्ग सिधार गई। तथा उनका भौतिक शरीर पञ्च तत्व में विलीन हो गया।

आनन्द स्वरूप चावला
मन्त्री, आर्य समाज,
सैक्टर-15, फरीदाबाद

It matters not how long the star shines, what is remembered is the brightness of its light

Sh. Ghansham Lal Verma
20.03.1937 - Forever
A Tribute

To pay a tribute to a man whose selfless love, care & sacrifice makes us what we are for he was responsible for the decades of glorious & meaningful years in our family life. For this great figure in our life that we know as father it becomes our utmost duty to pay our humblest tribute.

This is the story of a man of boundless optimism founded on Faith, a man with a definite purpose motivated by strong family ties. It is a tribute of love from the children to their father and I hope the story that unfolds will be an inspiration, particularly, to the younger members of the family helping them to appreciate their roots and stand up to the challenge of life.

Our father was one of the greatest men we have ever known. He was both loved & feared by many who have known him. That's saying something because it's very hard to be both loved and feared at the same time. During the passage called life our father was a very dedicated worker at all phase of life, whether it was during his service years, then establishing his own business or after wards working for the society or Aryasamaj. He

had boundless energy. He was always contended with what ever God had given to him. He is our hero for the hard work, sacrifices, will power & indomitable strength. We remember him while we were children he had tremendous physical gifts & self confidence. A gift he was blessed with was his nature which was full of childhood joy, enthusiasm & jovial nature. He always used to look for humour & share moments of the joy of life with everyone. He had a magnetism which attracted people towards him & his stand for the truth. We never remember anything that shook his confidence. He was nice to everybody he came across. He always went out of his way to help people out. This made him loved by so many for his kindness and help. He was always there to help us out anytime we needed it. I remember his transition towards God by his inclination to learn Sanskrit so that he may understand the Vedas. He had a golden voice; we can recall him singing songs & Bhajans with full enthusiasm. Our favorite guidance which he gave to everybody & which we have incorporated in our life is to have a practical approach to all problems.

In the end I would say "a life well spent"

With love

Deepak Verma
Tanu Verma
Tarunima
Ridhi

Sandeep Vij
Sangeeta Vij
Mihir

पुण्य-स्मरण

आर्य समाज में रची-बसी पुण्यात्मा की गौरव-पूर्ण यशोगाथा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पुस्तिका-प्रकाशन (भजनावली रूप में) एक सराहनीय प्रयास है। पुस्तक रूप में नित्य उन से साक्षात्कार होता रहेगा; उस पुण्यात्मा के अस्तित्व का नित्य ही बोध होता रहेगा।

श्री घनश्याम लाल वर्मा का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुकूल रहा। सेवा, संयम, सहयोग, स्नेह और जन-हित उनकी जीवन-चर्चा के अभिन्न अंग रहे। इह-लोक और परलोक दोनों के लिए आदर्श जीवन का आचरण करने वाले वर्मा जी परिवार और समाज दोनों के लिए एक उदाहरण बन गए। कठिन परिश्रम, दृढ़ निश्चय, लग्न, साहस, दृढ़ संकल्प और अध्यवसाय से जहाँ उन्होंने पारिवारिक, सामाजिक जीवन के लिए आदर्श प्रस्तुत किए। वहाँ आध्यात्मिक पारलौकिक क्षेत्र में भी उनकी उपलब्धियाँ अविस्मरणीय हैं। प्रवृत्ति और निवृत्ति अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों क्षेत्रों में उनकी पहुँच हमारे लिए अनुकरणीय है। वस्तुतः वर्मा जी धैर्य के धनी थे। जो व्यक्ति विद्यार्थी जीवन में वचन -रेखा खींच कर लक्ष्य सन्धान कर सकता है, वह गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्यों के प्रति कितना सचेत रहा होगा सहज अनुमेय है। वर्मा जी का जीवन इसका प्रमाण है। वह स्वप्न लेना भी जानते थे और स्वपनों को पूरा करना भी। दायित्व-बोध और कर्त्तव्य पालन के प्रति प्रतिबद्धता से उनका

गृहस्थ जीवन आदर्श रूप में बीता।

उनका वानप्रस्थ जीवन भी उतना ही गरिमा-मय रहा। तपोवन में जाना, आश्रम जीवन बिताना, प्रकृति-सानिध्य में आध्यात्मिक आनन्द की खोज, सम्पूर्ण मानव समुदाय के लिए एक सजीव उदाहरण है। संगीत-साधना, प्रकृति-प्रेम, सत्संग-प्रवचन, वैदिक-चर्चा में रूचि उनकी उत्तम अभिरूचियों के प्रतीक हैं। नित्य भजनों का गायन, हवन, सन्ध्या मन्त्रों का उच्चारण, वेद-मन्त्र-पारायण उनकी सात्विक वृत्तियों के परिचायक हैं। इस प्रकार अपनी जीवन-संगिनी के लिए जहाँ उन्होंने अपने अप्रतिम प्रेम की यादें छोड़ीं; सन्तान के उत्तम जीवन-निर्माण के गुरुतर कर्त्तव्यों का निर्वहन किया वहाँ पारिवारिक मर्यादाओं, सामाजिक मूल्यों और मान्यताओं का पालन करके राष्ट्रीय जीवन पर भी अमिट छाप छोड़ी। ऐसी महान् विभूतियाँ समाज का दिशा-निर्देशन करती हैं। इस पुण्यात्मा के प्रति हम श्रद्धा से नत-मस्तक हैं।

जगन्नियन्ता से प्रार्थना है, इस दिव्यात्मा का प्रभु-चरणों में निवास हो। प्रभु परिवार को उनके उच्चादर्शों का अनुसरण करने की शक्ति दे। हम सब भी उस दैवी व्यक्तित्व की विशिष्टताओं का सम्मान करें, अनुसरण करें, अनुकरण करें।

राज करनी अरोड़ा
ए/15-बी, नेहरु ग्राऊण्ड,
न्यू टाउन फरीदाबाद-121001

हृदय के झरोखे से

श्रद्धा व समृद्धि का अनुपम संगम

इस संसार में बहुत ही कम सम्भवतः अंगुलियों पर गिने जाने योग्य लोग ऐसे होते हैं जिन्हें भगवान श्रद्धा और समृद्धि दोनों साथ-साथ देते हैं। अन्यथा श्रद्धा और समृद्धि दोनों के एक साथ दर्शन दुर्लभ होते हैं।

कहते हैं कि सरस्वती (भक्ति व विद्या) तथा लक्ष्मी (धन व समृद्धि) दोनों में कोई मेल नहीं है। यही कारण है कि सरस्वती का उपासक बाहरी तौर पर फटेहाल होता है और लक्ष्मी का उपासक आन्तरिक रूप से फटेहाल होता है।

परन्तु मैंने दानवीर श्री घनश्याम लाल जी वर्मा के रूप में एक ऐसा विलक्षण व्यक्ति देखा जो कि लक्ष्मी तथा सरस्वती दोनों का ही उपासक था। दोनों महादेवियों की महाकृपा से अलंकृत श्री वर्मा जी उद्योग, भक्ति, श्रद्धा और पुरुषार्थ से लबरेज़ होते हुए भी एक सफल धनाढ्य थे। प्रायः धनाढ्यों के हृदय यज्ञ, दया, धर्म, श्रद्धा आदि के प्रति संकुचित देखे जातें हैं। साथ ही भक्तों, यज्ञिकों, दयालुओं, धार्मिकों और श्रद्धालुओं एवं साधु-संतों के हाथ भौतिक धन-दौलत से खाली ही रहते हैं।

श्री वर्मा जी के जीवन में आई श्रद्धा व समृद्धि उन के पूर्वजन्मों के संचित शुभ संस्कारों का ही परिणाम थी। सम्भवतः उनके इन संचित शुभकर्मों व संस्कारों की खेती को बढ़ाने, उसे पुष्पित व पल्लवित करने में उनकी धर्मपरायणा वैज्ञानिक पत्नी श्रीमती शशि वर्मा जी का सक्रिय सहयोग व प्रोत्साहन काफ़ी सहायक सिद्ध हुयी।

जीवन में इसका महत्व नहीं है कि व्यक्ति कितना जिया है बल्कि महत्त्व उसका है कि व्यक्ति कैसे जिया है। यजुर्वेद के शब्दों में :- "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः" अर्थात् इस संसार में मनुष्य को कर्म करते हुए ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए।

श्री वर्मा जी का खड़ताल बजा कर मस्ती व भक्ति में झूमकर भजन गाना, बच्चों को खुश करने हेतु उन्हें टॉफियाँ देना, लोगों के घरों में स्वयं फोन करके शुभ अवसरों पर स्वयं यज्ञ का सामान ले जाकर हवन करना और दक्षिणा व दान में प्राप्त धन को संस्थाओं के कल्याण में लगाना; ये सभी कार्य उनके पिछले और अगले जीवन को कृतार्थ करने हेतु काफ़ी हैं।

किसी ने कहा है - "ज़िन्दगी ज़िन्दादिली का नाम है।
मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं।"

ऐसे स्वनाम धन्य वर्मा श्री घनश्याम लाल जी सदा-सदा ही लोगों के हृदयों में जीवित रहेंगें।

- हरि ओ३म् शास्त्री
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,
सैक्टर-14, फरीदाबाद

घनश्याम की अमृतवर्षा

(रचियता - हरि ओ३म् शास्त्री)
611/15ए, फरीदाबाद

गायत्री के उपासक, दिल से उदार थे तुम।
घनश्याम से बरसते, मौज़े बहार के तुम।।
घनश्याम लाल वर्मा दिल से उदार...

उद्योग में थे चमके, श्रद्धा से दान देते,
भजनों के माध्यम से, यज्ञों को मान देते।
ऋषिवर की आज्ञा का पूरा मुकाम थे तुम।।
घनश्याम से बरसते...

यज्ञादि कर्म करके, भक्ति से दिल को जोड़ा,
पाखण्ड और प्रपंच को, जाकर घरों से तोड़ा।
जीवन सुधारा अपना, भक्ति के मान थे तुम।।
घनश्याम से बरसते...

खड़ताल से तुम्हारी थे, सत्संगी आनन्द पाते,
भक्ति के रंग में रंग कर, निज ईश को रिझाते।
दानी थे तुम इतने कि संस्थाओं के प्राण थे तुम।।
घनश्याम से बरसते...

सत्संगी, उद्योगी, साधु, वैराग्यशील बन कर,
सन्तोष दे दिया था, दानी उदार बन कर।
अपनी हंसी से निर्मल, गंगा की धार थे तुम।।
घनश्याम से बरसते...

स्व० श्री घनश्याम लाल वर्मा जी

(श्रद्धान्जलि)

(रचियता - जगदीश वधवा)

871/14, फ़रीदाबाद

समाज के हीरे थे वर्मा जी, वो एक आदर्श इन्सान थे।
खुशियों से भरते थे झोलियां सब की, ऐसे वो भगवान थे।।

कर्ण से दानी थे वो, श्रेष्ठ यज्ञों के यजमान थे।
कृष्ण जैसे थे कर्मयोगी, इसलिए वो घनश्याम थे।।

उच्च विचारों के स्वामी, महान ज्ञानी थे वो।
पूर्वजों की भाँति कर्त्तव्य के मानी थे वो।।

दीन-दुःखियों के सहारे थे वो, प्रभु को प्यारे हो गये।
जो सदियों तक चमकते रहें, ऐसे सितारे हो गये।।

समझते हैं गया प्राणी, कभी वापस न आयेगा।
वर्मा जी के उपकारों को, ज़माना न भूल पायेगा।।

15 सैक्टर आर्य समाज को, वर्मा परिवार से अनुराग है।
वर्मा जी के हाथों से, सजाया हुआ यह बाग है।।

विनती है वर्मा परिवार से, इस आर्य समाज में आते रहें।
स्वामी दयानन्द के इस बाग की, शोभा सदा बढ़ाते रहें।।

श्रद्धांजलि

वर्ष 1997 में जब आर्य समाज, सैक्टर-15 की यज्ञशाला के विस्तार का निर्माण कार्य प्रारम्भ होने लगा तभी स्व. श्री घनश्याम लाल वर्मा जी से मेरा परिचय समाज में हुआ। श्री वर्मा जी का आर्य समाज के प्रति हृदय इतना विशाल था कि उन्होंने इस समाज की पहले से बनी छोटी यज्ञशाला का विस्तार करने तथा उसे भव्य रूप प्रदान करने हेतु लगभग पूरा व्यय स्वयं किया। उस के उपरान्त जब यज्ञशाला के अन्दर का यज्ञकुण्ड बनाना था तो वर्मा जी तत्कालीन प्रधान स्व० श्री प्यारे लाल नैय्यर, मुझे तथा एक अन्य पदाधिकारी को अपने वाहन में बिठा कर यज्ञकुण्ड दिखाने के लिए दिल्ली की 2-3 आर्यसमाजों तथा गुरुकुल मंझावली में ले कर गये। इन सभी यज्ञकुण्डों को देख कर फिर अपनी आर्य समाज का यज्ञकुण्ड सब से सुन्दर बनवाया। उन के अन्दर समाज के प्रति बड़ी लगन थी। यज्ञशाला का निर्माण पूरा होने पर उद्घाटन भी उन के कर कमलों द्वारा कराया गया।

वर्मा जी इस समाज की कार्यकारिणी के प्रतिष्ठित सदस्य थे। उनकी रूचि धीरे-धीरे ईश्वर भक्ति के भजनों में होने लगी तथा जब भी वह समाज में भजन गाते थे तो श्रोतागण गद्-गद् हो जाते थे। यज्ञ के प्रति वर्मा जी की बड़ी आस्था थी। इच्छुक परिवारों के घरों में जाकर यज्ञ करते तथा साथ में यज्ञकुण्ड सामग्री, समिधा इत्यादि अपनी गाड़ी में रख कर जाते ताकि यज्ञ करवाने वाले यजमान को कोई असुविधा न हो। वर्मा जी को जो भी यज्ञ की दक्षिणा मिलती उसे एक थैली में रख देते तथा जब 8-10 हज़ार रुपये एकत्रित हो जाते तो किसी संस्था को दान दे देते। सब से पहले जब दक्षिणा लगभग दस हज़ार इकट्ठी हुई तब उन्होंने मुझे दस हज़ार रुपये प्रधान के नाते आर्य समाज के लिए दान में दिये। इसी प्रकार विभिन्न संस्थाओं को दान देते रहते थे तथा व्यक्तिगत रूप से भी अपनी आय में से आर्य समाजों को दान देते रहते थे।

उन्होंने तपोवन आश्रम देहरादून के लिये भी एक हज़ार वर्ग गज ज़मीन खरीदी। ततपश्चात् फरीदाबाद से अपनी धर्मपत्नी को साथ ले जाकर वहीं तपोवन में भवन का निर्माण करवाया।

श्री वर्मा जी का व्यक्तित्व बड़ा ही महान् था। वे दानवीर कहलाते थे तथा धर्मिक विचारों से बड़े ओत्-प्रोत् थे। वर्मा जी ने हमारे समाज के सदस्यों के जन्मदिन व वैवाहिक वर्षगाँठ की तिथियों को अंकित करने के लिए एक डायरी बना रखी थी। प्रत्येक सदस्य को फोन पर उन के जन्मदिन तथा वैवाहिक वर्षगाँठ के अवसर पर बधाई देते थे। वह बच्चों को भी बड़ा प्यार करते थे, बच्चे जब भी उन्हें मिलते वह उन्हें टॉफियाँ दिया करते थे।

आर्य समाज सैक्टर-15 की जो तन-मन-धन द्वारा उन्होंने सेवा की है उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनके दिवंगत हो जाने से आर्य जगत् को तथा विशेष रूप से इस समाज को जो अपार क्षति पहुँची है। उस की पूर्ति नहीं की जा सकती।

स्व० श्री वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती शशि वर्मा जी ने जीवन भर उन के हर कार्य में पूरा-पूरा साथ दिया है तथा आज भी वर्मा जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने में अपना पूरा कर्त्तव्य निभा रही है। श्रीमती शशि वर्मा जी ने उन की पुण्य-स्मृति में भजनों की इस पुस्तक को छपवा कर निःशुल्क वितरण करने का सराहनीय कार्य किया है।

स्व० श्री वर्मा जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शशि वर्मा जी ने अपने गृहस्थ जीवन में जो उत्तम संस्कारों का वातावरण तैयार किया था, आज उसी के परिणाम स्वरूप उन्हें अपने पुत्र, पुत्रवधु, पुत्री, दामाद तथा बच्चों के संस्कारवान होने का गौरव प्राप्त है।

परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि समस्त परिवार सदैव श्री वर्मा जी के पद्-चिन्हों पर चलता रहे तथा यश का भागी बने।

शिव कुमार टुटेजा

प्रधान, आर्य समाज, सैक्टर-15, फरीदाबाद

श्रद्धा सुमन

"सौ वर्ष का जीना भी क्या जीना है, दो दिन ही जिया होता, कुछ काम किया होता।"

इस उक्ति को सार्थक करने वाले माननीय भाई श्री घनश्याम लाल वर्मा जी स्वनिर्मित उद्योगपति थे। आर्य समाज सैक्टर-15 के कर्मठ, धर्मनिष्ठ, वरिष्ठ सदस्य थे। तन-मन-धन से पूरा सहयोग समाज को देते रहते थे। यज्ञशाला का विस्तार उनकी दान-शीलता और अथक-परिश्रम का ही प्रतीक है। यज्ञ-प्रेमी इतने कि निजी घर के दैनिक यज्ञ-सन्ध्या--भजन आदि के अतिरिक्त भी दूसरों को प्रेरणा ही नहीं देते थे बल्कि पूरा यज्ञ का सामान घी, समिधा, सामग्री आदि ले जा कर उन के घरों को यज्ञ द्वारा सुगन्धित करते थे। पूरे माला के 108 मनकों का यज्ञ भिन्न-2 परिवारों में बड़ी श्रद्धा-भक्ति से किया-कराया। यह श्रेष्ठ कर्म याज्ञिक के अतिरिक्त, किसी अन्य का नहीं हो सकता। जो राशि दान-दक्षिणा में प्राप्त होती, वह निध्न, निर्बल, दीन-हीनों की आवश्यकतानुसार उन्हें कम्बल, रजाइयाँ, वस्त्र आदि ले कर बाँट देते। समाज की डिस्पेंसरी में भी औषधियों द्वारा सहायता करते।

उन का जीवन परोपकारी था। शिविरों में, गुरुकुलों में, भिन्न-2 संस्थाओं में, दीन-दुःखियों में जा-जा कर जो भी किसी को चाहिए था, उन्हें उपलब्ध करवाते थे। यह उनके स्वभाव में ही था पर दान पात्र-सुपात्र देख कर ही देते थे।

सैक्टर-14 में उनका भव्य-भवन है। उसके सामने पार्क को उन्होंने स्वयं भरपूर परिश्रम द्वारा घास-फूल, पेड़-पौधे लगवा कर सुन्दर सुगन्धित मन-मोहक भ्रमण स्थान बना दिया। आज लोग उनकी कीर्ति गाते नहीं थकते।

उत्सव कोई भी हो, होली, दीवाली, 15 अगस्त, शादी-विवाह - सभी मिल कर उत्साहपूर्वक वहीं मनाते हैं। मध्य में एक फव्वारा भी है। 'ओ३म्' का पवित्र झण्डा भी गढ़ा है जिसके नीचे प्रति दिन बैठ कर सायंकाल को भजन-कीर्तन-सन्ध्या करते थे।

झुग्गी-झोंपड़ी के बच्चों को एकत्रित कर उन्हें 'ओ३म्' की महिमा, गायत्री मन्त्र आदि सिखाते थे; साक्षरता प्रदान करते थे; फिर टॉफी, चॉकलेट, मिठाई बाँटते थे। सभी बच्चे उनसे बहुत घुले-मिले थे। वह मिलनसार प्रकृति के मानव थे। सभी के जन्मदिवस डायरी में नोट कर रखे थे और सभी को समयनुसार शुभकामनाएँ देने जाते, चॉकलेट बाँटते। कहाँ तक उनके गुण गायें और गिनायें। वह एक महान व्यक्तित्व था। उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर उनके दानी परिवार और सुयोग्य धर्मपत्नी श्रीमती शशि जी वर्मा ने उनकी स्मृति को चिर-स्थायी रखने के लिए "भक्ति की लहरें (भजनावली)" नामक पुस्तक छपवाई है। सभी उनके आभारी हैं; वह धन्यवाद के पात्र हैं। प्रभु उन्हें ऐसे सुकृत करने की सुबुद्धि सदा प्रदान करते रहें। संकल्प के धनी, समय की सही उपयोगिता को समझते थे, सच्चे देश व राष्ट्र-भक्त थे। कण-कण में उनकी सुगन्धि फैले, यही प्रार्थना है।

यज्ञाग्नि की भाँति ही वह चमकता-दमकता चेहरा आँखों से ओझल हो गया। प्रतिपल-प्रतिक्षण 'ओ३म्' नाम में लीन रहने वाले अब पंचतत्व में विलीन हो गये। उस परमपिता परमात्मा से यही विनीत प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति-शान्ति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य, सहनशक्ति दें।

श्रद्धा सुमन अर्पित कर्ता का शत-शत नमन।

तारा वैद
प्रधाना - महिला समाज
आर्य समाज, सैक्टर-15, फरीदाबाद

प्राक्कथन

सुधी पाठक वृन्द,

आर्य समाज (सैन्ट्रल) सैक्टर-15 द्वारा प्रकाशित "भक्ति की लहरें" (भजन माला - तृतीय पुष्प) आप की सेवा में प्रस्तुत है। वस्तुतः यह विशेषांक पुष्प है जिसे इस समाज के प्रतिष्ठित सदस्य स्व० श्री घनश्याम लाल वर्मा जी की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर उनकी पावन स्मृति में वर्मा परिवार के सौजन्य द्वारा प्रकाशित किया गया है। मैं इसे उनके चिर-स्थायी यश रूपी शरीर का प्रतीक मानता हूँ।

तपोनिष्ठ, कर्मवीर, दानवीर एवं श्रद्धालु याजक श्री घनश्याम लाल वर्मा जी आर्य समाज, सैक्टर-15 की कार्यकारिणी के प्रतिष्ठित सदस्य थे। दृढ़ संकल्प के धनी, मधुर भाषी, जीवन की हर परिस्थिति में सुमन जैसा मुस्कराता चेहरा जैसे अनेक सद्गुणों का समावेश आप के व्यक्तित्व में झलकता था। किसी ने बहुत सुन्दर कहा है - "काँटों में भी खिला रहता है फूल क्या खुश मिज़ाज है" आप की संकल्प शक्ति का अनुमान इस छोटी से घटना से लगाया जा सकता है कि आपने इंजीनियरिंग की पढ़ाई करते समय संकल्प किया 'मुझे अपने पुरुषार्थ द्वारा प्रतिवर्ष वज़ीफा प्राप्त करना है' इसका इज़हार दीवार पर एक रेखा खींच कर कर दिया तथा रेखा का नाम 'वचन-रेखा' रख दिया। इस वचन को पूरा कर दिखाया तथा प्रतिवर्ष वज़ीफा प्राप्त किया। दूसरी घटना एस्कॉर्टस् में नौकरी करते हुए निजी फैक्ट्री लगाने का विचार किया तो वर्ष 1983 में नौकरी छोड़ दी और अपने विचार को क्रियान्वित कर दिखाया। धीरे-धीरे आर्य समाज में लग्न लग गई तो पक्के आर्य समाजी बन गये। सन्ध्या, हवन तथा गायत्री के उपासक बन गये। यज्ञ के प्रति अगाध श्रद्धा प्रस्फुटित हुई।

आर्य समाज सैक्टर-15 में यज्ञशाला का विस्तार करा दिया। स्वयं दैनिक यज्ञ करते तथा दूसरों के घर जा कर निःशुल्क यज्ञ कराते। घी-सामग्री-समिधा भी अपनी ले कर जाते। यदि कोई दानी महानुभाव दान देता तो वह एकत्रित करते रहे। एक ही वर्ष में 108 यज्ञ दूसरों के घरों में किया तथा लगभग 72000/- रुपये दान प्राप्त किया। इस राशि को अनेक परोपकारी संस्थाओं को दान कर दिया। ऐसे थे वह कर्मवीर तथा दानवीर।

श्री वर्मा जी अपने यज्ञमय जीवन में श्रद्धापूर्वक याज्ञिक कार्यों में संल्गन थे। आर्य समाज में बड़े उत्साहपूर्वक अपने कर कमलों द्वारा खड़ताल बजा कर बड़ी मस्ती में ईश्वर भक्ति के गीत गा कर आनन्द मग्न हो जाया करते थे तथा श्रोताओं को भी मन्त्र-मुग्ध कर देते थे। इस प्रकार पूरा वातावरण भक्तिमय बन जाया करता था। यहाँ पर यदि मैं यह कह दूँ कि श्री वर्मा जी के परोपकारी जीवन की सफलता का रहस्य उनकी सुयोग्य, सुहृदय, सुकृत धर्म पत्नी के महत्वपूर्ण योगदान में छिपा है तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

उनकी जीवन संगिनी श्रीमती शशि वर्मा जी ने उन सभी भजनों को जो श्री वर्मा जी गाया करते थे तथा जो उनके पास लिखित रूप में उपलब्ध थे, एकत्रित किये। श्रीमती शशि वर्मा जी ने इस भजन संग्रह को पुस्तक के रूप में छपवाकर निःशुल्क वितरण करने का प्रस्ताव रखा। आर्य समाज के प्रधान श्री शिव कुमार टुटेजा जी ने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया तथा मैंने भी उन्हें पुस्तक के संयोजन एवं सम्पादन कार्य में पूरा सहयोग करने हेतु आश्वस्त किया।

प्रस्तुत भजनमाला पुष्प में ओंकार स्तोत्र के अतिरिक्त आर्य समाज के उच्च कोटि के वैदिक विद्वानों द्वारा लिखित लगभग 150 भजनों का समावेश है। सभी भजनों को उनके विषयनुसार जैसे - 'ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना, चेतावनी, वैराग्य, सत्संग महिमा, बधाई गीत, महर्षि महिमा गुणगान आदि गीतों के आधार पर उनका वर्गीकरण करके अनुक्रमणिका में दर्शाया गया है। आशा है भक्तिमय गीतों का यह अनुपम संग्रह पढ़ कर तथा गा कर आप के आध्यात्मिक चिन्तन में नयी ऊर्जा का संचार करेगा। हृदय में भक्ति की लहरों का सपन्दन पैदा कर आत्मा को आनन्दमय कोष के प्रवेश द्वार तक ले जाने में सहायक सिद्ध होगा। समस्त वर्मा परिवार तथा विशेष रूप से श्रीमती शशि वर्मा जी साधुवाद के पात्र हैं जो श्री वर्मा जी के जीवन से प्रेरणा ले कर उनके पद-चिन्हों पर चलने में अग्रसर हैं।

आर्य समाज सैक्टर-15 वर्मा परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ तथा दिवंगत पुण्य आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

भवदीय

आनन्द स्वरूप चावला

मन्त्री, आर्य समाज, सैक्टर-15, फरीदाबाद

भजन

(स्व. श्री वर्मा जी की माता श्री का प्रिय भजन)

तेरे दर ते आ गई आं, पिच्छे हटया नहीं जाँदा।
लड़ फड़ के तेरा दाता, हुन छड्या नहीं जाँदा।।

बिगड़ी तकदीराँ नूँ, तुसी आप संवारदे हो,
हथ दे के किश्ती नूँ, तुसी पार उतारदे हो।
होंदा जीवन खुशियाँ विच, जेड़ा चरणा ते आ जाँदा।। तेरे दर.......

जाम मुहब्बत दा जेड़ा, इक वारी पी लैंदा,
मिट जाँदें ने गम सारे, तेरी रज़ा विच जी लैंदा।
ऐ मस्ती उतरदी नहीं, नशा पी के उतर जाँदां।।

कोई मन्ने न मन्ने, मेरा सतगुरु राज़ी है,
तस्वीर तेरी दाता, मेरे मन विच वस गई है।
हुन कड्डी नहीं जाँदीं, मेरे रोम-रोम विच वस गई है।।

तुसी दिल विच वसदे हो, हुन कड्या नहीं जाँदा,
जदों ताराँ खनकदियाँ, फिर रुकया नहीं जाँदा। तेरे दर.......

कर दो मेरी मैं नू दूर, मैं विच बहुत जुदाई है।
विचों मैंनू कड्ड दयो बाहर, अन्दर दी करो सफ़ाई है।।
इस मैं मेरी नू की कहना, इस मैं विच सुख नहीं रहना,
ज़रा खोल के देख लओ नैना, गुरुआँ ने सच बताई है।
कर दो मेरी मैं नू दूर, अन्दर दी करो सफ़ाई है।।
जदों नैन खोल के देखे, भुल गये जगत् दे लेखे,
मेरी लब गई वजत भलेखे, गुरुआँ ने आप बताई है।
कर दो मेरी मैं नू दूर, अन्दर दी करो सफ़ाई है।।

आर्य समाज (सैन्ट्रल) सैक्टर-15
फरीदाबाद की कार्यकारिणी

पदनाम	नाम	पता	दूरभाष
संरक्षक	श्री धर्म बीर भाटिया	1541/16	2297376
संरक्षक	श्रीमती वेद गुलाटी	65/14	2282922
प्रधान	श्री शिव कुमार टुटेजा	5ई/9 बी.पी.	9811254275
उप-प्रधान	श्री जवाहर लाल आहूजा	754/15	9818530754
उप-प्रधान	श्री ओम प्रकाश वर्मा	471/17	4071471
मंत्री	श्री आनन्द स्वरूप चावला	292/121ए	9811255977
उपमंत्री	श्रीमती आदर्श चोपड़ा	625/15	2285384
कोषाध्यक्ष	श्री जवाहर लाल आहूजा	1588/16	2296367
उप कोषाध्यक्ष	श्री धर्म चन्द अरोड़ा	2304/16	4041986
प्रचार मंत्री	श्री सत्य भूषण आर्य	2074/16	9818897097
लेखा निरीक्षक	श्री लक्ष्मण दास आर्य	929/17	4074883
संपदाधिकारी	श्री सत्यपाल आर्य	1150/17	9911126275
	महिला समाज		
प्रधान	श्रीमती तारा वैद	1466/14	2283578
मंत्री	श्रीमती सुषमा वधवा	871/14	4087407
कोषाध्यक्ष	श्रीमती नीलम गिरधर	975/17	4072975
अन्तरंग सदस्य	पं० हरिओ३म् शास्त्री	611/15ए	9899291387
अन्तरंग सदस्य	श्री जगदीश वधवा	871/14	9810371332
अन्तरंग सदस्य	श्री रविन्द्र गुप्ता	364/11डी	9818690364
अन्तरंग सदस्य	श्री भारत भूषण पाहूजा	318/14	2283430
अन्तरंग सदस्य	श्री भीम सेन श्रीधर	713/17	9810621951
अन्तरंग सदस्य	डॉ. शान्ता मल्होत्रा	455/14	4007450
अन्तरंग सदस्य	श्रीमती प्रेम खट्टर	627/16	4074262
अन्तरंग सदस्य	श्रीमती प्रेम लता गुप्ता	1091/15	9811664978
अन्तरंग सदस्य	श्रीमती पुष्प लता नांगिया	103/15	4002190
अन्तरंग सदस्य	श्रीमती अमृत मोंगिया	686/16	2285323
अन्तरंग सदस्य	श्रीमती रुक्मणी टुटेजा	5ई/9 बी.पी.	2412606
अन्तरंग सदस्य	श्रीमती शशि वर्मा	1455/14	4001455
अन्तरंग सदस्य	श्रीमती पुष्पा आहूजा	754/15	4009078
अन्तरंग सदस्य	श्रीमती संतोष ज़सूजा	71/15	2284273
अन्तरंग सदस्य	श्रीमती सावित्री देवी चावला	292/21 ए	9811423689

सरस्वती वन्दना

(तर्ज - हे दयामय हम सभी को...)

सरस्वती माँ विद्या की देवी, सदा हमारा उद्धार करना।
हम तेरे बालक सदा प्रबल हों, ये मेधा बुद्धि प्रदान करना।।

सुवर्चभावों से ज्योति तेरी, समस्त जग में समा रही है।
हम होवें तेरे सदा पुजारी, ये मेधा बुद्धि प्रदान करना।।

लें वेद आश्रय उपासना से, तपें जगत् में तेरी कृपा से।
ले तेज रवि का सदा किरण से, ये मेधा बुद्धि प्रदान करना।।

प्राची दिशा से उषा की लाली है, लोक भरती सभी में वाणी।
मधु सी रसना को पा सकें हम, ये मेधा बुद्धि प्रदान करना।।

भक्तिमयी संस्कृतगीतिका

हे विभो आनन्द-सिन्धो! मे च मेधा दीयताम्।
यच्च दुरितं दीनबन्धो! तच्च दूरं नीयताम्।।
चञ्चलानि चेन्द्रियाणि मानसं मे पूयताम्।
शरणं याचे तावकीनं सेवकम् अनुगृह्यताम्।।
त्वयि च वीर्यं विद्यते यत् तच्चमयि निधीयताम्।
या च दुर्गुणदीनता मयि सा तु शीघ्रं क्षीयताम्।।
शौर्य-धैर्य तैजसं च भारते चेक्रीयताम्।
हे दयामय! अयि अनादे! प्रार्थना मम श्रूयताम्।।

ओंकार स्तोत्र

ओ३म् नाम भगवान का, सर्वानन्द निधान।
सब नामों में श्रेष्ठ है, करते वेद बखान।।१।।

ओ३म् नाम की आज मैं, महिमा मंगल मूल।
बहु विधि से वर्णन करूँ, वेदों के अनुकूल।।२।।

ओ३म् नाम जो ब्रह्म है, वह है केवल एक।
वेद विमुख अल्पज्ञ जन, पूजें ब्रह्म अनेक।।३।।

ओ३म् ब्रह्म, विष्णु वही, वही रुद्र शुभ काम।
इन्द्र, अग्नि, वसु, वरुण, अज, उसी ब्रह्म के नाम।।४।।

ओ३म् वायु, अप, अर्यमा, गणपति, शेष, कुबेर।
शिव, शंकर जो नित सुने, दीन दुःखी की टेर।।५।।

ओ३म् विश्व, मनु, कवि, सभी हैं उसके नाम।
जिनके सुमिरन मात्रा से, मिलते सब सुख धाम।।६।।

ओ३म् सूर्य है, चन्द्र है, ओ३म् भूमि, आकाश।
बुध, शुक्र, मंगल वही, जो तम का करे विनाश।।७।।

ओ३म् राहु, गुरु भी वही, वही शनैश्चर केतु।
ये सब उसके रूप हैं; जग रक्षा के हेतु।।८।।

ओ३म् प्राण, अमृत, पुरुष, दिव्य उरुक्रम अन्न।
नारायण, नरदेव हैं, परम शक्ति सम्पन्न।।९।।

ओ३म् प्राज्ञ, सविता सबल, तैजस, सोम, विराट्।
परमेश्वर, अक्षर वही, जिसका अद्भुत ठाठ।।१०।।

ओ३म् विधाता जगत् का, ओ३म् विश्व का काल।
यज्ञ वही, होता वही, वही सुरेश विशाल।।११।।

ओ३म् प्रेम का पुञ्ज है, प्रियतम का शुभ नाम।
जो भक्तों के हृदय में, करता है विश्राम।।१२।।

ओ३म् पिता, माता, सखा, बन्धु, स्नेह का स्रोत।
ओ३म् ज्ञान भण्डार है, सदा जागती जोत।।१३।।

ओ३म् आदि आचार्य है, जिस ने वैदिक ज्ञान।
आदि सृष्टि में जगत् को, विधिवत् किया प्रदान।।१४।।

ओ३म् ब्रह्म का पर, अपर, निर्गुण, सगुण स्वरूप।
आप बताया ब्रह्म ने, अपना रूप अनूप।।१५।।

ओ३म् सच्चिदानन्द है, नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्त।
अविनाशी अखिलेश है, न्याय दया से युक्त।।१६।।

ओ३म् अजर है, अमर है, उस का आदि न अन्त।
निराकार निर्लेप है, सर्वेश्वर भगवन्त।।१७।।

ओ३म् जन्म लेता नहीं, अहो आर्य मतिधीर।
वह व्यापक है विश्व में, उस का विश्व शरीर।।१८।।

ओ३म् सर्व-आधार है, सर्व-शक्ति भण्डार।
वह पवित्र निर्दोष है, उस में नहीं विकार।।१९।।

ओ३म् सर्व-सुख मूल है, नेता ज्ञान स्वरूप।
अन्तर्यामी तेजमय, अद्भुत अभय अनूप।।२०।।

ओ३म् जगत् का रचयिता, सब का पालनहार।
उस की महिमा अकथ है, उस की शक्ति अपार।।२१।।

ओ३म् आँख की आँख है, ओ३म् कान का कान।
ओ३म् जीव का जीव है, ओ३म् प्राण का प्राण।।२२।।

ओ३म् आप तो एक है, उस के नाम अनेक।
यह रहस्य जाने वही, जिस का विमल विवेक।।२३।।

ओ३म् सूर्य का तेज है, ओ३म् अग्नि का ताप।
वह सब का अनुरूप है, पर अनूप है आप।।२४।।

ओ३म् ब्रह्म के तेज का, दीखे ओर न छोर।
तारामण्डल इसी सें, जगमगाय चहुँ ओर।।२५।।

ओ३म् वेद का विषय है, गीता का शुभ ज्ञान।
उपनिषदों में इसी की, महिमा हुई बखान।।२६।।

ओ३म् अमल है विमल है, निर्मल और अमूल।
ओ३म् रूप रस गन्ध है, उसकी माया फूल।।२७।।

ओ३म् फूल की महक है, फल की मघुर मिठास।
प्रियता का आनन्द है, नित प्रेमी के पास।।२८।।

ओ३म् कर्म बिन कर करे, बिना पाँव गतिवान।
सब को देखे चक्षु बिन, सुने सदा बिन कान।।२९।।

ओ३म् व्याप्त है विश्व में, रमा हुआ अभिराम।
इसीलिए साधन बिना, करता है सब काम।।३०।।

ओ३म् सत्य संकल्प है, भुवनों का करतार।
उस की इच्छा मात्रा से, प्रकट हुआ संसार।।३१।।

ओ३म् शक्ति की शक्ति है, सर्व शक्ति सर्वेश।
कर्म कोई होता नहीं, बिन उस के आदेश।।३२।।

ओ३म् बिना होता नहीं, योग ब्रह्म के साथ।
ऋद्धि-सिद्धि नव निधि हैं, सभी ओ३म् के साथ।।३३।।

ओ३म् विश्व का विश्व है, ओ३म् श्वास का श्वास।
प्रकटित है चारों तरफ, उस का विमल विकास।।३४।।

ओ३म् इधर भी, उधर भी, अति समीप, अतिदूर।
सब उस से भरपूर है, वह सब से भरपूर।।३५।।

ओ३म् ब्रह्म व्यापकता, किस विध करूँ अलाप।
जैसे मक्खन दूध में, त्यों जग में प्रभु आप।।३६।।

ओ३म् स्वयम्भु आप हैं, सर्व धनों का कोष।
जो उस से वञ्चित रहे, उसको कब सन्तोष।।३७।।

ओ३म् महत् से महत् है, उस से कौन महान्।
बलशाली बस एक है, और नहीं बलवान।।३८।।

ओ३म् देश की जान है, ओ३म् राष्ट्र का प्राण।
सुख की मूल स्वतन्त्रता, देते हैं भगवान।।३६।।

ओ३म् घड़ी में कर सके, राजाओं को रंक।
कौन भूप जिस पर नहीं, है उस का आतंक।।४०।।

ओ३म् विराजे एक सा, जड़ चेतन के बींच।
उस के हित कोई नहीं, यहाँ ऊँच या नीच।।४१।।

ओ३म् पतित पावन उसे, कैसा छूत-अछूत।
उसे कभी आती नहीं, यह दूषित करतूत।।४२।।

ओ३म् कभी मिलता नहीं, देवालय के पास।
उस का रहता है सदा, दुःखियों के घर वास।।४३।।

ओ३म् निरन्तर रहेगा, दीन दुःखी का मीत।
उस को रहती है सदा, पीड़ित जन से प्रीत।।४४।।

ओ३म् अलग पाखण्ड से, रहे दम्भ से दूर।
सरल हृदय को वह सदा, करता है भरपूर।।४५।।

ओ३म् प्रेम का भक्त है, प्रेमी पर अनुरक्त।
उसके दर्शन प्रेम से, पा लेते हैं भक्त।।४६।।

ओ३म् उपासक थे सभी, भारत के नर-नार।
राम और घनश्याम-से, जग के तारनहार।।४७।।

ओ३म् उपासक थे सभी, ऋषि मुनि और सन्त।
ओ३म् पैगम्बर औलिया, ज्ञानी विद्यावन्त।।४८।।

ओ३म् उपासक थे सभी, भूमिपाल मतिधीर।
ओ३म् उपासक थे सभी, योद्धा रण के वीर।।४६।।

ओ३म् उपासक हैं सभी, जिन का उज्जवल ज्ञान।
ओ३म् उपासक हैं सभी, बुद्धिशील मतिमान्।।५०।।

ओ३म् कुसुम की पहन के, शुद्ध सुशोभित माल।
आर्यवीर प्रचरित करें, वैदिक धर्म विशाल।।५१।।

ओ३म्-ओ३म् जपते रहें, तन-मन की सुधि खोय।
प्रेम करे जो ओ३म् से, ओ३म् उसी का होय।।५२।।

ओ३म् दया के सिन्धु हैं, कर देंगे उद्धार।
आप अमर हो जायेंगे, वेदों के अनुसार।।५३।।

ओ३म् रूप पुष्पावली, है जिसका उपहार।
उस कवि का भी करें, प्रियतम बेड़ा पार।।५४।।

ओ३म् नाम (पचपन) सुमन, सुखद सुहावन फूल।
मैंने अर्पित कर दिए, जग हित मंगल मूल।।५५।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

भजन - 1

(तर्ज : परदेसी जाना नहीं)

ओ३म् नाम मधुर नाम गाये जा रे, प्राणी बोल के रस घोल के।
अपना बना ले दिल में बसा ले, अनमोल जीवन सफल बना ले।।

जिस के जप से बुद्धि विमल हो जाती है,
शंकायें निर्मूल सकल हो जाती हैं।
प्रति पल-पल आनन्द आंतरिक होता है,
जिस के जप से मन अति हर्षित होता है।
उस को ही गा ले, दिल में बसा ले, जीवन अपना सफल बना ले।।

जो अनुपम ब्रह्माण्ड की रचना करता है,
जो प्रीतम प्राणेश सफल दुःख हरता है।
देशभक्त प्रभुभक्त ही जिस को प्यारा है,
निर्बल दुःखिया दीन का एक सहारा है।
उस को ही ध्या ले, प्रीत लगा ले, अनमोल जीवन सफल बना ले।।

जिस से जगमग ज्योतिमान नभ-मण्डल है,
जो अनुपम आनन्द निष्कपट निश्छल है।
यथायोग्य कर्मों का जो देता फल है,
निराकार निर्लिप्त निरंजन निर्मल है।
उस को मना ले, अपना बना ले, जीवन अपना सफल बना ले।।

इधर-उधर, दर-बदर भटकता क्यों नर है,
अणु-अणु में, कण-कण में व्यापक ईश्वर है।
'बेगराज' हर इक दिल में प्रभु का घर है,
फिर किस का डर जग रक्षक जगदीश्वर है।
उस को ही गा ले, ध्यान लगा ले, अनमोल जीवन सफल बना ले।।

भजन - 2

ओ३म् कवच बन जाए, मेरा ओ३म् कवच बन जाए।

असुर कभी न घुसने पायें, भ्रम और भय मिट जायें।।
ओ३म् कवच.........................

मन में शान्ति का शासन हो, ब्रह्मानन्द समाये।।
ओ३म् कवच.........................

रोम-रोम में रम जाये ऐसा, रग-रग में रंग लाये।।
ओ३म् कवच.........................

सब में उस का रूप निहारूँ, ज्ञान नयन खुल जाये।।
ओ३म् कवच.........................

यम-नियमों का नित पालन हो, अचलासन लग जाये।।
ओ३म् कवच.........................

प्राणों पर पूरा संयम हो, हृदय कमल खिल जाये।।
ओ३म् कवच.........................

जागृत में भी लगे समाधि, साधना ऐसी बन जाये।।
ओ३म् कवच.........................

तू सर्वेश, सकल सुख दाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते जो तेरे ढिंग आता है।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से हम को नाथ बचा लीजे।
मंगलमय गुण कर्म पदारथ प्रेम-सिन्धु हम को दीजे।।

भजन - 3

ओ३म् बोलो ओ३म्, ओ३म् बोलो ओ३म्,
ओ३म् मधु रस प्याला मुझ में भर जाए।
धुल जाए मन काला नैया तर जाए।।

जन्म मरण का ओ३म् ही साथी,
बन जाऊँ मैं दृढ़ विश्वासी।
चढ़ जाए मोहे रंग निराला, नैया तर जाए,
ओ३म् मधु रस प्याला मुझ में भर जाए।।
ओ३म् बोलो ओ३म्...............

रोम-रोम में ओ३म् निहारूँ,
तन मन की सुध-बुध विसारूँ।
अंग-अंग में हो उजियारा नैया तर जाए,
ओ३म् मधु रस प्याला मुझ में भर जाए।।
ओ३म् बोलो ओ३म्...............

जीवन दाता ओ३म् है मेरा,
मैं मेरी न रहे अन्धेरा।
दिव्य चिन्तन हो ओ३म् नाम दईया तर जाए
ओ३म् मधु रस प्याला मुझ में भर जाए।।
ओ३म् बोलो ओ३म्...............

भर-भर सोम प्याला पीऊँ,
ओ३म् नाम गा-गा कर जीऊँ।
मन हो जाए मतवाला-नैया तर जाए,
ओ३म् मधु रस प्याला मुझ में भर जाए।।
ओ३म् बोलो ओ३म्...............

भजन - 4

(तर्ज : ज़रा सुन हसीना ए)

ज़रा आ शरण में तू ओम् की, यह ओम् करुणानिधान है।
कण–कण में है वो रमा हुआ, पत्ते-पत्ते में विद्यमान है।।

ऋषि–मुनि पा इस को तर गये, योगी भी झोलियाँ भर गये।
अन्त नेति–नेति हैं कह गये, यह नाम इतना महान् है।।

ले ले आसरा इस नाम का, बन जा भक्त भगवान का।
तेरे प्राण मुक्त हो जाएंगे, यह नाम मुक्ति का धाम है।।

ये नाम इतना महान् है, इस में भरा विज्ञान है।
प्रभु जनों को इसकी पहचान है, ब्रह्म मुहूर्त करते ध्यान हैं।।

इस नाम से तू लगा लगन, दिन–रात इस में हो मगन।
तुझे शक्ति इक मिल जायेगी, ये नाम मुक्ति का धाम है।।

यह अजर–अमर अपार है, सत् चित् आनन्द भण्डार है।
सूरज उस की ज्योति से जल रहा, सारी सृष्टि में उसका विधान है।।

इस नाम में इतना असर, दुःख दर्द का रहता न डर।
इच्छा पूर्ण हो तेरी प्रभु, मेरे देवता का प्रमाण है।।

तू ही स्वयंप्रकाश, सुचेतन, सुख स्वरूप शुभ त्राता है।
सूर्य–चन्द्र लोकादिक को तू रचता और टिकाता है।।
पहिले था अब भी तू ही है घट–घट में व्यापक स्वामी।
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझ को पावें हम अन्तर्यामी।।

भजन - 5

ओ३म् नाम जप किया करो, दुःख न किसी को दिया करो।
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।

वेदशास्त्र ने गाया ओ३म्, ऋषियों ने अपनाया ओ३म्।
श्री राम, कृष्ण जप कर गये इस का, यही नाम जप लिया करो।।

दुःख आवे तो मत घबराना, सुख में उस को भूल न जाना।
ज्ञान गंगा में नहाया करो, निर्मल तन मन किया करो।।

धन और माल के भरे खज़ाने, सारे यहीं धरे रह जाने,
कोई किसी के साथ न जावे, गया वक्त फिर हाथ न आवे।
काम धर्म के किया करो, कुछ हाथों से भी दिया करो।।

उस दाता से सब कुछ पावे, फिर भी उसके गुण नही गावे।
श्रद्धा से सुमरो हरदम, धन्यवाद उसी का किया करो।।

भजन - 6

प्रभु सिमरन क्यों छोड़ दिया?

क्रोध न छोड़ा, कपट न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया?
झूठे जग में दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड़ दिया?
कौड़ी को तो खूब सम्भाला, लाल रतन धन छोड़ दिया?
जिस सुमिरन ते अति सुख पावे, सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया?
खालस तुहि भगवान मिलेंगे, तन धन जब सब छोड़ दिया?

भजन - 7

ओ३म् अजन्मा, अकाय, ईश्वर, नमस्ते पहुँचे उसे हमारा।
जो सच्चिदानन्द स्वरूप सविता, उपास्य केवल वही हमारा।।

वो भूर्भुवः स्वः, विभु विधाता, अजर अमर नित्य मुक्ति दाता।
पिता तथा बंधु, मित्र, भ्राता, नमस्ते पहुँचे उसे हमारा।।

न अन्त जिस का मिला कभी है, समाया जिस में जगत् सभी है।
वो ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी है, नमस्ते पहुँचे उसे हमारा।।

हिरण्यगर्भा है नाम जिस का, है ओ३म् आनन्द धाम जिस का,
ऋषि, मुनि, संत जिस को ध्यावें, लगा समाधि जिसे वे पावें।
है जिस का गुणगान वेद गावें, नमस्ते पहुँचे उसे हमारा।।

जो सर्वप्रेरक है देव भर्ता, अखिल विश्व का वो एक कर्ता।
वो 'पाल' पालक कर्ता–धर्ता, नमस्ते पहुँचे उसे हमारा।।

तू ही आत्मज्ञान बल दाता, सुयश विज्ञ जन गाते हैं।
तेरी चरण–शरण में आ कर भवसागर तर जाते हैं।।
तुझ को ही जपना जीवन है, मरण तुझे विसराने में।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तुझ से लगन लगाने में।।

तूने अपनी अनुपम माया से, जग में ज्योति जगाई है।
मनुज और पशुओं को रच कर निज महिमा प्रगटाई है।।
अपने हृदय–सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं।
भक्ति भाव की भेंटें ले कर तव चरणों में आते हैं।।

भजन - 8

विश्वपति जगदीश तू, तेरा ही ओ३म् नाम है।
मस्तक झुका कर प्रेम से, ईश्वर तुझे प्रणाम है।।

आता नहीं नज़र मगर, कण-कण में तू समा रहा।
जग में जहाँ पे तू नहीं, ऐसा न कोई धाम है।।

वायु नियम से चल रहा, सूरज नियम से ढल रहा।
शाम के बाद है सुबह, सुबह के बाद शाम है।।

ऋतुएँ बदल कर आ रहीं, नदियाँ सिन्धु में जा रही।
झुकता है सिर यह देख कर, तेरा जो इन्तज़ाम है।।

होता है न्याय सर्वदा, प्रभु जी तेरे दरबार में।
चलती नहीं सिफारिशें, चढ़ता न कोई दाम है।।

जग को रचाने वाला तू, दुःखड़े मिटाने वाला तू।
बिगड़ी बनाने वाला तू, यह ही तो तेरा काम है।।

सृष्टि बना के पालना, दाता है तेरे हाथ में।
करना प्रलय भी अन्त में, तेरा ही नाथ काम है।।

जितने पदार्थ हैं 'पथिक', जग में सभी के वास्ते।
मिलता है वेदों में लिखा, भगवान तेरा पैगाम है।।

तारे, रवि चन्द्रादिक रचकर निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख लखाया है।।
तू ही विश्व विधाता, पोषक, तेरा ही हम ध्यान करें।
शुद्ध भाव से भगवन्! तेरे भजनामृत का पान करें।।

भजन - 9

नमस्कार भगवान तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।

तुम कण-कण में बसे हुए हो, तुझ में जगत् समाया है,
तिनका हो चाहे पर्वत हो, सभी तुम्हारी माया है।
तुम दुनिया में हर प्राणी के जीवन का आधार हो।।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी..................

सब के सच्चे पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं जगत् की माता हो,
भाई बन्धु सखा सहायक रक्षक पोषक दाता हो।
चींटी से लेकर हाथी तक सब के सिरजनहार हो।।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी..................

ऋषि-मुनी योगी जन सारे, तुझ से ही वर पाते हैं,
क्या राजा क्या रंक तुम्हारे, दर पे शीश झुकाते हैं।
परमदयालु परमकृपालु, करुणा के भण्डार हो।।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी..................

तूफ़ानों से घिरे 'पथिक' प्रभु तुम ही एक सहारा हो,
डगमग-डगमग नैया डोले तुम ही नाथ किनारा हो।
तुम खेवट हो इस नैया के और तुम ही पतवार हो।।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी..................

तुझ से भिन्न न कोई जग में, सब में तू ही समाया है।
जड़ चेतन जग तेरी रचना, तुझ में आश्रय पाया है।।
हे सर्वोपरि विभो ! विश्व का, तूने साज सजाया है।
हेतु रहित अनुराग दीजिये यही भक्त को भाया है।।

भजन - 10

तुम मेरे जीवन के रक्षक, और प्राणाधार हो।
एक तुम संकट हरण हो, आनन्द के भण्डार हो।।

तुम ही प्रेरणा स्रोत हो और तुम ही वरने योग्य हो।
तुम ही हो जग के रचियता और ज्ञान की पतवार हो।।

तुम मेरे जीवन के धन हो और प्राणाधार हो।
एक तुम दाता दयालु, सब के पालनहार हो।।

दिव्य ज्योति से तेरी, मेरे जीवन में प्रकाश हो।
दिव्य शक्ति से तेरी, मेरे जीवन में संचार हो।।

बुद्धि दो भगवन् हमें, हम सदा सुमार्ग पर चलें।
आप से न हों विमुख, बस तुम ही करुणाधार हो।।

जागते सोते कभी भी, मैं तुम्हें भूलूँ नहीं।
बैठते-उठते कभी भी, मैं तुम्हें भूलूँ नहीं।।

ओ३म् बन मुझ में रमो, ओ३म् बन मुझ में बसो।
बसते रहो, बस तुम ही इक करतार हो।।

तू ही गुरु, प्रजेश भी तू, पाप-पुण्य फल दाता है।
तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझ से ही सब नाता है।।
भक्तों को इस भव-बन्धन से, तू ही मुक्त कराता है।
तू है अज, अद्वैत, महाप्रभु सर्वकाल का ज्ञाता है।।

भजन - 11

मानव तू अगर चाहे, दुनिया को झुका देना।
बस ईश्वर के दर पर, सर अपना झुका देना।।

राज़ी हो प्रभु जिस में, वह काम सही होगा,
भगवान जो चाहे गा, दुनिया में वही होगा।
उसे अपना बना कर के, उलझन को मिटा देना।।

रक्षक है अनाथों का, दुनिया का सहारा है,
भव पार किया उस ने, जिस ने भी पुकारा है।
उसे अपना बना कर के, उलझन को मिटा देना।।

धरती और सागर के, रत्नों को जो पाना है,
आकाश में उड़ना हो, या पाताल में जाना हो।
डोरी परमेश्वर को, पहले पकड़ा देना।।

चाहेंगी सदा तुझ को, खुशियाँ और आशाएँ,
चूमेंगी चरण तेरे, सब ओर सफलताएँ।
जीवन को 'पथिक' उस की राहों पे लगा देना।।

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभु, सब का सिरजनहार तू ही।
रसना निशि-दिन रटे तुम्हीं को, मन में बसना सदा तू ही।।
अघ-अनर्थ से हमें बचाते, रहना हरदम दयानिधान।
अपने भक्त जनों को भगवन्, दीजे यही विशद वरदान।।

भजन - 12

(तर्ज : इस रेशमी पाजेब की झंकार के सदके)

जिस आदमी का सर झुके भगवान के आगे।
सारी दुनिया झुकती है उस इन्सान के आगे।।

खुले आकाश में उड़तीं पतगें साथ में डोरी,
मगर क्या डर उसे जिस की प्रभु के हाथ में डोरी।
ताकत फीकी पड़ती है, उस बलवान के आगे।।
जिस आदमी का सर........................

बड़े से भी बड़ा संकट उसे फिसला नहीं सकता,
मुसीबत के दिनों में वह कभी घबरा नहीं सकता।
उसको ठहरा पाओगे हर तूफ़ान के आगे।।
जिस आदमी का सर........................

बसे वह देवता बन कर ज़माने के ख़यालों में,
उसी के नाम का चर्चा अन्धेरों में उजालों में।
सूरज भी क्या चमकेगा, उसकी शान की आगे।।
जिस आदमी का- सर........................

वह सारे इम्तिहानों में हमेशा पास होता है,
'पथिक' जीवन की राहों में कभी न उदास होता है।
मन्ज़िल खुद आ जाती है उस मेहमान के आगे।।
जिस आदमी का सर........................

दर्द दूसरों का बाँटे इंसान वही होता है।
दर्द दूसरों को बाँटे शैतान वही होता है।।

भजन - 13

अनगिनत प्राणी जगत् में, सब का दाता एक है।
सब पिताओं का पिता और जगत् माता एक है।।

बात इतनी सी भला, क्यों समझ आती नहीं।
खाने वाले हैं करोड़ों, पर खिलाता एक है।।
अनगिनत प्राणी जगत् में, सब का...........

सब के कर्मों के मुताबिक, फल सभी को दे रहा।
जीव हैं जग में अनेक, और विधाता एक है।।
अनगिनत प्राणी जगत् में, सब का...........

ज़र्रे-ज़र्रे में समाया, सब जगह मौज़ूद है।
इन सभी फूलों में हँसता, मुस्कराता एक है।।
अनगिनत प्राणी जगत् में, सब का...........

और जो कुछ भी दिखाई, दे रहा संसार में।
खुद बना कर के चलाता, फिर मिटाता एक है।।
अनगिनत प्राणी जगत् में, सब का...........

हर तरफ उस के नज़ारे ही नज़ारे देखिये।
हर नज़ारे में नज़ारा, नज़र आता एक है।।
अनगिनत प्राणी जगत् में, सब का...........

"पथिक" जितने भी सितारे, हैं खुले आकाश में।
रोशनी बन कर सभी में, जगमगाता एक है।।
अनगिनत प्राणी जगत् में, सब का...........

प्रेम सब से करो, विश्वास कुछ पर करो।
बुरा किसी का मत करो।।

भजन - 14

सब मिल कर ईश्वर को ध्याओ, जो सब का पालनहारा है।
रक्षक है दीन अनाथों का, और सब दुःखियों का सहारा है।।

वह घट-घट अन्तर्यामी है, कुल सृष्टि का वह स्वामी है।
और ओ३म् नाम का नामी है, वेदों ने यही उचारा है।।

ये सूरज चाँद बनाए हैं, क्या सुन्दर दीप जलाए हैं।
बादल नभ से बरसाए हैं, अद्भुत हर एक नज़ारा है।।

अन्धेरा है कि उजाला है, सब वही बनाने वाला है।
हर काम जगत् में आला है, दुनिया में सब से न्यारा है।।

वह निकट भी है और दूर भी है, कण-कण में रमा भरपूर भी है।
जग में सब से मशहूर भी है, उस का न कोई किनारा है।।

सब मोर पपीहे गाते हैं, मधुर स्वर से उसे बुलाते हैं।
योगीजन उसको ध्याते हैं, भगवान सभी को प्यारा है।।

नर जीवन का है सार वही, सुख सम्पति का भण्डार वही।
जड़ चेतन का आधार वही, जो रक्षक 'पथिक' हमारा है।।

भजन बिन बिरथा जन्म गयो।

बालपनों सब खेल गंवायो, यौवन काम भयो।।
बूढ़े रोग ग्रसी सब काया, पर वश आप भयो।।
जप-तप-तीरथ दान न कीनो, न हरिनाम लियो।।
ऐ मन मेरे! बिना प्रभु सुमिरन, जाकर नरक पायो।।

भजन - 15

पितु मात सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिन के तुम ही रखवारे हो।।
सब भाँति सदा सुखदायक हो, दुःख दुर्गुण नाशनहारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उरधारे हो।।
भूलि है हम ही तुम को तुम तो, हमरी सुधि नाहिं विसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।।
महाराज! महा महिमा तुमरी, समझे विरले बुधीवारे हो।
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेमनिधे, मन-मन्दिर के उजियारे हो।।
इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय कृपालु सखा, केहि के अब और सहारे हो।।

भजन - 16

तू है सच्चा पिता, सारे संसार का, ओ३म् प्यारा।
तू ही - तू ही है रक्षक हमारा।।
चाँद, सूरज, सितारे बनाए, पृथ्वी, आकाश, पर्वत सजाए।
अन्त पाया नहीं, तेरा पाया नहीं पारवारा।। तू ही.............
पक्षीगण राग सुन्दर हैं गाते, जीव-जन्तु भी सिर हैं झुकाते।
उस को ही सुख मिला, तेरी राह पर चला, जो प्यारा।। तू ही.....
पाप पाखण्ड हम से छुड़ाओ, सच्चे मार्ग पर हम को चलाओ।
लगे भक्ति में मन, करें संध्या हवन जगत् सारा।। तू ही.......
अपनी भक्ति में मन को लगाना, कष्ट सारे हमारे मिटाना।
दुःखियों, कंगालों का और धन वालों का तू सहारा।। तू ही....

भजन - 17

हम सब मिल के दाता, आए तेरे दरबार।
भर दे झोली सब की, तेरे पूर्ण भण्डार।।

होवे जब प्रातःकाल, निर्मल हो के तत्काल,
अपन मस्तक झुका के, कर के तेरा खयाल।
तेरे दर पर आ के, बैठे सारा परिवार।। हम सब........

चाहे दिन हों विपरीत, होवे तुम से ही प्रीत,
सच्ची श्रद्धा से गावें, तेरे भक्ति के गीत।
होवे सब का प्रभु जी, तेरे चरणों में प्यार।। हम सब........

ले के दिल में फरियाद, तुझ को करते हैं याद,
जब हों संकट की घड़ियाँ, माँगे तुम से इमदाद।
सबसे बढ़ के जग में, ऊँचा तेरा दरबार।। हम सब........

तू है दुनिया का वाली, करता सब की रखवाली,
हम हैं रंग-रंग के पौधे, तू है हम सब का माली।
'पथिक' बगीचा है यह तेरा सुन्दर संसार।। हम सब........

मानव उन्नति के सात साधन

व्यर्थ की बकवास न करना, दुष्टों की संगति न करना
दूसरों के दोष न देखना, सदा प्रसन्न रहना
किसी से वैर न करना, क्षमाशील होना
निर्भय रहना

भजन - 18

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमज़ोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हम से, भूल कर भी कभी भूल हो ना।।

दूर अज्ञान के हों अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे,
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे भली ज़िन्दगी दे।
वैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना।।
हम चले नेक............

हम ना सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण,
फूल खुशियों के बाँटे सभी को, सब का जीवन ही बन जाए मधुवन।
अपनी करुणा का जल तू बहा के, कर दे पावन हर इक मन का कोना।।
हम चलें नेक..................
हर तरफ जुल्म और बेबसी है, सहमा–सहमा सा हर आदमी है,
पाप का बोझ बढ़ता ही जाए, जाने कैसे यह धरती थमी है।
बोझ ममता का तू उठा ले, तेरी रचना का यूँ अंत हो ना।।
हम चले नेक................

मन

मन सा न जग में प्रकाश कोई सच्चा मित्र।
मन सा न कोई और शत्रु हुड़दंगा है।
मन से ही रीत प्रीत मन से ही शांति गीत।
मन ही से कलह कपट द्वेष दंगा है।
मन ही मिलाता ईश, मन ही दिलाता मुक्ति।
मन ही तो डालता सुकर्म में अड़ंगा है।
मन ही मरीज तो लज़ीज़ कोई चीज़ नहीं।
मन यदि चंगा तो कटौती में ही गंगा है।

भजन - 19

मेरा उद्देश्य हो प्रभु, आज्ञा को तेरी पालना।
कर-कर कमाई धर्म की, अर्पण तेरे कर डालना।।

मानव के नाते से पिता, जाऊँ कभी जो भूल मैं।
मेरी विनय है आप से, बन कर सखा संभालना।।

जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं, श्रद्धा व प्रेम से करूँ।
आएँ अभद्र भाव जो, उन को सदा ही टालना।।

रक्षा मेरी जो तुम करो, रक्षा तेरी में मैं रहूँ।
अपने गुणों के सांचे में, जीवन को मेरे ढालना।।

मृत्यु का मुझ को भय न हो, माँगूं यही वरदान मैं।
मेधा बुद्धि की भिक्षा को, झोली में मेरी डालना।।

भजन - 20

ऐ ज्योति पुञ्ज भगवन्, मन में है क्यों अंधेरा?
जब कि हृदय गुफ़ा में, हरदम निवास तेरा।।

तेरी उपस्थिति को, यदि हम न जान पाये।
इस से बड़ा क्या होगा, प्रभु मन्द भाग्य मेरा।।

बाहर जगत् में तेरी, चहुँ ओर दिव्यता है।
अन्तःकरण में अपने, असुरों ने डाला डेरा।।

वह कौन सा है पर्दा, जो बन रहा रुकावट।
तेरे मेरे मिलन का, मार्ग है जिस ने घेरा।।

इतनी तड़प है भगवन्, इक झलक देख पाऊँ।
सब कुछ करूँ निवेदन, युग-युग से कष्ट झेला।।

अब तो विनय है मेरी, सत्य भानु का उदय हो।
हृदय गगन के अन्दर, हो जाये वास तेरा।।

उज्जवल रहा अतीत भविष्य भी महान है।
यदि सम्भल जाय वो जो कि वर्तमान है।।

भजन - 21

हे ज्ञानवान भगवन् हम को भी ज्ञान दे दो।
करुणा की चार छींटे करुणानिधान दे दो।।

सुलझा सकें हम अपनी, जीवन की उलझनों को।
प्रज्ञा, ऋतम्भरा की बुद्धि का ज्ञान दे दो।।
हे ज्ञानवान.........................

अपनी मदद हमेशा खुद आप कर सकें जो।
इन बाजुओं में शक्ति, हे शक्तिमान दे दो।।
हे ज्ञानवान.........................

हे ईश तुम हो सब की बिगड़ी बनाने वाले।
जीवन सफल बने जो, थोड़ा सा ज्ञान दे दो।।
हे ज्ञानवान.........................

डर है प्रभु तुम्हारा, रास्ता न भूल जायें।
भक्तों की मण्डली में, हम को भी स्थान दे दो।।
हे ज्ञानवान.........................

प्रभु! आप की मैं हूँ शरण निज चरण सेवक कीजिए।
मैं कुछ नहीं हूँ माँगता जो आप चाहे दीजिए।
सिर आँख से मंजूर है सुख दीजिए दुःख दीजिए।
जो होय इच्छा कीजिए मत दूर दर से कीजिए।

भजन - 22

हे नाथ दयालु हो, बस इतनी दया कर दो।
आया मैं शरण तेरी, भक्ति के भाव भर दो।।

तेरे रंग में रंग जाये, यह चचंल मन मेरा,
रहे साफ़ न हो धुंधला, मन का दर्पण मेरा।
हर शै में तुझे देखूँ, मेरे देव यही वर दो।।

हो कर के दूर तुझ से, सदियों से मैं भटक रहा,
नहीं पार मैं कर पाया, अभी भंवर में अटक रहा।
हो जाऊँ पार भव से, शक्ति जगदीश्वर दो।।

मरता और जीता हूँ, जी कर के मरता हूँ,
नौ मास गर्भ की जेल, जाने से मैं डरता हूँ।
बन्धन से छूट जाऊँ, कुछ और नज़र कर दो।।

हो जाऊँ अलग जग के, शोक और सन्तापों से,
कर्मठ ले बचा मुझ को, दुर्गुण और पापों से।
गाऊँ मैं गीत हरदम, तेरे ही, मधुर स्वर दो।।

कृपानिधि हम पर कृपा कर दो, कष्ट हमारे सारे हर दो।
असत्य अविद्या मार भगा दो, सत्यज्ञान की ज्योति जगा दो।।
सेवा परोपकार करें हम, भक्ति प्रेम रस से उर भर दो।
मुसीबतों से नहीं डरें हम, पालन निज कर्त्तव्य करें हम।।
हो अति विमल चरित्र हमारा, यह 'प्रकाश' विश्वास अमर दो।

भजन - 23

हे परमेश्वर मेरे, मन को सुमन कर दो।
मेरे मन की अमावास को, पूनम की किरण कर दो।।

जिसे पा के अमरता भी, जग में न कभी मरती,
जिन प्यार की बूँदों की, प्यासी है मेरी धरती।
बरसे मेरे आँगन में, इसे आर्य सरस कर दो।।

दिया जग ने बहुत मुझ को, पर आत्मा प्यासी है,
तू तृप्त करे सब को, तू घट-घट वासी है।
प्रभु मार्ग दिखा कर के, मेरा जीना सफल कर दो।

जन-जन के नयनों में, देखूँ मैं झलक तेरी,
श्वासों की सरगम में, देखूँ मैं ललक तेरी।
मन मंदिर में देखूँ, मेरे भाव सजल कर दो।।

हूँ सच्चा सखा तेरा, तेरा ही रहूँगा मैं,
चाहे सुख न मिले मुझ को, कुछ भी न कहूँगा मैं।
मुझे अपना बना कर के, विश्वास अटल कर दो।।

पंखे से वायु उत्पन्न नहीं होती, वायु तो वहाँ पहले से ही फैली होती है। पंखे से केवल उसका प्रवाह बढ़ जाता है और हमें लगने लगती है। ठीक उसी प्रकार आनन्द स्वरूप प्रभु का आनन्द तो सर्वत्र फैला हुआ है, उसके लिए केवल आत्मा रूपी पंखा चला दो। हमें स्वतः ही प्रभु का आनन्द मिलने लगेगा।

भजन - 24

इक तेरी दया का दान मिले, इक तेरा सहारा मिल जाए।
भवसागर में बहती मेरी, नैया को किनारा मिल जाए।।
जीवन की टेढ़ी राहों में, चल कर न तुझ को जान सका।
आशाओं की झोली भर जाए, इक तेरा द्वारा मिल जाए।।
मैं दीन हूँ दीनदयाल है तू, अल्पज्ञ हूँ मैं सर्वज्ञ है तू।
अज्ञान का पर्दा फट जाए, तेरा उजियारा मिल जाए।।
इस दुर्लभ अवसर को पा कर, कोई उत्तम कर्म कमा न सका।
अब दिल की तड़प यह कहती है, कहीं प्रीतम प्यारा मिल जाए।।
अपने मुझ को अपना न सके, औरों को उल्हाना क्यों मैं दूँ?
तू सभी वरों का दाता है, वरदान तुम्हारा मिल जाए।।
मैं नर हूँ तू नारायण है, इतना तो भेद ज़रूरी है।
यदि शरण तेरी मैं पा न सका, नर तन तो दुबारा मिल जाए।।

भजन - 25

इन्द्र हे! तुम धन के स्वामी, ऐसे धन का दान कर दो।
जिस से जीवन सुख से बीते, ऐश्वर्य ऐसा दान कर दो।।

चित्त की ही दक्षता से, शुभ कर्म हम सब ही करें।
सौभाग्यमय जीवन हमारा, शान्ति का तुम दान कर दो।।
इन्द्र हे! तुम.....

पोषयुत हो रवि की ज्योति, आयुवर्धक अमर ज्योति।
निरोग सात्विक देह हमारा, आयु का तुम दान कर दो।।
इन्द्र हे! तुम.....

सरस रस पूरित हो वाणी, स्वाद मृदु सुमधुर हो वाणी।
दिन सुदिन हो, रात्रि भी शुभ, ऐसा तुम वरदान कर दो।।
इन्द्र हे! तुम.....

भजन - 26

श्रेष्ठ धन देना ओ दाता, श्रेष्ठ धन देना।
जिस में चिंतन और मनन हो, ऐसा मन देना।।
ओ दाता श्रेष्ठ धन देना............

बल, बुद्धि, उत्साह बढ़ावें, वेद ज्ञान को पा कर,
कर्म करें कर्त्तव्य समझ कर, फल की चाह मिटा कर।
अति उज्जवल अति पावन प्रेरक चाल-चलन देना।।
ओ दाता श्रेष्ठ धन देना............

सूरज बन कर नभ पर चमके, शुभ सौभाग्य हमारा,
सब के मन में घर आँगन में, बहे प्रेम की धारा।
जो मधुमय सुख शान्ति भरा हो, वह जीवन देना।।
ओ दाता श्रेष्ठ धन देना............

धन वैभव जो घर में आवे, सब होवे सुखकारी,
पोषण कारक विघ्न निवारक, दुःख दुर्गुण भयहारी।
दान धर्म और यज्ञ कर्म में सच्ची लगन देना।।
ओ दाता श्रेष्ठ धन देना............

हृष्ट पुष्ट और सुघड़ सबल हों, स्वस्थ शरीर हमारे,
जग में जियें निरोगी होकर, हम सारे के सारे।
दोष रहित सब अन्न जल वायु, वातावरण देना।।
ओ दाता श्रेष्ठ धन देना............

मधुर वचन के संग वाणी में, सत्य-कथन देना।
ओ दाता श्रेष्ठ धन देना............

जीवन के दिन सुन्दर दिन हों, प्यारी-प्यारी बातें,
सब के सब जन करें परस्पर, जन हितकारी बातें।
"पथिक" सदा हर जन मानस में अपनापन देना।।

ओ दाता श्रेष्ठ धन देना............

भजन - 27

हम तेरे उपासक माँग रहे, भगवान हमें सद्बुद्धि दो।
हे सविता मेधा प्रज्ञा दो, भगवान हमें सद्बुद्धि दो।।
हम तेरे उपासक.........

बुद्धि-बल से ही मानव का उत्कर्ष यथावत सम्भव है।
गायत्री मंत्र से माँग रहे, भगवान हमें सद्बुद्धि दो।।
हम तेरे उपासक.........

हे देव उपास्य उपासक के, सब पाप दुरित दुःख दूर करो।
हम भद्र कहें और भद्र सुनें, भगवान हमें सद्बुद्धि दो।।
हम तेरे उपासक.........

हम भौतिक भोग न माँग रहे, जो कुछ भी दिए पर्याप्त हैं ये।
अन्तःकरण तम को दूर करो, भगवान हमें सद्बुद्धि दो।।
हम तेरे उपासक.........

जीवन क्या है मृत्यु क्या है, हम क्यों आए मानव योनि में?
इन गूढ़ रहस्यों को जानें, भगवान हमें सद्बुद्धि दो।।
हम तेरे उपासक.........

सद्ज्ञान विवेक समृद्धि दो, ऋद्धि-सिद्धि और वृद्धि दो।
तन, धन और मन की शुद्धि दो, भगवान हमें सद्बुद्धि दो।।
हम तेरे उपासक.........

इस पावन वेला में प्रभु जी हम यही याचना करते हैं।
भव सागर पार उतरने की भगवान हमें सद्बुद्धि दो।।
हम तेरे उपासक.........

भजन - 28

हे दयामय! हम सबों को, शुद्धताई दीजिये।
दूर कर के हर बुराई, को भलाई दीजिये।।

ऐसी कृपा और अनुग्रह, हम पे हो परमात्मा।
हों सभासद् इस सभा के, सब के सब धर्मात्मा।।

हो उजाला सब के मन में, ज्ञान के प्रकाश से।
और अन्धेरा दूर सारा, हो अविद्या नाश से।।

खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी।
छूट जावें दुःख सारे, सुख सदा पावें सभी।।

सारी विद्याओं को सीखें, ज्ञान से भरपूर हों।
शुभ कर्म में होवें तत्पर, सारे अवगुण दूर हों।।

यज्ञ हवन से हो सुगन्धित, अपना भारतवर्ष देश।
वायु जल सुखदायी होवें, जायें मिट सारे क्लेश।।

वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।
होवे आपस में प्रीति और बनें परमार्थी।।

लोभी और कामी क्रोधी, कोई भी हम में न हो।
सारे व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को।।

अच्छी संगत में रहें और वेद मार्ग पर चलें।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें।।

कीजिए हम सब का हृदय, शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ, सब का भक्ति दान से।।

भजन - 29

दया कर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में, शुद्धता देना।।

सदा से आप दीनों का, प्रभु उद्धार करते हैं।
हमें भी दीन हालत से, पतित पावन उठा देना।।

हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ।
अन्धेरे दिल में आ कर के, परम ज्योति जगा देना।। दया कर.......

बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिलजुल कर, परम ज्योति जगा देना।।

हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ही मान हो सेवा, वह सेवक दल बना देना।। दया कर....

वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना।
वतन पे जाँ फ़िदा करना, प्रभु हम को सिखा देना।।

भजन - 30

पार नैया हमारी, लगा दीजिये।
डूबती है भंवर में, बचा लीजिये।।

है हमारी विनय, आप से एक ही।
अपनी भक्ति का, अमृत पिला दीजिये।।

अपनी हस्ती से आगाह, कर दो हमें।
वरना हस्ती हमारी मिटा दीजिये।।

काम बिगड़े हुए, सब संवर जायेंगे।
पर जहालत का, परदा उठा दीजिये।।

भजन - 31

ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है।
दुर्बलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है।।

माता तू ही, तू ही पिता, बन्धु तू ही, तू ही सखा।
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है।।

जग को रचाने वाला तू, दुःखड़े मिटाने वाला तू।
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है।।

तेरी दया को छोड़ कर, कुछ भी नहीं हमें खबर।
जाएँ तो जाएँ हम किधर, तुम बिन हमारा कौन है।।

तेरी लगन, तेरा मनन, भक्ति तेरी, तेरा भजन।
आए हैं हम तेरी शरण, तुम बिन हमारा कौन है।।

बालक सभी हैं हम तेरे, तू है पिता परमात्मा।
हम पे हो बस तेरी दया, तुम बिन हमारा कौन है।।

स्र्वस्व तुम ही हो

जगदीश ज्ञान-दाता, सुख-मूल, शोकहारी।
भगवन्! तुम्हीं सदा हो, निष्पक्ष न्यायकारी।।

सब काल सर्वज्ञाता, सविता पिता विधाता।
सब में रमे हुए हो तुम, विश्व के बिहारी।।

कर दो बलिष्ठ आत्मा, घबरायें न दुःखों से।
कठिनाइयों का जिससे, तर जाय सिन्धु भारी।।

निश्चय दया करोगे, हम मांगते यही है।
हमको मिले स्वयं ही, उठने की शक्ति सारी।।

भजन - 32

दाता तेरे सुमिरन का, वरदान जो मिल जाए।
मुरझाई कली दिल की, इक आन में खिल जाए।।

सुनते हैं तेरी रहमत, हर पल ही बरसती है।
एक बूँद जो मिल जाए, तकदीर बदल जाए।।

ये मन बड़ा चंचल है, चिन्तन में नहीं लगता।
जितना इसे समझा लूँ, उतना ही मचल जाए।।

हे नाथ! मेरे मन की, बस इतनी तमन्ना है।
पापों से बचा लेना, पाँव न फिसल जाए।।

देवत्व के फूलों से, दामन को मेरे भर दो।
जीवन यह सुगन्धित हो, दुर्गन्ध निकल जाए।।

ऐ मानव तू दिल से, प्रभु का सिमरन कर ले।
दोषों भरे जीवन का, काँटा ही बदल जाए।।

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

चंचल मन है विलक्षण वस्तु।
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।

मन ने बनाये थे रावण अरस्तु।
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।।

मन ही है बन्धन व मुक्ति का हेतु।
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।।

शिवमस्तु शुभमस्तु कल्याणमस्तु
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।।

भजन - 33

आत्मिक ज्योति जगा दो, प्रभु जी मन मन्दिर में।
ज्ञान का दीप जला दो, प्रभु जी मन मन्दिर में।।
आत्मिक ज्योति......................

घोर निराशा मन में छाई, संशय-भ्रम ने ज्योति बुझाई।
आशा किरण खिला दो, प्रभु जी मन मन्दिर में।
आत्मिक ज्योति......................

मन पक्षी नित उठे सवेरा, एक ठोर नाहिं करे बसेरा।
हृदय बीच बसा दो, प्रभु जी मन मन्दिर में।
आत्मिक ज्योति......................

पाँच लुटेरे लूट मचाते, देवधाम को नरक बनाते।
दिव्य ज्योति दर्शा दो, प्रभु जी मन मन्दिर में।
आत्मिक ज्योति......................

व्याकुल मनवा क्राँति मचाते, देवधाम को नरक बनाते।
दिव्य ज्योति दर्शा दो, प्रभु जी मन मन्दिर में।
आत्मिक ज्योति......................

व्याकुल मनवा क्राँति मचाये, करुणा हित ये दिल भर आये।
'दिव्य' कृपा वर्षा दो, प्रभु जी मन मन्दिर में।
आत्मिक ज्योति......................

सत्य धर्म का सार है। सत्य पर अडिंग रहना चाहिए। कितने भी संकट आने पर जो सत्य को नहीं त्यागता वही धर्माचरण का पुण्य प्राप्त करता है।

भजन - 34

साथ ले लो पिता आगे बढ़ जाऊँगा।
वरना सम्भव है मैं भी फिसल जाऊँगा।।

राहें चिकनी खड़ी और पथरीली हैं,
काँटों झाड़ी भरी और ज़हरीली हैं।
दो सहारा नहीं तो मैं फँस जाऊँगा।।
वरना सम्भव..................

भोग विषयों की उठती है इक-इक लहर,
मुझ को उलटा डुबाने चली हर प्रहर।
दे दो पतवार वरना न तर पाऊँगा।।
वरना सम्भव..................

दुनिया इस ओर कहती है आ मौज ले।
पर उधर धर्म कहता है दुःख मोल ले।
तुम कहोगे मुझे जैसा कर पाऊँगा।।
वरना सम्भव..................

सत्य कहता हूँ भूला जभी मैं तुम्हें,
पायी दुनिया, मगर एक न पाया तुम्हें।
बिन तुम्हारे मैं आखिर किधर जाऊँगा।।
वरना सम्भव..................

जीवन ट्रैफिक की लालबत्ती है उसको देखो, ठहरो, (विचार करो) फिर आगे बढ़ो तो फिर जीवन रुपी सड़क पर हर जगह हरी बत्ती मिलेगी।

भजन - 35

प्रभु तेरी भक्ति का वर माँगते हैं।
झुके तेरे दर पे वो सर माँगते हैं।।

बुरे भाव से जो न देखे किसी को।
हम आँखों में ऐसी नज़र माँगते हैं।।

पड़े अगर मुसीबत न झोली पसारें।
हम हाथों में ऐसा हुनर माँगते हैं।।

पुकारे कोई दीन अबला हमें गर।
घड़ी पल में पहुँचे वो पर माँगते हैं।।

जो बेताब ज़ुल्म और सितम देख कर हो।
तड़पता हुआ वो जिगर माँगते हैं।।

दुःखी या अनाथों की सेवा हो जिस से।
प्रभु अपने घर ऐसा ज़र माँगते हैं।।

अराधना करूं मैं

प्रभु को विसार किसकी अराधना करूं मैं।
पा कल्पतरू किसी से क्या याचना करूं मैं?

मोती मुझे मिला जब मानस के मानसर में।
कंकर बटोरने की क्यों कामना करूं में?

सब के परमपिता जब घटघट में रम रहे है।
लघु जान क्यों किसी की अवहेलना करूं मैं?

मुझको 'प्रकाश' प्रतिपल आनन्द आन्तरिक है।
जग के क्षणिक सुखों की क्यों चाहना करूं मैं?

भजन - 36

प्रभु जी इतनी सी दया कर दो, हम को भी तुम्हारा प्यार मिले।
कुछ और भले ही मिले न मिले, प्रभु दर्शन का अधिकार मिले।।

जिस जीवन में जीवन ही नहीं, वह जीवन भी क्या जीवन है।
जीवन तब जीवन बनता है, जब जीवन का आधार मिले।।

जिसने तुम से जो कुछ माँगा, उस ने है वही तुम से पाया।
दुनिया को मिले दुनिया लेकिन, भक्तों को तेरा दरबार मिले।।

हम जन्म-जन्म के प्यासे हैं और तुम करुणा के सागर हो।
करुणानिधि से करूणा रस की, इक बूँद अगर इक बार मिले।।

कब से प्रभु दर्शन पाने की, हम आस लगाये बैठे हैं।
पल दो पल भीतर आने की, अनुमति अनुपम सरकार मिले।।

सब कुछ पाया इस जीवन में, बस एक तमन्ना बाकी है।
हर प्रेम पुजारी के अपने, मन मन्दिर में दातार मिले।।

इस मार्ग पर चलते-चलते, सदियां ही नहीं युग बीत गये।
मिल जाये "पथिक" मंजिल अपनी, हमको जो तुम्हारा प्यार मिले।।

हंस के दुनिया में मरा, कोई रो-रो के मरा।
जिन्दगी पाई उसी ने, जो कुछ हो के मरा।।
जी उठा मरने से वह, जिस की थी प्रभु पर इक नज़र।
जिस ने दुनिया को ही पाया था वह सब खो के मरा।।

भजन - 37

ओम् सुखकन्द से, सच्चिदानन्द से याचना है।
श्रेय पथ पर चलूँ, कामना है।।

कृत कुकर्मों की जब याद आती, आँख है अश्रुधारा बहाती।
मन में संताप की, घोर अनुपात की, वेदना है।।
श्रेय पथ.......

पाया नर तन, न पर साधना की, कुछ भी न ईश आराधना की।
मन में तृष्णा भरी, काम मद लोभ की, वासना है।।
श्रेय पथ.......

भक्तजन की सुनो करुण कविता, विश्वदुरितों का हे देव सविता।
दूर कर दीजिये, भद्र भर दीजिये, भावना है।।
श्रेय पथ.......

स्वस्ति पन्थामनुचरेम भगवन्? सूर्य चन्द्र के तुल्य भगवन्।
दान दूँ, ज्ञान लूँ, अघ्नता संग न रहूँ-प्रार्थना है।।
श्रेय पथ.......

ले चलो सुपथ पे सर्वज्ञाता, कुटिल अघ से बचूँ, सिर निवाता,
"पाल" दो आत्मबल, जिस से होवे सफल, साधना है।।
श्रेय पथ.......

असफल मनुष्य वह है जो कर्म की बजाय भाग्य को प्रबल मानता है। कर्म करने से ही तो भाग्य बनता है। यदि कर्म ही न करोगे तो भाग्य क्या करेगा?

– आचार्य चन्द्रशेखर

भजन - 38

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन्।
सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।
न हम में बल है न हम में शक्ति, न हम में साधन न हम में भक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।
जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।
सुना है हम संग हैं तुम्हारे, तुम्हीं हो सच्चे पिता हमारे।
तो सुध हमारी है क्यों बिसारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।
बुरे हैं जो हम तो हैं तुम्हारे, भले हैं जो हम तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे हो कर के हम दुःखियारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

भजन - 39

रंग-रंग-रंग मेरा चोला रंग दे, रंग-रंग-रंग मेरा चोला रंग दे।
कई जन्मों से मैं न रंगया, भक्ति वाला रंग दे, मेरा चोला रंग दे।।
बिछुड़ गई मैं ममता की मारी, युग-युग बीते आई ना वारी।
संग-संग-संग महापुरुषों का संग दे, रंग-रंग मेरा चोला रंग दे।।
प्रभु जी सच्चा रंग लगा दो, दिव्य अमृत का पान करा दो।
दंग-दंग-दंग दुनिया को दंग कर दे, रंग रंग मेरा चोला रंग दे।।
ऋषि मुनियों ने है रंग रंगाया, दर तेरे वर मेधा का मंगया।
भंग-भंग-भंग पाप भंग कर दे, रंग-रंग मेरा चोला रंग दे।।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् तेरा सागर, रंग रंगाया प्रभु गुण गा कर।
उमंग-उमंग प्रेम को उमंग दे, रंग-रंग मेरा चोला रंग दे।।

भजन - 40

नाम धन को सदा मैं बढ़ाता रहूँ।
ओ३म् का गीत पल-पल मैं गाता रहूँ।।

सृष्टि कर्ता व धर्ता वही ओ३म् है,
पालन कर्ता व हर्ता वही ओ३म् है।
अन्तर्मुख हो के फितरत दिखाता रहूँ।।
नाम धन को सदा........

नाम धन का सुन्दर खज़ाना जो है,
तन का आराम, वैभव को पाना जो है।
सारे नश्वर हैं ममता हटाता रहूँ।।
नाम धन को सदा........

मेरे प्यारे जो सब ओर सारे जो हैं,
हैं दुलारे जो फैले पसारे जो हैं।
यहाँ रह कर आसक्ति हटाता रहूँ।।
नाम धन को सदा........

दिव्य भक्ति हो मस्ती रहे नाम की,
मन की शक्ति हो शक्ति रहे ध्यान की।
मन के अन्दर तेरा दर्श पाता रहूँ।।
नाम धन को सदा........

दूसरों को समझाने की बजाय खुद को समझें
दूसरों को जानने की बजाय खुद को जानो
और दूसरों के दोष देखने की बजाय अपने दोष देखो।

भजन - 41

अपने भक्तों में हम को बिठा लीजिये,
ठोकरें खा रहे हैं बचा लीजिये।
नैया जीवन की है नाथ मंझधार में,
करके करुणा किनारे लगा दीजिये।।

छा रहा है अन्धेरा मेरे चारों ओर,
ज्ञान ज्योति को मन में जगा दीजिये।
मान होगा किसी को किसी का पिता,
मेरा तू ही है मुझ से लिखा लीजिये।।

वेद वाणी तेरी नाथ अमृत भरी,
भर के प्याला मुझे इक पिला दीजिये।
ओर पापों के है मेरे मन की गति,
ओर चरणों में अपने लगा लीजिये।।

'देश' को हे पिता! तेरा ही आसरा,
गोद अपनी में स्वामी बिठा लीजिये।
गोद तेरी से न बढ़ कर कोई सुखदायी जगह,
पुत्र तेरा ध्रुव वहीं, बैठा रहे माता सदा।।

मुश्किलें दिल के इरादे आज़माती हैं।
स्वपन के पर्दे निगाहों से हटाती हैं।।
हौंसला मत हार गिर कर ओ मुसाफ़िर।
ठोकरें इंसान को चलना सिखाती हैं।

भजन - 42

हे प्रभो वर दीजिये, धारण करें संतोष हम।
दूसरों के गुण निहारें और अपने दोष हम।।

सत्य शुद्धाचार, सद्व्यवहार के होवें धनी।
शुभ-गुणों से कर सकें, भरपूर अपना कोष हम।।

हों सदा निःस्वार्थ मन, अभिमान कोसों दूर हो।
मन, वचन और कर्म से, होवें सभी निर्दोष हम।।

देश जाति धर्म रक्षा के लिए प्रहरी बनें।
और सजग हो कर रहें, न हों कभी मदहोश हम।।

काँप जाए वेद निन्दक, नास्तिकों की टोलियाँ।
ऊँचे स्वर में बोलें वैदिक धर्म का जयघोष हम।।

दुर्गुणों को छोड़ देवें, 'पथिक' मन को जीत लें।
इन्द्रियों के दमन में, पूरा दिखावे जोश हम।।

भजन - 43

हे प्रभु आनन्ददाता! ज्ञान हम को दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से कीजिये।।

लीजिये हम को शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक वीर व्रतधारी बनें।।

हिन्द में पैदा हुए हैं, हिन्द की सन्तान हैं।
हिन्द की सेवा करें, वरदान ऐसा दीजिये।।

प्रेम की गंगा बहे दिल में हमारे रात दिन।

तुम को कभी भूले नहीं, सद्ज्ञान ऐसा दीजिये।।

भजन - 44

प्रभु मेरे जीवन का, उद्धार कर दो।
भंवर में है नैया, इसे पार कर दो।।

मेरी इन्द्रियाँ हों सदा, मेरे वश में।
मेरे मन में मेरा ही अधिकार कर दो।।

न शुभ कार्य करने में, पीछे रहूँ मैं।
कुकर्मों से मुझ को, खबरदार कर दो।।

मैं गाऊँ सदा वेद, की ही ऋचाएँ।
कि तन मन में मेरे, वेदों की संचार कर दो।।

मेरा सर झुके तो झुके, तेरे दर पर।
मुझे ऐसा दुनिया में, सरदार कर दो।।

मैं समझूँ न जग में, किसी को बेगाना।
मेरा विश्वभर के, लिये प्यार कर दो।।

'पथिक' राह में हो, कोई दीन दुःखिया।
मदद के लिये मुझ को तैयार कर दो।।

भज ले

भज ले ओंकार रे मन मूर्ख अनारी।
चार दिनन के जीवन खातिर कैसा जाल पसारी।
कोई न जावत साथ तुम्हारे, मात-पिता, सुत-नारी।।
पाप कपट से संचित कर धन, मूर्ख मौत बिसारी।
ब्रह्मानन्द जन्म यह दुर्लभ देत वृथा किम डारी।।

भजन - 45

मुझ नयन हीन को राह दिखा प्रभु, पग–पग ठोकर खाऊँ मैं।
तेरे डगर की कठिन डगरिया, चलते–चलते थक जाऊँ मैं।।

छाया चारों ओर अन्धेरा, भूल न जाऊँ मार्ग तेरा।
इक बार प्रभु मेरी बाँह पकड़ लो, मन की जोत जलाऊँ मैं।।
मुझ नयन हीन............

दे दो प्रभु जी अपना सहारा, तुम बिन प्रीतम कौन हमारा।
शरण में अपनी रख लो प्रभु जी, तुम बिन चैन न पाऊँ मैं।।
मुझ नयन हीन............

मंझधार पड़ी है मेरी नैया, तुम बिन प्रभु जी कौन खिवैया।
शरण पड़े की लाज राखो, तुम पर आस लगाऊँ मैं।।
मुझ नयन हीन............

भजन - 46

मेरा जीवन सारा बीते, तेरा नाम जपते–जपते।
कोई बाधा भी न आए, तेरी राह पर चलते–चलते।।

भव सागर में मेरी नैया, जिस का न कोई खिवैया।
भव सागर से तर जाऊँ, तेरा नाम जपते–जपते।।

तेरी मंज़िल मुझे बुलाए, मेरे पाँव डगमगाए।
तेरी मंज़िल तक मैं पहुँचूँ, तेरा नाम जपते–जपते।।

जिस हाल में तू रखे, खुश हो के मैं गुज़ारूँ।
मेरे श्वास पूरे होवें, तेरा नाम जपते–जपते।।

भजन - 47

मैली चादर ओढ़ के कैसे, द्वार तिहारे आऊँ।
हे पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शरमाऊँ।।

तुम ने मुझ को जग में भेजा, निर्मल दे कर काया,
आ कर के संसार में मैंने, इस को दाग लगाया।
जन्म-जन्म की मैली चादर, मैं कैसे दाग छुड़ाऊँ।।
हे पावन..................

निर्मल काया पा कर तुझ से, नाम न तेरा गाया,
नैन मून्द कर हे परमेश्वर, क्यों न तुझ को ध्याया।
मन वाणी की तारें टूटी, अब क्या गीत गाऊँ।।
हे पावन..................

इन पाँवों से चल कर तेरे, द्वार कभी न आया,
जहाँ-जहाँ हो पूजा तेरी, कभी न शीश झुकाया।
हे प्रभु मैं हार चुका हूँ, कैसे मुख दिखलाऊँ।।
हे पावन..................

पतित पावन है नाम तुम्हारा, दे दो प्रभु अब अपना सहारा,
शरण तुम्हारी आन पड़ा हूँ, तुम ही जगत् आधारा।
तुम्हीं बढ़ाओ हाथ प्रभु जी, शरण तुम्हारी आऊँ।।
हे पावन..................

हंसना चाहते हो तो रोना कबूल करो,
सुख चाहते हो तो दुःख कबूल करो,
फूल चाहते हो तो काँटों की परवाह मत करो।
काँटों से दूर भागने वालों को कभी गुलाब नहीं मिलते।

भजन - 48

सुखी बसे संसार सब दुःखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सब की मेरे भगवन पूरी होय।।

विद्या, बुद्धि, तेज, बल सब के भीतर होय।
दूध-पूत, धन-धान्य से वंचित रहे न कोय।।

आप की भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर।
राग द्वेष से चित्त मेरा कोसों भागे दूर।।

मिले भरोसा आप का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की बनी रहे मम ईश।।

पाप से हमें बचाइए करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय के सब को करो निहाल।।

दिल में दया उदारता मन में प्रेम अपार।
धैर्य हृदय में वीरता सब को दो करतार।।

नारायण प्रभु आप हैं सकल ज्ञान भंडार।
दूर करो अज्ञान सब कर दो भव से पार।।

हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिये कृपानिधान।
साधु-संगत सुख दीजिए, दया नम्रता दान।।

आज का मानव अपने अभाव से उतना दुःखी नहीं, जितना कि दूसरों के प्रभाव से दुःखी है। अपने दुःख से इतना दुःखी नहीं, जितना कि पड़ोसी के सुख से दुःखी है। इस लिए दूसरों को फलता-फूलता देखकर मन को प्रसन्न करो ताकि सुख आप के घर में भी आने लगे।

भजन - 49

ओमू मेरी वन्दना स्वीकार हो, तेरे चरणों में मेरा उद्धार हो।।

सेवा पूजा मैं नहीं हूँ जानता, ले ना सका तेरा नाम मैं हूँ जानता।
किस तरह से मेरी नैया पार हो।। ओम्.........

डूबता महा-सिन्धु में बेड़ा मेरा, ओ मेरे दाता सहारा है तेरा।
डूबती नैया के तुम पतवार हो।। ओम्.........

झाँकी मेरे ओम् की सजती रहे, नित हमारी हाज़री लगती रहे।
रोज दर्शन आप का सरकार हो।। ओम्.........

है यही इच्छा प्रभु इस दास की, शीश मेरा हो तेरा द्वार हो।
ओम् मेरी वन्दना स्वीकार हो, तेरे चरणों में मेरा उद्धार हो।।

मेरी नैया

भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना।।
दल-बल के साथ माया, जो आ के मुझ को घेरे।
तुम देखते न रहना, झट आ के बचा लेना।।
सम्भव है झंझटों में, मैं तुम को भूल जाऊँ।
पर नाथ दया कर के, मुझको न भुला देना।।
तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात अगर सच है, सच कर के दिखा देना।।

भजन - 50

आनन्द स्रोत बह रहा, पर तू उदास है।
अचरज है जल में रह के भी, मछली को प्यास है।।

फूलों में जो सुवास, ईख में मिठास है।
भगवान का त्यों विश्व के, कण-कण में वास है।।

टुक ज्ञान-चक्षु खोल के, तू देख तो सही।
जिस को तू ढूँढता है, वो सदा तेरे पास है।।

कुछ तो समय निकाल, आत्म शुद्धि के लिये।
नर जन्म का उद्देश्य न, केवल विलास है।।

आनन्द मोक्ष का न, पा सकेगा तब तलक।
तू जब तलक 'प्रकाश' इन्द्रियों का दास है।।

भजन - 51

किस ने दीप जलाया, दीप जला कर किया उजाला।
अपना आप छिपाया, किस ने दीप जलाया।।

लहर रहा आँखों के आगे, सागर यह सुष्माता।
किस ने रूप दिया जल थल को, किस ने व्योम सजाया।।
किसने दीप.......................

स्रोत कहाँ है इस सागर का, है कितनी गहराई।
सागर ने क्यों अपने भीतर, अपना आप छिपाया।।
किसने दीप.......................

है वह कौन, कहाँ का वासी, कैसे कोई बताये।
नहीं किसी ने देखा उस को, सन्त जनों ने गाया।।
किसने दीप

भजन - 52

तुझे मनवा जिस की तालाश है,
अति निकट उस का निवास है।
काहे दर-बदर तू भटक रहा,
वह तुम्हारे दिल के ही पास है।।

यह जो मनुज तन धन प्राण है,
यह प्रभु मिलन का सामान है।
तेरी हर खुशी तेरे घर में है,
फिर किस लिये तू उदास है।। तुझे मनवा.........

दो घूँट भी जल न पिया,
इन्सान तूने यह क्या किया।
कब से नदी तट पर खड़ा,
अब तक बुझी नहीं प्यास है।। तुझे मनवा..........

जब से कुराहों पे चल रहा,
तेरा हर यत्न निष्फल रहा।
मथनी तो जल में चला रहा,
और घी निकलने की आस है।। तुझे मनवा.......

गुल टूट कर खिलता नहीं,
नर तन भी यूँ मिलता नहीं।
तू विरान कर न "पथिक" इसे,
मिला मखमली जो लिवास है।। तुझे मनवा..........

वह मनुष्य किस काम का, वह ज़िन्दगी किस काम की।
जिसने न लौ जगाई, प्रभु के प्यारे नाम की।।

भजन - 53

ओम् सोम रस वाले, तुम को लाखों प्रणाम।
लाखों आँखों वाले, तुम को लाखों प्रणाम।।

कैसी सुन्दर सृष्टि रचाई, सूर्य चन्द्र सी ज्योति जगाई।
लीला ललित ललाम।। तुमको लाखों...............

भाँति-भाँति की योनि बनाई, मानव काया श्रेष्ठ बनाई।
यही अयोध्या धाम।। तुमको लाखों...............

इन्द्रियगण सब देव इसी में, काम-क्रोध से असुर इसी में।
पाप-पुण्य सुखधाम।। तुमको लाखों...............

यज्ञ, योग से देव जगाते, ज्ञान-ध्यान से भोग भगाते।
'दिव्य' भजें नित नाम।। तुमको लाखों...............

भजन - 54

ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्ता विधाता, ओ३म् पालनहार है।।

ओ३म् है दुःख का विनाशक, ओ३म् सर्वानन्द है।
ओ३म् है बल-तेजधारी, ओ३म् करुणाकन्द है।।

ओ३म् सब का पूज्य है, हम ओ३म् का पूजन करें।
ओ३म् ही के जाप से, हम शुद्ध अपना मन करें।।

ओ३म् का गुरुमन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन।।

ओ३म् के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायेगा।
अन्त में यह ज्ञान हम को मोक्ष तक पहुँचायेगा।।

भजन - 55

प्रभु सारी दुनिया से, ऊँची तेरी शान है।
कितना महान है तू, कितना महान है।।

यहाँ-वहाँ कोने-कोने, तू ही मशहूर है,
निकट से निकट और दूर से भी दूर है।
तुझ में समाया हुआ, सकल जहान है।। कितना महान.......

तू ही एक मालिक है, सारी कायनात का,
फूलों भरी क्यारियों का, तारों की जमात का।
तेरी ही ज़मीन है ये, तेरा आसमान है।। कितना महान.......

जितने भी दुनिया में, जीव देहधारी हैं,
सभी तेरे प्यार के, समान अधिकारी हैं।
"पथिक" सभी को दिया, तूने वरदान है।। कितना महान......

मेहन्दी के पत्ते में है लाली, पर नज़र आती नहीं।
है हवा आकाश में, पर वह दिखलाती नहीं।।
जिस तरह अग्नि का शोला, संग में मौजूद है।
उसी तरह परमात्मा, हर रंग में मौजूद है।।

भजन - 56

दुनिया बनाने वाले, कैसी तेरी माया है।
कहीं बरसात, कहीं धूप, कहीं छाया है।।

पर्वतों की चोटियाँ हैं, आसमाँ को चूमतीं,
रेशमी घटाएँ काली, पर्वतों पे घूमतीं।
कहीं चाँद सूरज, कहीं सागर को बनाया है।।
कहीं बरसात कहीं...........

गुज़रते पलों की टोली, यही गुनगुना रही,
रुके न समय की गाड़ी, धीरे-धीरे जा रही।
कल आज और कल का तूने, चक्कर क्या चलाया है।।
कहीं बरसात कहीं...........

अच्छे बुरे कर्मों की है, पूँजी सब के साथ में,
सभी वह खिलौने जिन की, चाबी तेरे हाथ में।
नाचना पड़ा है, तूने जैसे भी नचाया है।।
कहीं बरसात कहीं...........

कौन सी जगह है खाली, कहाँ तेरा वास है,
कहीं तू नहीं है लेकिन, फिर भी सब के पास है।
किसी ने भी 'पथिक' न, इस उलझन को सुलझाया है।।
कहीं बरसात कहीं...........

जो बात दवा से हो न सके, वह बात दुआ मे होती है।
जब पूरा सद्गुरु मिल जाए, तो बात खुदा से होती है।।

भजन - 57

तेरे नाम का सुमिरन कर के, मेरे मन में सुख भर आया।
तेरी दया को मैंने पाया, तेरी कृपा को मैंने पाया।।

दुनिया की ठोकर खा कर, जब हुआ कभी बेसहारा,
न पा कर अपना कोई, फिर मैंने तुम्हें पुकारा।
हे नाथ मेरे सिर ऊपर, तूने अमृत बरसाया।।
तेरी दया को.........................

तू संग में था नित मेरे, ये नैना देख न पाये.
कंचन माया के रंग में, ये नैन रहे उलझाये।
जितनी बार गिरा हूँ, तूने पग-पग मुझे उठाया।।
तेरी दया को.........................

हर जगह तुम्हीं हो मेरे, हर वक्त तेरा ही साया,
निर्लेप प्रभु जी मेरे, हर रूप तुम्हीं से पाया।
जो शरण में आया तेरी, उस को तूने पार लगाया।।
तेरी दया को.........................

भवसागर की लहरों में, भटकी जब मेरी नैया,
तट छूना भर मुश्किल था, नहीं दीखे कोई खिवैया।
तू लहर बना सागर की, मेरी नाव किनारे लाया।।
तेरी दया को.........................

नाव पानी में रहती है। यदि नाव में पानी भरेगा तो नाव डूब जायेगी। उसी प्रकार साधक को भी संसार में रहते हुए संसार को मन में नहीं बसाना चाहिए।
नहीं तो वह अपने लक्ष्य को नहीं पा सकता।

भजन - 58

हे पिता तू पता बता, तू है कहाँ?
तू कहाँ, तू कहाँ, तू कहाँ, तू कहाँ!!

गंगा यमुना की धारा में ढूँढ़ा तुझे,
ऊँचे पर्वत, वनों में देखा तुझे।
मन्दिर, मस्जिद में जा कर पूजा तुझे,
मक्का और मदीना में पूछा तुझे।।

तुझे ढूँढते छाना है सारा जहाँ
तू कहाँ, तू कहाँ, तू कहाँ, तू कहाँ!!

गिरजाघर में गया तेरा घर न मिला,
गुरुद्वारे गया तेरा दर न मिला।
नीचे ऊपर इधर न उधर तू मिला,
मठ तीर्थ भी छाने पर तू न मिला।।

मथुरा काशी गया, न मिला तू वहाँ
तू कहाँ, तू कहाँ, तू कहाँ, तू कहाँ!!

कोई कहता है कि तू कैलाश रहे,
क्षीर सागर में रहता कोई कहे।
चौथे आसमाँ का कोई दावा करे,
कोई सातवें आसमाँ की बात कहे।।

किस की मानूं कि तू रहता है कहाँ
तू कहाँ, तू कहाँ, तू कहाँ, तू कहाँ!!

देखे ऋषि महर्षि अनेकों गुणी,
नेति-नेति तुम्हें सब कहते मुनि।
तुझे जाने न कोई गृहस्थी वनी, तेरा
पता बताये न कोई धनी।।

मन में घोर निराशा छाई यहाँ
तू कहाँ, तू कहाँ, तू कहाँ, तू कहाँ!!
(इस निराशा की स्थिति में अंतरात्मा में एक ध्वनि उठती है)

तभी ध्वनित हुई मेरी अन्तरात्मा,
जैसे बोल रहे प्रभु परमात्मा।
मुझे पाना तो पाप का कर खात्मा,
मेरा वास–स्थान है शुद्ध आत्मा।।

श्रद्धा भक्ति का वातावरण है जहाँ,
मैं वहाँ, मै वहाँ, मैं वहाँ, मैं वहाँ।।

शुद्ध निर्मल पवित्रा बना आत्मा,
मुख भोग से मोड़ बन धर्मात्मा।
निष्ठावान् तथा बन पुण्यात्मा,
स्वयं तुझ से कहेंगे फिर परमात्मा।।

भक्त ढूँढ़ता फिरता मुझे तू कहाँ,
मैं वहाँ, तू जहाँ, तू जहाँ, मैं वहाँ।।

सुनी ध्वनि तो नेत्रों को बन्द किया,
ध्यान–मुद्रा में दिव्यानन्द लिया।
एक ज्योति जगी, जगमगाया हिया,
मेरे अन्दर ही बैठा था मेरा पिया।।

'पाल' धन्य हुआ, प्रभु रहता यहाँ,
वह यहाँ, वह यहाँ, वह यहाँ, वह यहाँ।।

मैंने सब कुछ खो के देख लिया, इक आपा खोना बाकी है।
मैंने सब का हो के देख लिया, इक तेरा होना बाकी है।।

भजन - 59

जिस ने पर्वत गगन, आग पानी पवन, सब बनाया।
हम ने उस ईश में मन लगाया।।

शब्द करती नदी बह रही है,
सनसनाती हवा कह रही है।
कैसी उन्मादनी, उस महादेव की, मधुर माया।।
हम ने उस ईश में.................

सच्चिदानन्द व्यापक विधाता,
विश्व दिन-रात गुण जिस के गाता।
भक्त-जन तारिणी, मृत्युभय हारिणी, यस्य छाया।।
हम ने उस ईश में.................

न्यायकारी निराकार स्वामी,
शम्भु शिव भक्त वत्सल नमामि।
भक्ति का रस पिये, मन में श्रद्धा लिये, गीत गाया।।
हम ने उस ईश में.................

ध्यान मुद्रा में रस मिल रहा है,
आत्मा का कमल खिल रहा है।
ओ३म् सुखकन्द है, आज आनन्द है, 'पाल' पाया।।
हम ने उस ईश में.................

व्यक्ति अपने अभाव से इतना दुःखी नहीं,
जितना दूसरों के प्रभाव से दुःखी है।

भजन - 60

चदरिया झीनी रे झीनी, झीनी रे झीनी, झीनी रे झीनी।
राम नाम रस भीनी चदरिया, झीनी रे झीनी।।

अष्ट कमल का चरखा बनाया, पाँच तत्व की पूनी।
नौ-दस मास बुनन को लागे, मूरख मैली कीनी चदरिया।।
चदरिया झीनी रे झीनी................

जब मोरी चादर बन घर आई, रंगरेज को दीनी।
ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने, कि लालो लाल कर दीनी।।
चदरिया झीनी रे झीनी................

चादर ओढ़ शंका मत करियो, ये दो दिन तुम को दीनी।
मूरख तो भेद नहीं जाने, दिन-दिन मैली कीनी।।
चदरिया झीनी रे झीनी................

ध्रुव प्रहलाद, सुदामा ने ओढ़ी, शुक्रदेव ने निर्मल कीनी।
दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी, ज्यूँ की त्यूँ धर दीनी।।
चदरिया झीनी रे झीनी................

जैसे गोताखोर जल में डुबकी मार के शुद्ध हो के बाहर आता है, वैसे ही सब जीव लोग अपने आत्माओं को शुद्ध ज्ञान, आनन्दस्वरूप, व्यापक परमेश्वर में मग्न करके नित्य शुद्ध करें।

\- पञ्चमहायज्ञविधि

भजन - 61

(तर्ज : ऐ रात के मुसाफ़िर चन्दा ज़रा बता दे)

ईश्वर को ढूँढने का, वैदिक स्वरूप क्या है।
अनजान है यह दुनिया, कुछ भी नहीं पता है।।

तप त्याग भावना से, निष्काम कर्म करना।
ऊँचे चरित्र वाला, इन्सान देवता है।।

जब हो प्रभु से मिलना, इच्छा हो दर्शनों की।
इस का सही तरीका, सन्ध्या उपासना है।।

अन्तःकरण की शुद्धि, कर के शरीर निर्मल।
उस के समीप जाना, ऋषियों का रास्ता है।।

एकान्त शान्त मन हो, घर या नदी किनारे।
हो उस का जप निरन्तर, कण–कण में जो बसा है।।

यम नियम का निभाना, कर्त्तव्य नित्य जानो।
इस के बगैर कोई, रस्ता न दूसरा है।।

आसन लगा के बैठो, और प्राणायाम कर लो।
फिर प्रत्याहार हो तो, निर्विघ्न धारणा है।।

तब ध्यान मग्न हो के, ऐसी लगे समाधि।
यह भी न "पथिक" सूझे, संसार चीज़ क्या है।।

धन्य वह माता है जो गर्भधान से लेकर जब तक
विद्या पूरी न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।
– सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीय समुल्लास

भजन - 62

(तर्ज : इस भरी दुनिया में कोई भी हमारा न हुआ)

उस के चरणों में हुआ, ध्यान तुम्हारा ही नहीं।
तुम को धन प्यारा है, भगवान तो प्यारा ही नहीं।।

क्या सुनेगा भला, परमात्मा आवाज़ तेरी।
तूने उस को कभी दिल से तो पुकारा ही नहीं।।

क्या हुआ कितने ही, मैदान अगर मार लिए।
अपने इस मन को तो, अब तक तूने मारा ही नहीं।।

यह हवा आज तो, उलटी ही ज़माने में चली।
भले इन्सान का, दुनिया में गुज़ारा ही नहीं।।

वो क्या उस पार, किनारे पे भला पहुँचेगा।
जिस ने मंझधार में, किश्ती को उतारा ही नहीं।।

तू है जिस ने कभी, उस को ना "पथिक" याद किया।
वो है जिस ने कभी, तुझ को तो बिसारा ही नहीं।।

जाना मैंने

जाना मैंने जनक जननी, भाई बहन को जाना है,
आना-जाना, जाना है, और पीना-खाना जाना है।
अकड़ जाना, मुकर जाना, लड़ना झगड़ना जाना है।
ओ३म् नाम को जाना, जो संपत्ति का खज़ाना है।
शत्रु जाना मित्र जाना, अपना पराया जाना है।
कुटम्ब, कबीला सभी, धीरे-धीरे छोड़ जाना है।
सब कुछ जाना, पर कुछ भी न जाना, यदि उसको न जाना है।
जिसके पास तुम्हें और हमें जाना है।

भजन - 63

प्रातः वेले जाग, अमृत बरस रहा।
प्रभु चिन्तन में लाग, अमृत बरस रहा।।

सूर्योदय के पीछे सोना, है अपने जीवन को खोना।
झट शय्या को त्याग, अमृत बरस रहा।। प्रातः वेले............

नीरस जीवन में रस भर ले, धार धर्म भवसागर तर ले।
आलस्य निद्रा त्याग, अमृत बरस रहा।। प्रातः वेले.............

वेद ज्ञान की ओढ़ चदरिया, छोड़ कपट छल द्वेष डगरिया।
धो कुसंग के दाग, अमृत बरस रहा।। प्रातः वेले.............

परोपकार में चित्त लगा ले, जीवन अपना सफल बना ले।
तज मिथ्या अनुराग, अमृत बरस रहा।। प्रातः वेले.............

बड़े भाग्य से नर तन पाया, ऋषि मुनियों ने यही बताया।
रख इसे बेदाग, अमृत बरस रहा।। प्रातः वेले.............

संयम से तन बल को बढ़ा ले, ध्यान योग में चित्त लगा ले।
कर सच्चा वैराग्य, अमृत बरस रहा।। प्रातः वेले.............

ईश्वर को निज सखा बना ले, दिव्य भाव की ज्योति जगा ले।
साहस को मत त्याग, अमृत बरस रहा।। प्रातः वेले............

घर गृहस्थी में रहते हुए, दुनियादारी निभाते हुए आप ने दुनिया छोड़कर भागना नहीं है। भगवान का मार्ग संसार छोड़ कर मिलने वाला नहीं है।

भजन - 64

प्रभु प्यारे से जिस का सम्बन्ध है।
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

झूठी ममता से कर के किनारा,
ले के सच्चे पिता का सहारा।
हुआ उस की रज़ा में रज़ामन्द है,
उस को हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

जिस की कथनी में कोयल सी चहक है,
जिस की करनी में फूलों सी महक है।
प्रेम नर्मी ही जिस की सुगन्ध है,
उस को हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

निन्दा चुगली न जिस को सुहावे,
बुरी संगत की रंगत न भावे।
प्रभु सत्संग ही जिस को पसन्द है,
उस को हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

दीन-दुःखियों के दुःख जो मिटावे,
बन के सेवक भला सब का चाहे।
नहीं जिस में पाखण्ड और घमण्ड है,
उस को हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

संसार में रक्खो ऐसा मेल।
जैसे पानी पर रहता है तेल।।

भजन - 65

प्रभु दर्शन पाने आये थे, प्रभु दर्शन पाना भूल गये।
जिस पथ पर हम को जाना था, उस पथ पर जाना भूल गये।।

यम-नियमों के साधन द्वारा, अपने को निर्मल कर न सके।
ऋषियों की भाँति ज्योति से, ज्योति को मिलाना भूल गये।।

मानव जीवन को पा कर के, यह उलझन हम से न सुलझी।
उस अन्तर्यामी के अन्दर, हम ध्यान लगाना भूल गये।।

अपनी ही अविद्या के कारण, भगवान को समझा दूर सदा।
खुद खेले पापाचारों में, शुभ कर्म कमाना भूल गये।।

धरती के मानव जितने हैं, भाइयों का सब से नाता है।
हम हिंसावादी बन बैठे, देवों का ज़माना भूल गये।।

भूलें सुलझाने विश्व की फिर, प्रभु-भक्त दयानन्द जी आये।
ऐसे उपकारी नेता की, आज्ञा को निभाना भूल गये।।

भगवान मेरा जीवन

भगवान मेरा जीवन संसार के लिए हो।
ज़िन्दगी हो लेकिन उपकार के लिए हो।।

हम में विवेक जागे हम धर्म को न भूलें।
चाहे हमारी गर्दन तलवार के तले हो।।

सुन्दर स्वभाव मेरा दुश्मन के मन को भावे।
वह देखते ही कह दे तुम प्यार के लिए हो।।

मन बुद्धि और तन से सब विश्व का भला हो।
चाहे हमारी नैया मंझधार के लिए हो।।

भजन - 66

(तर्ज : अल्ला ही अल्ला किया करो)

नाम प्रभु का लिया नहीं, धर्म का सौदा किया नहीं।
ऐसा मानव दुनिया में, जी कर के भी जिया नहीं।।
ऐसा मानव दुनिया में.................

जो कुछ भी यह इस दुनिया में, देता है दिखलाई,
ईश्वर है कण-कण में समाया, वेद ने बात बताई।
वेद का अमृत पिया नहीं, धर्म का सौदा किया नहीं।।
ऐसा मानव दुनिया में.................

यह धन किस के पास रहा है, किस के पास रहेगा,
पानी का तो काम है बहना, यह हर हाल बहेगा।
धन निर्धन को दिया नहीं, धर्म का सौदा किया नहीं।।
ऐसा मानव दुनिया में.................

लालच मत कर लोभ छोड़ दे, लालच बुरी बला है,
तू कर ले सन्तोष इसी में, जो तिल फूल मिला है।
फटा हुआ दिल सिया नहीं, धर्म का सौदा किया नहीं।।
ऐसा मानव दुनिया में.................

नफ़रत दिल से दूर हटा कर, सब को गले लगा ले,
त्याग भाव से जी कर अपना, जीवन सफल बना ले।
"पथिक" सुनेगा भी या नहीं, धर्म का सौदा किया नहीं।।
ऐसा मानव दुनिया में.................

इस जीवन में खूब कमाया, तूने हीरे-मोती।
याद रखना यारों, कफ़न में जेब नहीं होती।।

भजन - 67

परम पिता से प्यार नहीं, शुद्ध रहा व्यवहार नहीं।
इसी लिए तो आज देख लो, सुखी कोई परिवार नहीं।।

अन्न फूल फल मेवाओं को, समय-समय पर देता है,
लेकिन है आश्चर्य यही, बदले में कुछ नहीं लेता है।
करता है इन्कार नहीं, भेद भाव तकरार नहीं,
ऐसे दानी का ओ बन्दे, माने तू उपकार नहीं।।

जल वायु और अग्नि का वो, लेता नहीं किराया है,
सर्दी गर्मी वर्षा का, अति सुन्दर चक्र चलाया है।
लगा कहीं दरबार नहीं, कोई सिपहसालार नहीं,
कर्मों का फल दे सभी को, रिश्वत की सरकार नहीं।।

मानव चोले में न जाने, कितने यन्त्र लगाए हैं,
कीमत कोई माप सका न, ऐसे अमूल्य बनाये हैं।
करता है इन्कार नहीं, भेद भाव तकरार नहीं,
ऐसे कारीगर का बन्दे, करता ज़रा विचार नहीं।।

सूर्य चन्द्र तारों का जाने, कहाँ बिजली घर बना हुआ,
पल भर को नहीं धोखा देते, कहाँ कनैक्शन लगा हुआ।
खम्भें और कोई तार नहीं, खड़ी कोई दीवार नहीं,
ऐसे शिल्पकार का करता ऐ 'नरदेव' विचार नहीं।।

वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ी भाग्यवान,
जिस के माता और पिता धार्मिक विद्वान हों।

भजन - 68

(तर्ज : चली चली रे पतंग मेरी चली रे)

प्रातः उठ के जो प्रभु गुण गायेगा,
वो ही जग में अमर फल पायेगा।
चलें आँधियाँ हज़ार, टूटें ग़मों के पहाड़,
कोई अपनी जगह से न हिलायेगा।।

दुःख दर्द सभी मिट जाएँ,
पग चूमती रहें सफलताएँ।
लिए मन में लगन, हुआ धुन में मगन,
उस प्रभु की शरण में जो आयेगा।।

यह दुनिया है किसने बनाई,
कोई कारीगर देवे न दिखाई।
इसे पालता है कौन, व सम्भालता है कौन,
सभी उलझनों का भेद खुल जायेगा।।

तुम चाहो जो 'पथिक' सुख पाना,
कभी और किसी द्वार पर न जाना।
भरे प्रभु के भण्डार, धुआँधार लगातार,
चहुँ ओर से आनन्द बरसायेगा।।

न कुछ हंस के सीखा, न कुछ रोके सीखा है
जो कुछ जिसने सीखा है, किसी का होके सीखा है।।

भजन - 69

कल्याण मेरे इस जीवन का
भगवान न जाने कब होगा?

१-कल्याण मेरे इस जीवन का भगवान न जाने कब होगा?
भगवान न जाने कब होगा।
जिस से भय भ्रान्ति मिटा करती, वह ज्ञान न जाने कब होगा?
वह ज्ञान न जाने कब होगा।

२-जिस से निज दोष दिखा करते, पापों अपराधों से डरते,
उस सद्विवेक का मानव में, सम्मान न जाने कब होगा?
कल्याण न जाने कब होगा।

३-अच्छे दिन बीते जाते हैं, गुरुजन बहुविध समझाते हैं,
भोग स्थल से योग स्थल में, प्रस्थान न जाने कब होगा?
कल्याण न जाने कब होगा।

४-शीतलता जिस से आती है, सारी अशांति मिट जाती है,
वह नित्य प्राप्त है प्रेम सुधा, पर पान न जाने कब होगा?
कल्याण न जाने कब होगा।

५-वासना और चिन्ता मन में, फिर कुछ भी नहीं सताती है,
जिससे प्रभु जी तेरे दर्शन हों, वह ध्यान न जाने कब होगा?
कल्याण न जाने कब होगा।

हे प्रभु हम तुम से वर पावें, सकल जगत को आर्य बनावें,
पहले सुख सम्पत्ति फैलावें, आप बढ़े तब राज्य बढ़ावें।
वैर विघ्न को मार भगावें, प्रीति रीति की नीति चलावें।।

भजन - 70

जब ही मुख मन्दिर खोले, इक ओ३म् प्यारा, ओ३म् प्यारा बोले।

ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर, जो शरण प्रभु की आयेगा,
मैल मिटेगा सब मन का, अमृत ही भर जायेगा।
क्यों माटी में मोती रोले, इक ओ३म् प्यारा, ओ३म् प्यारा बोले।।
जब ही मुख मन्दिर.................

सूरज चाँद से देवता, झुकते उसके द्वारे,
फूल वृक्ष पत्ते प्यारे, चूमें चरण तिहारे।
अब तू ही उस का हो ले, इक ओ३म् प्यारा, ओ३म् प्यारा बोले।।
जब ही मुख मन्दिर.................

पत्ता-पत्ता ही उस का, पता हमें देता है,
जिस ने जैसा कर्म किया, फल वैसा लेता है।
उठ बीज पुण्य के बो ले, इक ओ३म् प्यारा, ओ३म् प्यारा बोले।।
जब ही मुख मन्दिर.................

मूर्ख मन तू होश में आ, भूल जा बातें बीती,
सेवा सत्संग में लग जा, जान ले बाज़ी जीती।
क्यों इधर-उधर मन डोले, इक ओ३म् प्यारा, ओ३म् प्यारा बोले।।
जब ही मुख मन्दिर.................

दीन कहे धनवन्त सुखी, धनवन्त कहै सुख राजा को भारी।।
राजा कहै चक्रवर्ती सुख, चक्रवर्ती कहे सुख इन्द्र को भारी।।
इन्द्र कहै विरंचि सुखी, विंरचि कहै सुख विष्णु को भारी।।
दासन दास कहै, तुलसी, हरि भक्ति बिना सब जगत दुःखारी।।

भजन - 71

(तर्ज : इस रेशमी पाज़ेब की झंकार के सदके)

संसार में जिस का प्रभु से प्यार न होगा।
उस का तो भवसागर में बेड़ा पार न होगा।।

सुबह और शाम जो उस के खुले दर पर न आएगा,
न मन में प्रेम लाएगा न मस्तक ही झुकाएगा।
ईश्वर के वरदानों का वह हकदार न होगा।।
संसार में जिसका..........

प्रभु तो हर समय खुशियाँ ज़माने पर लुटाता है,
मगर जो जाग जाता है वही तो लूट पाता है।
सोए का तो सपने में भी उद्धार न होगा।।
संसार में जिसका..........

प्रभु हर एक प्राणी को सदा देता ही देता है,
वह अपने दान के बदले कभी कुछ भी न लेता है।
दुनिया भर में ऐसा कहीं दरबार न होगा।
संसार में जिसका..........

वह दुनिया से निराला है ''पथिक'' तू जान ले इतना,
वह शक्ति सबसे ऊँची है अगर तू मान ले इतना।
तुझ को उसकी भक्ति से फिर इनकार न होगा।।
संसार में जिसका..........

परमात्मा का मुख्य नाम - ओ३म् है।

भजन - 72

(तर्ज : बिना बदरा के बिजुरिया कैसे चमके)

मेरे मन के गोपाल जपो ओम् ओम् ओम्।
कपट छल को निकाल जपो ओम् ओम् ओम्।।

महापुरुषों के संग चढ़े भक्ति का रंग,
बुरी संगत को त्याग यही जीने का ढंग।।
ज़रा कर के खयाल जपो ओम् ओम् ओम्........

सुनो दिल की आवाज़ खुले जीवन का राज़।
बड़ा सुन्दर संगीत मधुर श्वासों का साज़।।
बजे धड़कन की ताल जपो ओम् ओम् ओम्..........

पाँच वैरी विकार सदा करते प्रहार।
निडर हाथों में थाम रहो हरदम तैयार।।
प्रभु भक्ति की ढाल जपो ओम् ओम् ओम्........

करो नियमित आहार और मीठा व्योहार।
रहो नफ़रत से दूर करो जीवों से प्यार।।
यही ऋषियों की चाल जपो ओम् ओम् ओम्..........

यहाँ भोगों के भोग बिना भक्ति के रोग।
यमों-नियमों को पाल करो युक्ति से योग।।
कटें दुःख के जंजाल जपो ओम् ओम् ओम्.......

तुम्हें मन्ज़िल की चाह भरी काँटों से राह।
करो ईश्वर को याद चलो भर के उत्साह।।
'पथिक' दामन सम्भाल जपो ओम् ओम् ओम्..........

भजन - 73

तू कर बन्दगी और भजन धीरे-धीरे।
मिलेगी प्रभु की शरण धीरे-धीरे।।

दमन इन्द्रियों का तू करता चला जा,
फिर काबू में आयेगा मन धीरे-धीरे।
मिलेगा तुझे खोज जिस की है तुझ को,
धर्म से यह होगी लगन धीरे-धीरे।।

सुनें कान तेरे सदा वेद वाणी,
तू कर वेद वाणी मनन धीरे-धीरे।
कदम नेक राह पर तू रखता चला जा,
छूटेगा यह आवागमन धीरे-धीरे।।

तू सत्संग अमृत पिये जा पिये जा।
सुधर जाएगा यह जन्म धीरे-धीरे।।

भजन - 74

भगवान तुम्हारे मंदिर में हम तुम्हें रिझाने आये हैं।
वाणी में तनिक मिठास नहीं पर विनय सुनाने आये हैं।।

चरणामृत लेने को भगवन कोई पात्र भी मेरे पास नहीं।
इन दो नैनों के प्यालों में कुछ भीख डलाने आए हैं।।

तुझ से ले कर क्या भेंट करें, भगवान तुम्हारे चरणों में।
तुम दाता हो हम याचक हैं, सम्बन्ध जुड़ाने आए हैं।।

वस्तु कोई मेरे पास नहीं, हम खाली हाथ चले आए हैं।
हम रो-रो कर इन आँसुओं का, इक हार चढ़ाने आए हैं।।

भजन - 75

जिस दिल में तेरी याद नहीं, उस दिल का लगाना क्या होगा।
जिस गीत में तेरा नाभ नहीं, उस गीत का गाना क्या होगा।।
जिस दिल..................

सुख-दुःख के दोनों किनारों में, जीवन की नैया बहती है।
जिस घाट में सुख का लेश नहीं, उस घाट पर जाना क्या होगा।।
जिस दिल..................

दुनिया से छुपा कर पाप कर्म, मैं निशदिन करता रहता हूँ।
उस अंतर्यामी के आगे, पापों का छुपाना क्या होगा।।
जिस दिल..................

विषयों के विष का पान करूँ, लेता हूँ नाम अमृत का।
मरने की मुझ को चाह नहीं, जीने का बहाना क्या होगा।
जिस दिल..................

तू सब की सुनने वाला है, तेरे दर पर मैं आ न सका।
हँसते-हँसते कुछ कह न सका, रो-रो कर सुनाना क्या होगा।।
जिस दिल..................

तू बिगड़ी बनाने वाला है, बनती को बिगाड़ा है मैंने।
फिर अन्त समय की घड़ियों में, बिगड़ी का बनाना क्या होगा।।
जिस दिल..................

मैं सुख में तुमको भूल गया, दुःख में क्या मुँह ले कर आऊँ।
जो मूर्ख खुद को समझा न सका, उसको समझाना क्या होगा।।
जिस दिल..................

भजन - 76

प्रभु से ज़रा मन लगा के तो देखो,
यह चंचल बड़ा मन टिका के तो देखो।
नहीं दुःख रहेगा कभी गम न होगा,
यह भक्ति ज़रा आज़मा के तो देखो।।
प्रभु से.................

मुरादें तेरे मन की हों सारी पूरी,
मधुर ओम् नाम गा कर तो देखो।
ज़मी आसमां को उसी का सहारा,
यह चन्दा और सूरज निगाह से तो देखो।।
प्रभु से.................

हवन और सन्ध्या कभी तुम न भूलो,
यह दिन रात नियम बना के तो देखो।
जन्म-जन्म के मिटेंगे झमेले,
शरण में प्रभु की आ के तो देखो।।
प्रभु से.................

कभी गम न होगा कभी तुम पे गालिब।
प्रभु से प्रीति लगा के तो देखो।।
प्रभु से.................

किसी ने कहा कि ऐ राजा तेरा जलाल कितना है।
किसी ने कहा कि ऐ राजा तू धनवान कितना है।
किसी ने कहा कि ऐ राजा तेरा परिवार कितना है।
मगर कहा न किसी ने ऐसा कि प्रभु से प्यार कितना है।

भजन - 77

कर लो प्रभु गुणगान अवसर बीत रहा-२

सोचो कैसे आये जग में, चलना कैसे जीवन पथ में।
करना है उत्थान अवसर बीत रहा।। कर लो प्रभु..........

काम क्रोध से हमें बचाओ, टूटी नैया पार लगावो।
हो जाये कल्याण अवसर बीत रहा।। कर लो प्रभु..........

ईश्वर को ना कभी भुलावो, हर मुश्किल आसान बनावो।
तुम हो ऋषि सन्तान अवसर बीत रहा।। कर लो प्रभु........

तरना है गर भव-सागर से, शुद्ध बनों अन्दर बाहर से।
अमृत कर लो पान अवसर बीत रहा।। कर लो प्रभु..........

वेदों का सन्देश यही है, ईश्वर का आदेश यही है।
बनो नेक इन्सान अवसर बीत रहा।। कर लो प्रभु..........

प्रभु गुण गा

(तर्ज : मेरे मन की बीन बजा)

मन पगले, प्रभु गुण गा। मन पगले, प्रभु गुण गा।।
गुण गा, सुख पा, मुक्ति मार्ग पै जा। मन....

पता न जानूँ, कैसे पाऊँ? भक्ति बिना गुण कैसे गाऊँ?
कैसे उस में मन रमाऊँ? कोई यह दे समझा-मन...

नहीं बताया जा सकता है, उस का ठोर ठिकाना,
रंग लो मन को 'पाल' भक्ति से, ईश्वर को गर पाना।।
प्रभु-प्रेम का रंग चढ़ा। मन पगले, प्रभु-गुण गा।।

भजन - 78

वेला अमृत गया आलसी सो रहा बन अभागा।
साथी सारे जगे तू ना जागा।।

झोलियाँ भर रहे भाग्य वाले, लाखों पतितों नें जीवन संभाले।
रंक राजा बने भक्ति रस में सने कष्ट भागा। साथी सारं जगे.....

कर्म उत्तम थे नरतन जो पाया, आलसी बन के हीरा लुटाया।
उलटी हो गई मति कर के अपनी क्षति रोने लगा।। साथी सारे जगे..

धर्म वेदों का देखा न भाला, वेला अमृत गया न संभाला।
सौदा घाटे का कर, हाथ माथे पे धर रोने लगा।। साथी सारे जगे....

'देश' तूने न अब भी विचारा, सर से ऋषियों का ऋण न उतारा।
हंस का रूप था, गदला पानी पिया बन के कागा।। साथी सारे जगे...

भजन - 79

आदत बुरी सुधार ले, बस हो गया भजन।
मन की तरंग मोड़ ले, बस हो गया भजन।।

आया कहाँ से कौन तू, और जाये गा कहाँ?
इतना ही तू विचार ले, बस हो गया भजन।।

दुनिया तुझे बुरा कहे, तू शेर बन के रह।
वाणी का स्वर सुधार ले, बस हो गया भजन।।

है दोष तेरी दृष्टि में, दुनिया निहारता।
समता का अञ्जन डाल ले, बस हो गया भजन।।

भजन - 80

तेरी याद जब से भुलाई हुई है,
मुसीबत उसी दिन से आई हुई है।
मलिन आत्मा रात दिन रो रही है,
बुराइयों की दुनिया बसाई हुई है।।

हैं अज्ञानता वश उसे दोष देते,
जो बोया था उस की कटाई हुई है।
मैं बेचैन व्याकुल मुसीबत में सदा हूँ,
तू ही एक मेरा सहाई प्रभु है।।

सिवा तेरे है कौन मेरी सुने जो,
यह दुनिया मेरी आज़माई हुई है।
जो सुनता है सब की, वह मेरी सुनेगा,
तेरे दर पे धूनी रमाई हुई है।।

नहीं 'देश' का साथी दुनिया में कोई,
तेरे आगे झोली फैलाई हुई है।।

आप ही भाग्य विधाता

अपने विचारों पर ध्यान दीजिए, ये आपके शब्द बन जाते हैं।
अपने शब्दों पर ध्यान दीजिए, ये आपके एक्शन बन जाते हैं।
अपने एक्शन पर ध्यान दीजिए, ये आपकी आदत बन जाती है।
अपनी आदतों पर ध्यान दीजिए, ये आपका चरित्र बन जाता है।
अपने चरित्र पर ध्यान दीजिए, ये आपका भाग्य बन जाता है।

भजन - 81

मत बोलो वचन कठोर, मत बोलो वचन कठोर,
कटु वचनों से कहीं प्रेम की टूट न जाए डोर।।
मत बोलो वचन कठोर.........

मुख से जो निकले कटु वचन यह ज़हर भरे हैं तीर,
रुकते नहीं ये और जाते हैं पल में कलेजा चीर।
लगती है इन से आग तो जग में मच जाता है शोर।।
मत बोलो वचन कठोर.........

सिर्फ एक ही कटु वचन से खेल बिगड़ता सारा,
मधुर-वचन से लेकिन पल में बहे प्रेम की धारा।
कटु मृत्यु की ओर चले और मधु अमृत की ओर।।
मत बोलो वचन कठोर.........

इस वाणी से ही बनते हैं अपने और पराए,
मीठी वाणी बोल के क्यों न जन-जन को अपनाए।
जैसे सब का मन हर लेते हैं कोयल और मोर।।
मत बोलो वचन कठोर.........

मधुर-वचन तो बिछड़े हुओं को गले मिला सकता है,
कटु वचन निज खून भी अपना शत्रु बना सकता है।
कटु वचन से 'पथिक' मुसीबत बने घटा घनघोर।।
मत बोलो वचन कठोर.........

न मीठा बन कि चट कर जाएं भूखे।
न कड़ुआ बन कि जो चखे सो थूके।।

भजन - 82

अजब हैरान हूँ भगवन्! तुम्हें क्यों कर रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

करें किस तौर आवाह्न, कि तू मौजूद हो हर जा।
निरादर है बुलाने को, अगर घण्टी बजाऊँ मैं।।

तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान पर भगवान को, क्यों कर चढ़ाऊँ मैं।।

लगाना भोग कुछ तुम को, यह एक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को, उसे क्यों कर खिलाऊँ मैं।।

तुम्हारी ज्योति से रोशन, हैं सूरज चाँद और तारे।
महाअन्धेर है स्वामिन, तुम्हें दीपक दिखाऊँ मैं।।

भुजायें हैं न गर्दन है, न सीना है न पेशानी।
तुम हो निर्लेप नारायण! कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं।।

भजन - 83

मैया बरस-बरस रसवारी!
बून्द-बून्द पर तेरी जाऊँ, बार-बार बलिहारी।।

नदी सरोवर सागर बरसे, लागी झरियाँ भारी।
मेरे आँगन क्यों न बरसे, मैं क्या बात बिगारी?

तू बरसे मैं जी भर नहाऊँ, दोनों भुजा पसारी।
नयन मून्द कर नाचूँ-गाऊँ, अपना-आप विसारी।।

मैया बरस-बरस रसवारी!

भजन - 84

ज्ञान का सागर, चार वेद यह वाणी है भगवान की।
इसी से मिलती सब सामग्री, जीवन के कल्याण की।।

सब सच्ची विद्यायें जग में, प्रकट वेद से होती हैं,
यहीं से जा कर सब नदियाँ, पृथ्वी का आँगन धोती हैं।
उसी को जीवन सार मिला, जिस ने इसकी पहचान की।।
इसी से मिलती..........

सृष्टि एक अदालत है, और न्यायधीश विधाता है,
यहाँ पे ही हर प्राणी अपने, कर्मों का फल पाता है।
वेद के अन्दर सब रचना है, विधि के अमर विधान की।।
इसी से मिलती..........

वेद को पढ़ना और पढ़ाना, परम धर्म कहलाता है,
सुनना और सुनाना भी, कर्त्तव्य बताया जाता है।
वेद ही असली दौलत है, दुनिया के हर इन्सान की।।
इसी से मिलती..........

धन्य-धन्य भारत भूमि, जिस पर वेदों का गान हुआ,
वेद का अमृत पिया पिलाया, तब यह देश महान हुआ।
'पथिक' पुण्य भूमि है यह तो, ऋषियों के सन्तान की।।
इसी से मिलती..........

दुनिया सारी घूम ली, कहीं पाया नहीं प्रकाश।
दूर हुआ अंधेरा तब, जब पढ़ा सत्यार्थ प्रकाश।।

भजन - 85

मैं नहीं मेरा नहीं यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है वह धन किसी का है दिया।।

देने वाले ने दिया वह भी दिया किस शान से,
मेरा है यह लेने वाला कह उठा अभिमान से।
मैं मेरा यह कहने वाला मन किसी का है दिया।। मैं नहीं....

जो मिला है वह हमेशा पास रह सकता नहीं,
कब बिछुड़ जाये यह कोई राज़ कह सकता नहीं।
ज़िन्दगानी का खिला मधुवन किसी का है दिया।। मैं नहीं....

जग की सेवा खोज अपनी, प्रीति उन से कीजिये,
ज़िन्दगी का राज़ है यह जान कर जी लीजिये,
साधना की राह पर साधन किसी का है दिया।। मैं नहीं....

खिलौना माटी का

तूने खूब रचा भगवान, खिलौना माटी का।
जिसे कोई न सका पहचान, खिलौना माटी का।।
पैर दिये तीरथ करने को, हाथ दिये कर दान। खिलोना माटी का..
कान दिये सुन वेद वाणी को, आँख दिये पढ़ ज्ञान। खिलौना माटी का..
नाक दिया मुखड़े की शोभा, कर नित प्राणायाम। खिलौना माटी का..
मुख दिया बोल ओ३म् नाम को, संध्या कर सुबह शाम। खिलौना माटी का..
लाख मिटे इस माटी अन्दर, राजा रंक मिटे इस अन्दर।
वहां रहा न नाम निशान, खिलौना माटी का।।

भजन - 86

भगवद् भजन की ज्योति, हृदय में तू जगा ले।
दुनिया की उलझनों से, मन को ज़रा हटा ले।।

हासिल यदि है करना, भगवान का सखापन।
बन आप पहले उस का, अपना उसे बना ले।।

अभ्यास करते-करते, धो आत्मा के मल को।
सागर आनन्द के में, जी भर के फिर नहा ले।।

बातों से काम पूरा, कोई कभी न होता।
वाणी से जो कहा है, कर के उसे दिखा ले।।

वेदों के ज्ञान द्वारा, दीदार कर प्रभु का।
दुई का भाव दिल से, अपने ज़रा हटा ले।।

ये तो नगद का सौदा, ए "देश" जान लेना।
इस हाथ से तू धर दे, उस हाथ से उठा ले।।

कण्ठ से नीचे, दोनों स्तनों के बीच में और उदर के ऊपर जो हृदयदेश है, जिस को ब्रह्मपुर, अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं, उस के बीच में जो गर्त है, उस में कमल के आकारवत् वेश्म, अर्थात् अवकाशरूप एक स्थान है, इसके बीच में जो सर्वशक्तिमान परमात्मा बाहर-भीतर एकरस हो कर भर रहा है। वह आनन्दस्वरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है, दूसरा उस के मिलने का कोई उत्तम स्थान वा मार्ग नहीं है।

भजन - 87

सदा कर साधना साधक, अगर ईश्वर को पाना है।
न कर तू पाप का चिन्तन, अगर जीवन बनाना है।।

सदा सत्संग में जाओ, जहाँ भगवद्-भजन होता।
बुराई से छुड़ा देता, प्रभु भक्ति का गाना है।।

करूँ भक्ति, यह इच्छा है, नहीं लेकिन समय मिलता।
यह झूठी बात है प्यारे, यह सब तेरा बहाना है।।

अगर पापी रहा तो, मूँह उसे कैसे दिखायेगा?
भुला मत जीव मर कर, ईश्वर के पास जाना है।।

प्रभु की दिव्य वाणी वेद के उपदेश हितकारी।
हमें श्रद्धा भरे मन से, सदा सुनना सुनाना है।।

महापुरुषों के जीवन से, यही शिक्षा हमें मिलती।
स्वजीवन देश-रक्षा, धर्म पालन में लगाना है।।

करो मत चित्र की पूजा, चरित्र पात्र पूजा का।
हमें हे "पाल" सच्चे आर्य, बन जीवन बिताना है।।

तुम अपनी सन्तान को धन दो या न दो, धन देने से पहले उत्तम संस्कार, उत्तम शिक्षा और उत्तम विद्या ज़रूर देना नहीं तो तुम्हारा ये धन बच्चों को बिगाड़ने के काम आयेगा, बनाने के काम नहीं आयेगा। तुम्हारी सन्तान धन से ही बिगड़ जायेगी।

भजन - 88

ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है।
मानव तू परिवर्तन से, काहे को डरता है।।

जब से दुनिया बनी है, तब से रोज़ बदलती है,
जो शै आज यहाँ है, कल वो आगे चलती है।
देख के अदला-बदली तू, क्यों आहें भरता है।।
मानव तू परिवर्तन से....................

दुःख सुख आते जाते रहते, सब के जीवन में,
पतझड़ और बहारें दोनों, जैसे गुलशन में।
चढ़ता है तूफान कभी और कभी उतरता है।।
मानव तू परिवर्तन से....................

कितनी लम्बी रात हो फिर भी, दिन तो आयेगा,
जल में कमल खिलेगा फिर से, वो मुस्काएगा।
देता है जो कष्ट वही, कष्टों को हरता है।।
मानव तू परिवर्तन से....................

वो ही दाना फलता है, जो ख़ाक में मिल जाये,
सहे "पथिक" जो काँटें वो ही मंजिल अपनी पाये।
भट्टी में पड़ कर सोने का, रंग निखरता है।।
मानव तू परिवर्तन से....................

तीनों कालों का जिसे पूरा यथावत् ज्ञान है।
सृष्टि सारी में प्रतिष्ठित है वही भगवान है।।
है स्वयं सुख रूप वह और मुक्ति दाता नाम है।
ऐसे महानतम ब्रह्म को कोटिशः मम प्रणाम है।।

भजन - 89

ज़रा तो इतना बता दो भगवन्, लगन ये कैसी लगा रहे हो।
मुझी में रह कर मुझी से मेरी, यह खोज कैसी करा रहे हो।।
हृदय भी तुम हो, तुम ही हो प्रियतम, प्रेम भी तुम हो, तुम ही हो प्रेमी।
पुकारता मन तुम ही को क्यों है, तुम ही जो मन में समा रहे हो।।
सीप भी तुम हो, तुम्हीं हो मोती, दीप भी तुम हो, तुम ही हो ज्योति।
तुम्हीं को ले कर, तुम्हीं को ढूँढूं, नयी यह लीला बता रहे हो।।
मन भी तुम हो, तुम्हीं हो रचना, संगीत तुम हो, तुम्हीं हो रसना।
स्तुति तुम्हारी तुम्हीं से गाऊँ, नयी यह रीति बता रहे हो।।
कर्म भी तुम हो, तुम्हीं हो कर्ता, धर्म भी तुम हो, तुम्हीं हो धर्ता।
निमित कारण मुझे बना कर, यह नाच कैसा नचा रहे हो।।

भजन - 90

प्रभु तेरे चरणों में हम सब आए।
आए जी आए शरण तेरी आए।।
तेरे ख़ज़ाने नहीं होते कम, मुख खोले क्यूँ,
क्या माँगे हम। बिन माँगे तू रत्न बरसाए।। प्रभु तेरे...........
कौन किसी का बिगाड़े जगत् में,
रहता है सब के घट-घट में।
मन अपने को शुद्ध बनाए।। प्रभु तेरे...........
टूटे हुओं को बाँध रहा है
फूल वो घर-घर बाँट रहा है।
ज्योति तू परिवारों में जगाए।। प्रभु तेरे..........
चिन्तन में मन लगे मेरे ईश्वर,
प्रार्थना है यह, सदा मेरे ईश्वर।
धर्म 'विजय' सुख सम्पति आए।। प्रभु तेरे.........

भजन - 91

मांवां ठण्डियां छांवां, भगवान दियां रचनावां।
एहनां छांवां हेठ कदे नहीं, लगदियां गर्म हवांवां।।
मांवां ठण्डियां छांवां.........

माँ ममता दी मूरत है, स्वर्ग तो सोहणी सूरत है,
दुःख बच्चेयां दे आप हरे, माँ दियां रीसां कौन करे।
माँ वरगा कोई होर नहीं, माँ दिल दी कमजोर नहीं,
माँ दे दिल दी थाह न पाई, नहरां ते दरयांवां।।
मांवां ठण्डियां छांवां.........

सर्दी गर्मी सहदीं माँ, भूखी प्यासी रैहंदी माँ,
राती नींदर औंदी नहीं, निंदर विच वी सौंदी नहीं।
मुख बच्चेयां दा वेख लवे, माँ दे कलेजे ठण्ड पवे,
सब दुःख अपने सिर ते सैह के, कर दए दूर बलांवां।।
मांवां ठण्डियां छांवां.........

तरल तरंगां प्यार दियां, दिल विच ठाठां मारदियां,
पल-पल ते सुखदाई ए, हर बन्दा क़रज़ाई ए।
माँ ऐनी उपकारी ए, धरती नालों भारी ए,
माँ दिया सिफ्तां 'पथिक' करे, कीह एह रब दी सरनांवां।
मांवां ठण्डियां छांवां.........

माँ की मार में भी प्यार है।
संसार के प्यार में भी मार है।।

भजन - 92

सोहणे लगदे ने महल चौबारे, जित्थे सत्संग लगदा।
ओहथे आवन भक्त प्यारे, जित्थे सत्संग लगदा।।

जिस घर दे विच सत्संग लगदा, पाप दरिद्र ओथों भजदा।
पाप वी करन किनारा, जित्थे सत्संग लगदा।।

कण-कण उस दा होवे पवित्र, जो आवे बन जावे मित्र।
सब ले रहे प्रेम हुलारे, जित्थे सत्संग लगदा।।

सत्संग दे विच अमृत बरसे, प्रभु मिलन नू आत्मा तरसे।
शुद्ध हृदय ओम् उचारे, जित्थे सत्संग लगदा।।

जीवन का आधार है सत्संग, मानवता का सार है सत्संग।
डूब रहे को तारे, जित्थे सत्संग लगदा।।

जो भी बने सत्संग का प्यारा, सब दुःख भ्रम मिटावे सारा।
वह पहुँचे ब्रह्म द्वारे, जित्थे सत्संग लगदा।।

भजन - 93

बहे सत्संग की गंगा अरे मन चल नहा आयें।
बुझी ज्योति जो जीवन की उसे फिर से जगा लायें।।

यही वेला है कर ले पान प्यारे ज्ञान अमृत का।
लगा है धर्म का मेला अरे मन चल दिखा लायें।।

तू ही योद्धा, तू ही योगी, तू ही है रूप संतो का।
जिसे तू भूल बैठा है, उसे फिर से दिखा लायें।।

भटकता फिर रहा दर-दर धराया नाम क्यों चंचल।
करे विश्वास जग तेरा, तुझे ऐसा बना लायें।।

भजन - 94

मिल के सत्संग लाया, प्रभु जी तेरे भगतां ने।
मन मंदिर चमकाया, प्रभु जी तेरे भगतां ने।।

खिड़ियाँ प्यार दियाँ गुलजाराँ,
खड़कन लगियाँ दिल दियाँ ताराँ।
ओ३म् दा नाद बजाया, प्रभु जी तेरे भगतां ने।।

ओ३म् प्रभु का नाम है प्यारा,
खिल उठेया है तन-मन सारा।
सब नूँ मस्त बनाया, प्रभु जी तेरे भगतां ने।।

ओ३म् नाम दी चढ़ी खुमारी,
मिट्ठी-मिट्ठी प्यारी-प्यारी।
ऐसा रंग जमाया, प्रभु जी तेरे भगतां ने।।

हर चेहरे ते रौनक आई,
दिल-दिल ते हरियाली छाई।
प्यार दा रस बरसाया, प्रभु जी तेरे भगतां ने।।

बैठे दूरों-दूरों आ के,
मन विच तेरा ध्यान लगा के।
भगती दा फल पाया, प्रभु जी तेरे भगतां ने।।

'पथिक' हो गया दूर हनेरा,
जगमग होया चार चुफेरा।
जीवन सफल बनाया, प्रभु जी तेरे भगतां ने।।

भजन - 95

सत्संग वाली नगरी चल रे मना।
पी सद्ज्ञान का जल रे मना।। सत्संग वाली नगरी..........

इस नगरी में ज्ञान की गंगा, जो भी नहाये हो जाये चंगा।
मल मल से हो निर्मल रे मना।। सत्संग वाली नगरी..........

सत्संग के हैं अजब नज़ारे, बहुत सुहाने बहुत ही प्यारे।
पा सुख शान्ति का फल रे मना।। सत्संग वाली नगरी.........

सत्संग का यह असर हुआ है, बाहर सब कुछ बदल गया है।
तू अन्दर से बदल रे मना।। सत्संग वाली नगरी..........

सत्संग का यह फल है निराला, मन मन्दिर में होवे उजाला।
कर जीवन को सफल रे मना।। सत्संग वाली नगरी..........

किस्मत का चमका है सितारा, उदय हुआ है भाग्य तुम्हारा।
अवसर जाये न निकल रे मना।। सत्संग वाली नगरी..........

चल के "पथिक" शुभ कर्म कमा ले, इस अवसर से लाभ उठा ले।
देर न कर इक पल रे मना।। सत्संग वाली नगरी..........

जैसा संग – वैसा रंग

ज्ञान बढ़े गुणवान की संगति, ध्यान बढ़े तपसी संग कीने।
मोह बढ़े परिवार की संगति, लोभ बढ़े धन में चित्त दीने।।
क्रोध बढ़े नर मूढ की संगति, काम बढ़े त्रिया संग कीने।
बुद्धि विचार विवेक बढ़े, संत सज्जन संगति कीने।।

भजन - 96

आनन्द प्रभु का पाने को, जो तप को नित अपनाते हैं।
शारीरिक सुख उपभोग करें, वे मन में शान्ति पाते हैं।।

आदित्य तपे तब वर्षा हो, जीवन सब प्राणी पाते हैं,
योगीजन तप के बल से ही, निज मन के दोष मिटाते हैं।
वाणी का संयम नित्य करें, वे सज्जन सौम्य कहाते हैं,
जो तप की भट्टी में तपते, वे कुन्दन आभा पाते हैं।।

जाड़ा हो या गर्मी हो, जो कभी नहीं घबराते हैं,
चाहे मान मिले-अपमान मिले, नहीं मन में मैल जमाते हैं।
भारी हानि या लाभ रहे, नहीं लालच गले लगाते हैं,
जीत जाये या हार मिले, वे हर्ष न शोक मनाते हैं।।

जो राग-द्वेष पर निन्दा को, नित ध्यान से दूर भगाते हैं,
प्रीति की रीति चला जग में, मिल सब को गले लगाते हैं।
मानो घर उन का तपोवन है, जो मोह की मोम बनाते हैं,
आनन्द कृपा तब मिलती है, गृह त्याग तपोवन जाते हैं।।

विषयों के विष से दूर रहें, मन से ईश्वर गुण गाते हैं,
ऐसे नर-नारी सदाचारी, सचरित्र सुगन्ध लुटाते हैं।
त्यागी व तपस्वी शीलवान, जीवन को सफ़ल बनाते हैं,
तप की महिमा को 'दिव्य' मान, ईश्वर प्रेमी बन जाते हैं।।

शान्ति के समान कोई तप नहीं, संतोष से बढ़ कर कोई सुख नहीं, तृष्णा से बढ़ कर कोई व्याधि नहीं और दया के समान कोई धर्म नहीं।

भजन - 97

यज्ञ सफल हो जाए मेरे भगवन्, यज्ञ सफल हो जाए।।

श्रद्धा से है यज्ञ रचाया, वेदि को भी खूब सजाया।
पवन शुद्ध हो जाए मेरे भगवन्, यज्ञ सफल हो जाए।।

घृत सामग्री शुद्ध चढ़ाया, मेवा चंदन मिष्ट मिलाया।
रोग शोक मिट जाए मेरे भगवन्, यज्ञ सफल हो जाए।।

यज्ञ सुगंधि जहाँ भी जाए, जीव भाग को सुख पहुँचाए।
सब के मन को भाए मेरे भगवन्, यज्ञ सफल हो जाए।।

श्रेष्ठ कर्म है यज्ञ बताया, यथा शक्ति में जो कर पाया।
ब्रह्मार्पण हो जाए मेरे भगवन्, यज्ञ सफल हो जाए।।

राग द्वेश का दोष मिटा दो, प्रेम भाव का कोष बढ़ा दो।
यज्ञ योग बन जाए मेरे भगवन्, यज्ञ सफल हो जाए।।

यज्ञ यज्ञपति को मिल जाए, पूर्ण कामना तब हो जाए।
दिव्याशीष दिलाए मेरे भगवन्, यज्ञ सफल हो जाए।।

हर दिन इस तरह बिताओ की रात को चैन की नींद सो सको और हर रात इस तरह बिताओ कि जागो तो चेहरे पर ताज़गी हो। जवानी को इस तरह बिताओ कि बुढ़ापे में हाथ न फैलाना पड़े। बुढ़ापे को इस तरह बिताओ कि किसी से कुछ कामना न करनी पड़ जाये।

भजन - 98

ओ३म् दी बोलो जय-जयकार, जी बधाई होवे,
फुल्लां दी आई ए बहार, जी बधाई होवे।
खिड़या ए चम्बा गुलज़ार जी बधाई होवे।।

पहिली बधाई उस प्रभु जी नूं होवे।
जिन्हाँ ने रचया ए संसार, जी बधाई होवे।।

दूजी बधाई ऋषि दयानन्द नूं होवे।
जिन्हों ने कीता वेद प्रचार, जी बधाई होवे।।

तीजी बधाई माता-पिता नूं होवे।
जिन्हाँ रचाया सुन्दर बाग, जी बधाई होवे।।

चौथी बधाई दादी-दादा नूं होवे।
जिन्हाँ दा वधया ए परिवार, जी बधाई होवे।।

पंजवी बधाई भैना-भाबियाँ नूं होवे।
जिन्हाँ दी खुशी है अपार, जी बधाई होवे।।

अगली बधाई सारी संगत नूं होवे।
जिन्हां ने गाया मंगलाचार, जी बधाई होवे।।

सच्चा मानव

त्याग-तपस्या से पवित्र-परिपुष्ट हुआ जिस का 'तन' है,
भद्र-भावना-भरा स्नेह-संयुक्त शुद्ध जिस का 'मन' है।
होता व्यय नित-प्रति परहित में, जिस का शुचि संचित 'धन' है,
वही श्रेष्ठ-सच्चा 'मानव' है, धन्य उसी का 'जीवन' है।

भजन - 99

विश्वपति का ध्यान धर, मंगल गाने गाइये।
परम पिता का आज मिल, शुभ वरदान पाइये।।

बोलो सभी है धन्यवाद, प्यारे, प्रभु जगदीश का।
परम पवित्र ओ३म् को, अन्तः करण में ध्याइये।।

यदि है कामना कि हो, सदा सुखों की प्राप्ति।
सच्चिदानन्द ब्रह्म की गोद में बैठ जाइये।।

छाई जहाँ प्रसन्नता, हर्षित सभी के हैं हृदय।
हुआ है संस्कार जो, उस की खुशी मनाइये।।

जिस ने दिखाई यह घड़ी, उल्लास व खुशी भरी।
उसी के धन्यवाद में, अपना मन लगाइये।।

प्रेम भरी ले भावना, 'पाल' सभी परिवार को
देते हुये बधाइयाँ सुन्दर गीत गाइये।।

आशीर्वाद

भगवान इस परिवार को, सुख का सदा वरदान दो,
ज्ञान की गंगा बहा कर, शुद्ध वैदिक ज्ञान दो।
निरोग हो कर सब जियें, शतवर्ष आयुष्मान हों,
धन धान्य से पूरित सदा, यशयुक्त कीर्तिमान हो।
पुत्र पौत्रादिक सभी बलवान हों, श्रीमान हों,
विद्वान हों, मतिमान हों, धर्मात्मा धीमान हों।

भजन - 100

सदा फूलता फलता भगवन्, यह याजक-परिवार रहे।
रहे प्यार जो किसी से इन का, सदा आप से प्यार रहे।।

मिथ्या कर अभिमान कभी न, जीवन का अपमान करें,
देवजनों की सेवा कर के, वेदामृत का पान करें।
प्रभु आप की आज्ञा पालन, करता हर नर-नार रहे।।

मिले सम्पदा जो भी इन को, उस को मानें आप की,
घड़ी न आने पावे इन पे, कोई भी सन्ताप की।
यही कामना प्रभु आप से, कर हम बारम्बार रहे।। सदा......

दुनियादारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हों,
सेवा के सांचे में सब ने, जीवन अपने ढाले हों।
बच्चा-बच्चा परिवार का, बन कर श्रवण कुमार रहे।।

बने रहें सन्तोषी सारे, जीवन के हर काल में,
हाल-चाल हो कैसा इन का, रहे मस्त हर हाल में।
ताकि 'देश' बसाया इन का, सुखदायी संसार रहे।। सदा......

शुभ कामना

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें बल पाय चढ़ें नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें, ऋजु पन्थ गहें, परिवार कहें, वसुधा भर को।
ध्रुव धर्म धरें पर-दुःख हरें, तन त्याग करें, भव सागर को।
दिन फेर पिता, वर दे सविता, हम आर्य करें, जगती भर को।

भजन - 101

धन्यवाद प्रभु आप का प्यार भरा दिन आया है।
हम सब को यह आज का शुभ अवसर दिखलाया है।।
धन्यवाद प्रभु आप का............

हे परमेश्वर कृपा आप की सचमुच बड़ी निराली है,
मन उपवन में खुशियाँ बरसीं झूमी डाली डाली है।
चेहरों पर हैं रौनकें सब का मन हर्षाया है।।
धन्यवाद प्रभु आप का............

सब मिल कर सत्संग में बैठे भाग्य सभी के जागे हैं,
सुनी प्रभु के नाम की चर्चा मन के संशय भागे हैं।
नर जीवन के सार को वेदों ने समझाया है।।
धन्यवाद प्रभु आप का............

गूँज रही है अमृत वाणी नर-नारी के कानों में,
धर्म-कर्म में लग्न बढ़ी और रूचि वेद विद्वानों में।
ऋषियों के सन्देश को जीवन में अपनाया है।।
धन्यवाद प्रभु आप का............

मिल कर तेरी महिमा गाएँ सदा करो कल्याण प्रभु,
जगे दिलों में श्रद्धा भक्ति ऐसा दो वरदान प्रभु।
'पथिक' तेरे दरबार में सब ने शीश झुकाया है।।
धन्यवाद प्रभु आप का............

प्रभु से प्रार्थना, हृदय से की, स्वीकार होती है।
मुश्किल यह है कि यह, बड़ी मुश्किल से होती है।।

भजन - 102

नित नवीयाँ नित नवीयाँ महाराज खुशियाँ नित नवीयाँ।
अन्दर खुशियाँ बाहर खुशियाँ,
खुशियाँ विच परिवार, खुशियाँ नित नवीयाँ।
जम-जम खुशियाँ हरिया होवन,
फले फूले परिवार, खुशियाँ नित नवीयाँ।
ब्रह्मा, विष्णु आयु देवन,
उमर होवे सौ साल, खुशियाँ नित नवीयाँ।
माता-पिता दा आज्ञाकारी,
सदा सुहागन इस दी नारी।
रब लावे ऐनू भाग, खुशियाँ नित नवीयाँ।

भजन - 103

चिर जीवे चिर जीवे यह लाल बालक चिर जीवे।
माता-पिता का आज्ञाकारी, अच्छी चले यह चाल। बालक...
जाति कुटुम्ब का हो हितकारी, देश से करे प्यार। बालक...
विद्या के भूषण को धारे, करे वेद प्रचार। बालक...
नाम अपने को रोशन करे यह, कर के सत्य व्यवहार। बालक.
देओ बधाई गाओ बधाई, गावें मंगलाचार। बालक...
हम सब की आशीष यही है, राजी रखे करतार। बालक...

भजन - 104

जन्म दिन आज फिर आया, बधाई हो बधाई हो।
खुशी का रंग है छाया, बधाई हो बधाई हो।।

हवन से है सुगन्धित, हो गया वातावरण सारा,
ऋचायें वेद की बोली गई, गूँजा गगन सारा।
यह दिन ईश्वर ने दिखलाया, बधाई हो बधाई हो।।

कहीं बैठे पड़ोसी हैं, कहीं बैठे हैं सम्बन्धी,
कहीं पर कहकहे उठते, कहीं उठती है सुगन्धी।
सभी ने प्रेम से गाया, बधाई हो बधाई।।

जिधर देखो उधर मिलते, नज़ारे ही नज़ारे हैं,
दिलों में फूट निकले आज, खुशियों के फव्वारें हैं।
बाग परिवार लहराया, बधाई हो बधाई हो।।

जिए सौ साल तू राजा, रहे खुशहाल जीवन में,
बहारें झूम के आयें, तुम्हारे दिल के आँगन में।
रहे मन खूब हर्षाया, बधाई हो बधाई हो।।

करें विद्या ग्रहण इतनी, कि जग में नाम हो रोशन,
जहाँ में चाँद सूरज की, तरह हर काम हो रोशन।
बुज़ुर्गों का रहे साया, बधाई हो बधाई हो।।

हृदय अन्दर सच्चाई हो, मधुर वाणी सदा बोलें,
धर्म की राह पर चलते, हुए तिलभर नहीं डोलें।
"पथिक" निरोग हो काया, बधाई हो बधाई हो।।

हम कौन सा उपाय करें उस जहान में।
मिल जाये फिर बहार कहीं गुलिस्तान में।।

भजन - 105

वस्त्र धारण करो, दुःख निवारण करो, तन के सारे,
पुत्र माता-पिता के दुलारे।।

शुभ दिवस ये प्रभु ने दिखाया,
प्रथम चोला ये धारण कराया।
तन सुशोभित लगे, ज्ञान ज्योति जगे, वस्त्र धारे,
पुत्र माता-पिता के दुलारे।।

सौ वर्षों की आयु बिताये,
सत्यपथ पर चले यश कमाये।
रहे निरोग तन, विकसे जैसे सुमन, चाँद तारे,
पुत्र माता-पिता के दुलारे।।

भजन - 106

कैसा यह शुभ दिन आया, जी बधाई होवे।
सुन्दर यह यज्ञ रचाया, जी बधाई होवे।।

आये हैं सब बहिन भाई, है अति शोभा पाई।
हर सू आनन्द है छाया, जी बधाई होवे।।

सब ने सत्संग में आ कर, ईश्वर का नाम ध्या कर।
जीवन को सफल बनाया, जी बधाई होवे।।

कैसा यह दृश्य प्यारा, बहती है प्रेम की धारा।
सब ने है मंगल गाया, जी बधाई होवे।।

ऐसा दिन नित-नित आवे, घर-घर में यज्ञ रचायें।
जैसे यह शुभ दिन आया, जी बधाई होवे।।

भजन - 107

सुन्दर सुहाना गृह प्रवेश, जी बधाई होवे।
घर वाले हस्दे रैहण हमेश, जी बधाई होवे।।

वेदां दे मन्त्र बोले, खुशियाँ दे बूहे खोले।
मिलिया ए ऋषियाँ दा सन्देश, जी बधाई होवे।।

श्रद्धा नाल यज्ञ रचाया, जलवायु शुद्ध बनाया।
बचेया दुरगन्धि दा नां लेश, जी बधाई होवे।।

सुखाँ दी वर्षा होवे, दुःखाँ दे पूर डूबो ले।
मिट जावन सारे कष्ट क्लेश, जी बधाई होवे।।

मेहरां दी चादर ताने, रखे भरपूर खज़ाने।
सब जग दा पालनहार महेश, जी बधाई होवे।।

चल के सत्संगी आवन, ईश्वर की महिमा गावन।
होवन विद्वाना दे उपदेश, जी बधाई होवे।।

जेहड़ा वी याचक आवे, दर से न खाली जावे।
"पथिक" संन्यासी ते दरवेश, जी बधाई होवे।।

सत्संगी चार प्रकार के होते हैं।

१. ठाठ के २. आठ के ३. खाट के ४. तीन सौ साठ के

ठाठ के वे हैं – जो प्रतिदिन सत्संग में जाते हैं। आठ के वे हैं–जो आठवें दिन मुँह दिखाते हैं। खाट के वे हैं–जो दिखाने के लिए कभी–कभी आ जाते हैं। तीन सौ साठ के वे हैं – जो वार्षिक उत्सव में ही सम्मलित होते हैं।

भजन - 108

राम जी के गीत गाओ, राम–नवमी आ गई।
प्रेम की गंगा बहाओ, राम–नवमी आ गई।।

राम जी का जन्म हुआ, देश भारतवर्ष में,
नाच उठे लोग सभी, मग्न हुए हर्ष में।
झूम के खुशियाँ मनाओ, राम नवमी आ गई।।

भूल के माता–पिता का, हुकम नहीं टालना,
जान की बाज़ी लगा के, वचन सदा पालना।
धर्म की बातें सुनाओ, राम नवमी आ गई।।

सभ्य हो विनम्र हो, गुरुजनों का प्यार लो,
राम के गुणों से अपने, जन्म को सुधार लो।
कौम को ऊँचा उठाओ, राम नवमी आ गई।।

हर किसी इन्सान से, इन्साफ किया राम ने,
पाप को बढ़ने नहीं दिया, नज़र के सामने।
आप भी कुछ करके दिखाओ, राम नवमी आ गई।।

अपनी जन्म भूमि का अपमान सहेंगे नहीं,
उलझनों में देख के, खामोश रहेंगे नहीं।
राम की सौगन्ध खाओ, राम नवमी आ गई।।

मिल के रहो मिल के चलो, मिल के ही विचार लो,
जो बिछुड़ गए हैं उन्हें, प्यार से पुकार लो।
"पथिक" दीवारें गिराओ, राम नवमी आ गई।।

राम तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।।

भजन - 109

धर्म दर्शन संस्कृति की, वह अमर जागीर था।
कृष्ण भारतवर्ष की, जागी हुई तकदीर था।।

दौड़ नंगे पग, सुदामा से मिला दिल खोल कर।
द्वेष के वातावरण में, प्रेम की जंजीर था।।

सत्य की खातिर जिया वो, सत्य की खातिर मरा।
सत्य का था वो मसीहा, हर हृदय का पीर था।।

देवता योगी यति, नेता कहूँ या क्या कहूँ?
लोग माने या न माने, कर्म की तस्वीर था।।

कंस के अन्यायिओं को, दण्ड देने के लिए।
ठीक कहता हूँ कन्हैया, न्याय की शमशीर था।।

दूरदर्शी था वो इतना, शब्द भी असमर्थ हैं।
हार जाने के क्षणों में, जीत की तदबीर था।।

गोपियों के वस्त्र, माखन थे चुराये झूठ हैं।
वस्तुतः वह चक्रधारी, द्रोपदी का चीर था।।

मामा राधा कुब्जा भोगी, गोपियों का रसिक था।
लिखने वाला भागवत में, नान देव कोई नीच था।।

रुक्मिणी संग वर्ष बारह, तब रहा ब्रह्मचर्य में।
चरित्र में तो कृष्ण मेरा, पवित्र गंगा तीर था।।

जानते नहीं 'युद्ध नीति' कह रहे रणछोड़ था।
'युद्ध-भारत का विजेता' कृष्ण तो रणवीर था।।

भजन - 110

बड़े भाग्य से मनुष्य देही मिली है,
खा-खा जूनियों की मार, जीव हुआ लाचार।
चोट सीने पै चौरासी लाख झिली है।। बड़े भाग्य............

बना मकड़ी समान यहाँ आ के, फंस गया खुद जाल को बिछा के।
बन्दा एक काम कई, निगाह नागपुर गई,
आप बैठा है बम्बई, दिल दिल्ली है।। बड़े भाग्य............

मेरे बीस हैं मकान, चार कारें, लोग मुझे मिल मालिक पुकारें।
आठ ठेके सरकारी, सात बेटे और नारी,
बारह कुत्ते हैं शिकारी, एक बिल्ली है।। बड़े भाग्य............

तू बता दे कौन इन में है तेरा, चार दिन का सराय में बसेरा।
तेरे बाद यह समान किसी और का ही जान,
काहे शेखियों में बना शेख चिल्ली है।। बड़े भाग्य............

धनवान हो के इतना इतराया, कहे मैंने यह दिमाग से कमाया।
गर हो गया गरीब फिर कहे वाह नसीब,
कहे हाय! तकदीर मेरी ढिल्ली है।। बड़े भाग्य............

अन्त समय शरमामा पछताया, पाप कई पुण्य एक ना कमाया।
यमराज खाता खोल, जब कहे गा कि बोल,
बोल अब क्यों जबान तेरी सिली है।। बड़े भाग्य............

'नत्था सिंह' करे जैसा वैसा पाये, फल देने वाला मुनसिफ कहाये।
तेरे पुण्य और पाप, उन्हीं का है प्रताप,
कली कर्मों की फूल बन के खिली है।। बड़े भाग्य............

भजन - 111

इक झोली में फूल भरें हैं, इक झोली में काँटें,
अरे कोई कारण होगा।
तेरे बस में कुछ भी नहीं, यह तो बाँटने वाला बाँटें,
अरे कोई कारण होगा।।

पहले बनती हैं तकदीरें, फिर बनते हैं शरीर,
यह तो प्रभु की कारीगिरी है, तू क्यों है गंभीर।
अरे कोई कारण होगा।।

नाग भी डस ले तो मिल जाए किसी को जीवन दान,
चींटी से भी मिट सकता है, किसी का नामों-निशान।
अरे कोई कारण होगा।।

धन का बिस्तर मिल जाए, पर नींद को तरसे नैन,
काँटों पर भी सो कर आये, किसी के मन को चैन।
अरे कोई कारण होगा।।

सागर से भी बुझ न पाये, कभी किसी की प्यास,
कभी एक ही बूँद से, हो जाती है पूरी आस।
अरे कोई कारण होगा।।

मन्दिर मस्जिद में भी जा कर कभी न आये ज्ञान,
कभी मिले मिट्टी में मोती, कभी मिले भगवान।
अरे कोई कारण होगा।।

भजन - 112

मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जो कोई जैसी करनी करता, वैसा ही फल पाता।।

क्या साधु, क्या सन्त गृहस्थी, क्या राजा, क्या रानी,
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सब की कर्म कहानी।
बड़े-बड़े वह जमा खर्च का, सही हिसाब लगाता।।
मेरे दाता................

नहीं चले भाई उस के घर पे, रिश्वत और चालाकी,
उस के लेन-देन के बन्दे, रीति बड़ी ही बाँकी।
पुण्य का बेड़ा पार करे वह, पाप की नाव डुबाता।।
मेरे दाता................

बड़े-बड़े कानून प्रभु के, बड़ी-बड़ी मर्यादा,
किसी को कौड़ी कम नहीं देता, नहीं किसी को ज्यादा।
इसीलिए तो इस दुनिया का, जगत्पति कहलाता।।
मेरे दाता................

करता है वह न्याय सभी का, इक आसन पर डट के,
प्रभु का न्याय कभी न पलटे, लाख कोई सिर पटके।
समझदार तो चुप रह जाता, मूर्ख शोर मचाता।।
मेरे दाता................

अच्छी करनी करयो रे बन्दे, काम न करयो काला,
लाख आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला।
भले कर्म करते रहियो, समय गुज़रता जाता।।
मेरे दाता................

भजन - 113

कण-कण में बसा प्रभु देख रहा, चाहे पाप करो चाहे पुण्य करो।
कोई उसकी नज़र से बच न सका, चाहे पाप करो चाहे पुण्य करो।।

यह जगत् रचा उस ईश्वर ने, जीवों के कर्म करने के लिये।
यह आवागमन का चक्र चला, चाहे पाप करो, चाहे पुण्य करो।।

इंसान शुभ-अशुभ कर्म करे, अधिकार मिला है ज़माने में,
कर्मों से स्वतन्त्र बना है मगर, परतन्त्र सदा फल पाने में।
है न्याय प्रभु का बहुत बड़ा, चाहे पाप करो चाहे पुण्य करो।।

सब पुण्य का फल तो चाहते हैं, पर पुण्य कर्म नहीं करते हैं,
फल पाप का लोग नहीं चाहते, जिस में दिन-रात विचरते हैं।
मिलता है सब को अपना किया, चाहे पाप करो चाहे पुण्य करो।।

इस दुनिया में कृत कर्मों का, फल हरगिज़ माफ़ नहीं होता,
जब तक न यहाँ भुगतान करें, यह दामन साफ़ नहीं होता।
रहे याद नियम ये "पथिक" सदा, चाहे पाप करो चाहे पुण्य करो।।

जड़ से कटा हुआ पेड़ फल नहीं सकता।
जमीन से कटा हुआ आदमी बढ़ नहीं सकता।
और अधर्म से कमाया हुआ धन फल नहीं सकता।
अधकचरा ज्ञान रखने वाला आदमी संसार में फैल नहीं सकता।
लेकिन परोपकारी व्यक्ति हमेशा फलता फूलता है।

भजन - 114

चली जा रही है यह जीवन की रेल।
समझ के खिलोना इसे यों न खेल।।

कुशल कारीगर ने है इस को बनाया,
बड़ी अकलमन्दी से इस को चलाया।
पड़े इस के इंजन में कर्मों का तेल।। चली जा रही है.......

किसी को चढ़ावे किसी को उतारे,
घड़ी दो घड़ी के मुसाफिर हैं सारे।
यहीं पर जुदाई यहीं पर है मेल।। चली जा रही है.......

ज़रा सी खराबी अगर इस में आवे,
कदम एक भी यह सरकने न पावे।
सदा के लिए एक पल में हो फेल।। चली जा रही है.......

न अपनी खुशी से यहाँ लोग आये,
मगर सब ने आ कर यहाँ दिन बिताये।
कोई समझे मन्दिर, कोई समझे जेल।। चली जा रही है.......

रहे कुछ सफ़र भर में रोते चिल्लाते,
मगर कुछ महा–पुरुष हंसते हंसाते।
गये हर मुसीबत को हिम्मत से झेल।। चली जा रही है.......

'पथिक' रेलगाड़ी पे जो भी चढ़ा है,
कहीं न कहीं पर उतरना पड़ा है।
समय ने डाली सभी को नकेल।। चली जा रही है.......

भजन - 115

जगत् में समय बड़ा बलवान।
सब के सर पर राज करे, हो निर्धन या बलवान।।
जगत् में समय...........

पल में राज पलट जाते हैं, तख्तोताज उलट जाते हैं,
घटने वाले बढ़ जाते हैं, बढ़ने वाले घट जाते हैं।
पल में क्या से क्या हो जाए, हर कोई हैरान।।
जगत् में समय...........

कल था मस्त जो रंग रलियों में, रंग महल फूलों–कलियों में,
आज उसी को हम ने देखा, भीख माँगते इन गलियों में।
समय की उँगली पर दुनिया में, नाचे हर इन्सान।।
जगत् में समय...........

किसी समय खुशियाँ लाता है, मानव गाता मुस्काता है,
ऐसा दिन भी आता है जब, दिल का बाग उजड़ जाता है।
पल में आँसू बन बहती है, चेहरे की मुस्कान।।
जगत् में समय...........

'पथिक' दुःख में फँसते देखा, बीच भंवर के धंसते देखा,
उठी पलक तो लहरों पर ही, खिलखिला कर हँसते देखा।
और उठा कर खुद साहिल पे, छोड़ गया तूफ़ान।
जगत् में समय...........

चार वेद छः शास्त्र में बात मिली है दोय।
सुख दीन्हें सुख होय है, दुःख दीन्हें दुःख होय।।

भजन - 116

जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो, ओ३म् जपो, ओ३म् जपो।

ओ३म् ही सुख का सार है, जीवन है जीवन आधार है।
प्रीत न उसकी मन से तजो, ओ३म् जपो, ओ३म् जपो।।

चोला यही है कर्म का, करने को सौदा धर्म का।
इसके बिना गति ना को, ओ३म् जपो, ओ३म् जपो।।

मन की गति सम्भालिये, ईश्वर की ओर डालिये।
धोना जो चाहो जीवन को धो, ओ३म् जपो, ओ३म् जपो।।

साथी बना लो ओ३म् को, मन में बिठा लो ओ३म् को।
देख रहा क्या भाग्य को, ओ३म् जपो, ओ३म् जपो।।

भजन - 117

मन को निर्मल बना, और मस्तक झुका, जगत् माता।
आज मैं ध्यान तेरा लगाता।।

पत्ते-पत्ते में तेरा पता है, कौन कहता है तू लापता है।
सच्चा साधक तुझे, ज्ञान के नेत्र से, देख पाता।। आज मैं.....

कैसी शीतल पवन बह रही है, भक्त के कान में कह रही है।
जीव, कुछ होश कर, क्यों उसे भूल कर, कष्ट पाता।। आज मैं......

वह विधाता, सकल सुख-प्रदाता, क्यों तू उस की शरण में न आता?
भाग्यशाली है वो, पुण्य की पूँजी जो है कमाता।। आज मैं.....

पाप-कर्मों से मन को हटा लो, 'पाल' व्यसनों से जीवन बचा लो।
कैसी अद्भुत अहा, प्रेरणा दे रहा, दिव्य दाता।। आज मैं......

भजन - 118

की होया जे जन्म लिया, पर कदर जन्म दा पाया ना।
परमेश्वर दी भक्ति वाला, उस ते रंग चढ़ाया ना।।

फिरे भटकदा दर-दर बन्दे, खोज अन्दर दी कीती ना।
प्रीतम तेरे पास सी वसदा, तैनु नज़री आया ना।।

पापाँ वाले मैल चढ़ा कर, मन मैला तू कीता ए।
यम नियम दा पालन कर के, इस नू शुद्ध बनाया ना।।

मनुष्य जन्म अमोलक हीरा, मिट्टी विच रुलाया ए।
परोपकार ते भक्ति कर के कुछ वी लाभ उठाया ना।।

बुरे कम्माँ विच उमर गुज़ारी, नेक काम कोई कीता ना।
दीन दुःखी दी सेवा कर के, कुछ वी धर्म कमाया ना।।

बिना दाग सी चोला तेरा, दागों दाग लगावे वी।
कदी लगा कर ज्ञान दा साबुन इक वी दाग मिटाया ना।।

भले जनाँ दा संग न कीता, वेद ज्ञान तू सुनाया ना।
मूर्ख ने बेअक्ली कीती, शरण तेरी जो आया ना।।

जग में जननी जब बाल भई, तब एक रहि सुधि भोजन की।
तन में तरुणाई जबै प्रकटी, तब प्रीति बढ़ी तरुणी तन की।
तन वृद्ध भयो धन की तृष्णा, सब लोग कहे सनकी सनकी।
सुख शान्ति नाहि मिल्यो कबहुँ, रही अन्त समय मन में मन की।

भजन - 119

ईश्वर से संग जोड़ मानव, ईश्वर से संग जोड़।
विषयों से मुख मोड़ मानव, विषयों से मुख मोड़।।

प्रातः सायं तू सन्ध्या कर ले, वेद ज्ञान जीवन में भर ले।
शुभ कर्मों को न छोड़ मानव, ईश्वर से संग जोड़।।

जिस से मानव पाप कमाता, जन्म–मरण बन्धन में आता।
उस बाधक को तोड़ मानव, ईश्वर से संग जोड़।।

केवल धन संचय में रहना, विषय भोग सागर में बहना।
यह अन्धों की दौड़ मानव, ईश्वर से संग जोड़।।

बिन ईश्वर के जाने माने, दूध और पानी के न छाने।
वृथा यत्न करोड़ मानव, ईश्वर से संग जोड़।।

अविद्या का नाश किया कर, सदा ईश संग वास किया कर।
छोड़ जगत् की होड़ मानव, ईश्वर से संग जोड़।।

उद्यम कर ले छोड़ उदासी, जन्म–जन्म की पाप की राशि।
पाप–कलश को फोड़ मानव, ईश्वर से संग जोड़।।

क्यों फिरता तू मारा–मारा, ईश्वर का ले पकड़ सहारा।
यह है एक निचोड़ मानव, ईश्वर से संग जोड़।।

अब भी जो तू चेत न पाया, तो फिर तुझ को यह जग माया।
देगी तोड़ मरोड़ मानव, ईश्वर से संग जोड़।।

जड़ताई मति की हरत, पाप निवारत अंग।
कीर्त्ति, सत्य, प्रसन्नता, देता है सत्संग।।

भजन - 120

मत भूल मनुज पछतायेगा, प्रभु नाम सुमर सुख पायेगा।

यह दौलत आनी जानी है, यह दुनिया बहता पानी है।
नहीं काम और कुछ आयेगा, प्रभु नाम सुमर सुख पायेगा।।

क्यों मोह के झूले झूल रहा, तन मन यौवन पर फूल रहा।
यह फूल तेरा कुम्हलायेगा, प्रभु नाम सुमर सुख पायेगा।।

काया दो दिन की माया है, उड़ते पंछी की छाया है।
जो आया है सो जायेगा, प्रभु नाम सुमर पछतायेगा।।

यह झूठा तेरा मेरा है, तू प्रभु का है, प्रभु तेरा है।
प्रभु बोलत ही तर जायेगा, प्रभु नाम सुमर सुख पायेगा।।

भजन - 121

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।
है बिनती यही पल-पल, छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
यह चित्त न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे वैरी सब संसार बने, मेरा जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

जिह्वा पर तेरा नाम रहे, यही काम सुबह और शाम रहे।
बस ध्यान तेरा भगवान रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

भजन - 122

उस प्रभु की कृपा है बड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी।
घण्टी बज जाए कब कूच की, मौत हरदम सिरहाने खड़ी।।

किन्हीं शुभ कर्मों का फल है यह, तुझे मानव का चोला मिला,
जो आया है जाये गा वो, बन्द होगा न यह सिलसिला।
वेद की कहती एक-एक कड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी।।

जो करना है ले आज कर, कुछ खबर प्यारे कल की नहीं,
मानव जीवन को कर ले सफल, ढील दे इस में पल की नहीं।
टूट श्वासों की जाये लड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी।।

इस जवानी पे इतरा न तू, बातों-बातों में मुक जायेगी,
उभरा सीना सिकुड़ जायेगा और कमर भी यह झुक जायेगी।
टेक कर के चलेगा छड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी।।

भौतिकवादी चकाचौंध में, भूल उस को न मतिमन्द तू,
सच्चिदानन्द सुखकन्द की, जा शरण में ले आनन्द तू।
'वीर' कवि जाए विपदा हरी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी।।

क्षण भंगुर जीवन

क्षण भंगुर जीवन की कलिका कल प्रातः को जान खिली न खिली।
मलयाचल की शुचि शीतल मन्द सुगन्ध समीर चली न चली।।
कर काल कुठार लिए फिरता तन नम्र से चोट झिली न झिली।
जप ले प्रभु नाम अरी रसना फिर अन्त समय में हिली न हिली।।

भजन - 123

नहियों जिंदड़ी दा कोई विसा, नींवा हो के चल बन्देया।
नीवयां नू रब मिलदा, नीवां हो के चल बन्देया।।

तज अभिमान छड्ड माया दे गुमान नूं माया दे गुमान नूं,
झूठा अभिमान नइयों भाये, भगवान नू भाये भगवान नू।
तू सोच के कदम वधा, नीवां हो के चल बन्देया।।

माया दे गुमान विच चंगे-चंगे टुट गये, चंगे-चंगे टुट गये,
भर के तिजोरियाँ नू सारे, ऐथे सुट गए सारे ऐथे सुट गए।
कख वी ते नाल ना गया, नीवां हो के चल बन्देया।।

धीयां, पुत्तर, भाई बन्धु प्यार पै दिखान्दे ने,
चल के मसाना तक झट मुड़ आन्दे ने, झट मुड़ आन्दे ने।
कोई वी ते नाल ना गया, नीवां हो के चल बन्देया।।

सेवा उपकार वाली ज़िन्दगी, गुज़ार तू, ज़िन्दगी, गुज़ार तू,
मैली ज़िन्दगी दे रंग, रूप नू संवार तू, रूप नू संवार तू।
दुःखिया दा दर्द वंडा, नीवा हो के चल बन्देया।।

मन विच तेरी इस गल नू उतार लै, गल नू उतार लै,
ओ३म् नाम जप के जन्म सुधार लै जन्म सुधार लै।
तू जग विचों हँसदा जा, नीवा हो के चल बन्देया।।
नहियों जिंदड़ी दा कोई विसा, नीवां हो के चल बन्देया।।

श्वास-श्वास पर ओ३म् जप वृथा श्वास मत खोय।
क्या जाने इस श्वास को आवन होय न होय।।

भजन - 124

(तर्ज : यशोमति मैय्या से बोले नन्दलाला)

गति जीव आत्मा की कोई समझाए।
कहाँ से यह आए, कहाँ लौट जाए।।
कहाँ लौट जाए। गति जीव.........

कभी इस का आना जाना किसी ने न जाना,
कहाँ का निवासी है यह, कहाँ है ठिकाना।
किसी को भी यह अपना पता न बताए।।
कहाँ लौट जाए। गति जीव.........

मिली एक नगरी इसको अयोध्या निराली,
जो है आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली।
सिर्फ चार दिन ही इस का बादशाह कहाए।।
कहाँ लौट जाए। गति जीव.........

प्रभु ने हज़ारों तोहफ़े बना कर दिए हैं,
कुदरती नज़ारे जग में इसी के लिए हैं।
इन्हें छोड़ क्यों जाता है समझ में न आए।।
कहाँ लौट जाए। गति जीव.........

'पथिक' यह प्रभु की माया प्रभु जानता है,
प्रभु के सिवा न कोई पहचानता है।
जो महान् शक्ति सारे विश्व को चलाए।।
कहाँ लौट जाए। गति जीव.........

भजन - 125

(तर्ज : या खुदा सोई किस्मत जगा दे)

ज़िन्दगी का सफ़र करने वाले, अपने मन का दीया तो जला ले।

वक्त की धार यह कह रही है, कष्ट क्यों आत्मा सह रही है,
देख ऐसी जगह तू खड़ा है, ज्ञान गंगा जहाँ बह रही है।
बढ़ के गंगा में डुबकी लगा ले, अपने मन का दीया तो जला ले।।

रात लम्बी है गहरा अन्धेरा, कौन जाने कहाँ हो बसेरा,
तू है अनजान मन्ज़िल का राही, चलते रहना ही है काम तेरा।
रौशनी से डगर जगमगा ले, अपने मन का दीया तो जला ले।।

सूनी सूनी ये मन्ज़िल की राहें, चूमना तेरे कदमों को चाहें,
गहन वन में कहीं खो न जाना, भटक जाएँ न तेरी निगाहें।
हर कदम सोच कर तू उठा ले, अपने मन का दीया तो जला ले।।

बस तुझे है अकेले ही चलना, बहुत मुमकिन है गिरना फिसलना,
गिर के गिरना नहीं बात कुछ भी, है बड़ी बात गिर के सम्भलना।
यह 'पथिक' बात दिल में बसा ले, अपने मन का दीया तो जला ले।।

आओ करें यह मनन

हे ईश्वर, मेरा आज का दिन सब से शुभ व उत्तम दिन हो। मैं कोई ऐसा कार्य नहीं करुँ जिस से किसी का अहित हो। मेरा यह जीवन न केवल अपने लिये, बल्कि अपने अच्छे परिवार के लिये, अपने सुन्दर समाज के लिए, अपने प्यारे देश के लिए और समस्त संसार के लिए कल्याणकारी व मंगलकारी हो।

भजन - 126

ईश्वर से करते जाना प्यार ओ नादान मुसाफ़िर।
जीवन की कर ले नैया पार ओ नादान मुसाफ़िर।।
ईश्वर से............

प्रीति न तोड़ देना, आशा न छोड़ देना।
डूबेगा वरना मंझधार, ओ नादान मुसाफ़िर।।
ईश्वर से............

बदियों से बचते रहना, जग में शुभ कर्म कमाना।
जीवन के जो पाये हैं दिन चार, ओ नादान मुसाफ़िर।।
ईश्वर से............

दुःखियों का दर्द मिटा ले, तन–मन–धन भेंट चढ़ा ले।
जितना हो कर ले पर–उपकार, ओ नादान मुसाफ़िर।।
ईश्वर से............

जीवन अनमोल हीरा, मिट्टी न रोल वीरा।
तुझको समझाया बारम्बार, ओ नादान मुसाफ़िर।।
ईश्वर से............

ईश्वर है अन्त सहाई, उसको मत भूलो भाई।
धोखा है 'देश' सभी संसार, ओ नादान मुसाफ़िर।।
ईश्वर से............

जो बीत गई सो बीत गई, बीती का शिकवा कौन करे
जब तीर कमां से निकल गई, फिर तीर का पीछा कौन करे।

भजन - 127

धर्म को छोड़ मत भाई, तुझे मुक्ति को पाना है।
दो दिन की ज़िन्दगी है, यहाँ से सब को जाना है।।

फँसा है क्यों अरे मानव, यहाँ कुछ भी न अपना है,
न कोई है तेरा मेरा, यहाँ सब कुछ बेगाना है।
अरे तू चेत तो मानव, यह जग अस्थिर ठिकाना है।। धर्म को......

आकुलता को हटा मन से, तू तज दे मोह ममता को,
सदा सच बोल, संयम धर, बसा ले, उर में समता को।
हटा दे पाप का पर्दा, तुझे शिवपुर जो जाना है।। धर्म को......

दिये उपदेश ऋषिवर ने, तू उन को ध्यान में धर ले,
यह अवसर फिर न आयेगा, यह नर तन सार्थक कर ले।
तू आ जा उस के चरणों में, यही सच्चा ठिकाना है।। धर्म को......

भजन - 128

मन चंचल चल ओ३म् शरण में।
ओ३म् शरण में, ओ३म् शरण में।।

ओ३म् ही तेरा जीवन साथी, मित्र हितैषी, सब दिन राती।
दो दिन के हैं ये जग वाले, साथ लिया है, सुख न देंगे जन्म-मरण में।।

कितने दिन हंस खेल लिया है, सुख पाया दुःख झेल लिया है।
रुक जा मत जा माया के संग, डूब मरे गा कूप गहन में।।

जग में तूने प्यार बढ़ाया, कितना सिर पर भार चढ़ाया।
पग-पग मुश्किल होगी रे पगले, भव सागर के पार करन में।।

सब चिन्तायें मिट जायें तेरी, भज ले तज दे हेरा-फेरी।
ओ३म् नाम का ले के सहारा, आनन्द पा ले ईश शरण में।।

भजन - 129

आएँ संकट घने, चाहे शत्रु बने सब ज़माना।
उस प्रभु को कभी न भुलाना।।

वह है अपना तो संसार अपना, वह विरोधी तो कोई न अपना।
बिन दया दृष्टि के, इस सकल सृष्टि में न ठिकाना।। उस प्रभु.......

लाखों बातों की एक बात है यह, पुण्य कर्मों की पूंजी कमा ले।
भावना यज्ञमय, शुद्ध पावन हृदय को बनाना।। उस प्रभु.......

उस को भूलो सभी कष्ट आवें, काम क्रोधादि शत्रु सतावें।
बन के धर्मात्मा, चित्त परमात्मा में लगाना।। उस प्रभु...........

चाहो आये न दुःख रोग कोई, है जगानी जो तकदीर सोई।
'पाल' तो भक्ति से, उस परमशक्ति के गीत गाना।। उस प्रभु.......

भजन - 130

पग-पग मुझे गिराता आया यह मेरा अभिमान।
जीवन पथ पर भटक रहा हूँ राह दिखा भगवान।।

मैंने सत् की राह न जानी, लीला तेरी न पहचानी।
अपने को समझा ज्ञानी, करता रहा सदा नादानी, अब डोलूँ हैरान।।

मन मन्दिर में न दीप जलाया, न ही तुझ को शीश झुकाया।
माया का फेरा है मन पर, गर्वित हूँ माटी के तन पर, मैं मूर्ख अनजान।।

नेकी छोड़ी बदी अपनाई, गहरी बात समझ न आई।
अब जो हुआ उसे जाने दो, अपनी शरण में आने दो, मैंने छोड़ा सकल जहान।।

भजन - 131

तुम मेरे जीवन के धन हो, और प्राणाधार हो।
एक तुम दाता दयालु, सब के पालनहार हो।।
जागते सोते कभी भी, मैं तुम्हें भूलूं नहीं।
भेष दो राजा का मुझ को, या गले कंठहार दो।। तुम मेरे.....
भर रहा धन-धान्य से ही, सब के तू परिवार को।
देते तुम थकते नहीं हो, ऐसी तुम सरकार हो।। तुम मेरे.....
जप रहे तेरा नाम पंछी, गीत गाती है पवन।
रंग रहे रंगों में जग को, अजब रचनाकार हो।। तुम मेरे.....
ज़िन्दगी की नाव मैंने, सौंप दी प्रभु आपको।
तुम डुबाओ या बचाओ, मेरे खेवनहार हो।। तुम मेरे.....

भजन - 132

तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं।।
जब से याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाए हैं,
क्या जानूँ इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाए हैं।
हूँ शर्मिंदा आप से, क्या बतलाऊँ मैं।। तेरे दर को.......
मेरे पाप-कर्म ही तुझ से प्रीति न करने देते हैं,
कभी जो चाहूँ मिलूँ आप से, रोक मुझे ये लेते हैं।
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊँ मैं।। तेरे दर को........
है तू नाथ! वरों का दाता, तुझ से सब वर पाते हैं,
ऋषि-मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते हैं।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं।। तेरे दर को....
जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उमर सँभालूँ मैं,
प्रेम-पाश में बंधा आप के गीत प्रेम के गा लूँ मैं।
जीवन प्यारे 'देश' का सफल बनाऊँ मैं।। तेरे....

भजन - 133

डूबतों को बचा लेने वाले, मेरी नैया है तेरे हवाले।।

लाख अपनों को मैंने पुकारा, सब के सब कर गए हैं किनारा,
और कोई न देता दिखाई, सिर्फ तेरा ही अब तो सहारा।
कौन तुझ बिन भँवर से निकाले, मेरी नैया है तेरे हवाले।।

जिस समय तू बचाने पे आवे, आग में भी बचा कर दिखावे,
जिस पर तेरी दया दृष्टि होवे, कैसे उस पे कहाँ आँच आवे।
आँधियों में भी तू ही सम्भाले, मेरी नैया है तेरे हवाले।।

पृथ्वी सागर व पर्वत बनाए, तूने धरती पे दरिया बहाये,
चाँद सूरज करोड़ों सितारे, फूल आकाश में भी खिलाये।
तेरे सब काम जग से निराले, मेरी नैया है तेरे हवाले।।

बिन तेरे चैन मिलता नहीं है, फूल आशा का खिलता नहीं है,
तेरी मरज़ी बिना तो जहाँ में, एक पत्ता भी हिलता नहीं है।
तेरे बस में अन्धेरे उजाले, मेरी नैया है तेरे हवाले।।

दुःखों से अगर चोट खाई न होती।
जो गम की घटा सिर पै छाई न होती।।
जो सुख चैन मिलता सुदामा को घर में।
तो फिर याद मोहन की आई न होती।।

भजन - 134

भरोसा कर तू ईश्वर पर, तुझे धोखा नहीं होगा।
यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।।

कभी सुख है कभी दुःख है, यह जीवन धूप छाया है।
हंसी में ही बिता डालो, बितानी ही यह माया है।।

जो सुख आवे तो हंस देना, जो दुःख आवे तो सह लेना।
न कहना कुछ कभी जग से, प्रभु से ही तू कह लेना।।

यह कुछ भी तो नहीं जग में, तेरे बस कर्म की माया।
तू खुद ही धूप में बैठा, लखे निज रूप की छाया।।

कहाँ यह था, कहाँ तू था, कभी तो सोच ए बन्दे।
झुकाकर शीश को कह दो, प्रभु वन्दे! प्रभु वन्दे।।

भजन - 135

न यह मेरा न यह तेरा, सब कुछ है भगवान का।
भूमि उस की पानी उस का, कण-कण उसी महान् का।।

हम सब पुत्र-पौत्र हैं उस के, खेल रहा करतार रे,
उस की ज्योति सब में चमके, सब में उस का प्यार रे।
मन मन्दिर में दर्शन कर ले, उस प्राणों के प्राण का।।

तीर्थ जाये मन्दिर जाये, अनगिनत देव मनाये रे,
दीन रूप में प्रभु छिपे हैं, देख के नैन चुराये रे।
मन की आँखें खुल जायें तो, कटे-फंद जड़ ध्यान का।।

कौन है ऊँचा कौन है नीचा, सब हैं एक समान रे,
प्रेम की ज्योति जगा हृदय में, सब में प्रभु पहचान रे।
दर्शन उस के पा सकता बस, सरल हृदय इन्सान का।।

भजन - 136

सारे जहाँ के मालिक, तेरा ही आसरा है।
राज़ी हैं हम उसी में, जिस में तेरी रज़ा है।।

हम क्या बताएँ तुझ को, सब कुछ तुझे खबर है,
ह़र हाल में विधाता, तेरी तरफ़ नज़र है।
किस्मत है वो हमारी, जो तेरा फैंसला है।। राज़ी है हम.......

हाथों को हम दुआ की, ख़ातिर में लाएं कैसे,
सजदे में तेरे आ के, सर को झुकाएँ कैसे।
मजबूरियाँ हमारी, सब तू ही जानता है।। राज़ी है हम.......

रो के कटे या हंस क़े, कटती है जिन्दगानी,
तू गम दे या खुशी दे, सब तेरी मेहरबानी।
तेरी खुशी समझ कर, सब गम भुला दिया है।। राज़ी है हम...

दुनिया बना के मालिक, जाने कहाँ छिपा है,
आता नहीं नज़र तू, बस एक यही गिला है।
भेजा है इस जगत् में, जो तेरा शुक्रिया है।। राज़ी है हम.....

हम आये शरण तुम्हारी

हम आये शरण तुम्हारी, हम आये शरण तुम्हारी,
हर कुटिया में अमृत भर दो, रोम-रोम सब पुलकित कर दो।
तेरे बने पुजारी, हम आये शरण तुम्हारी।।
मीठे-मीठे वचन सुनायें, फूल बने सबको महकायें।
हो कर हम हितकारी, हम आये शरण तुम्हारी।।
बुरे भलें हैं तेरे भगवन्, आशानन्द हैं तेरे अर्पण।
भिक्षा डाल भंडारी, हम आये शरण तुम्हारी।।

भजन - 137

मुझे तूने दाता, सब कुछ दिया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।।

मुझे है सहारा, तेरी बन्दगी का,
यही है गुज़ारा, मेरी जिन्दगी का।
यह बन्दा तेरे ही, सहारे जिया है।।
तेरा शुक्रिया.............

मिला जो यहाँ सब, तेरी बदौलत,
मेरा कुछ नहीं, यहाँ तेरी है दौलत।
उसे क्या कमी जो, तेरा हो लिया।।
तेरा शुक्रिया.............

न मिलती दी हुई, अगर दात तेरी,
तो क्या थी ज़मीं में, औकात मेरी।
ये बन्दा तो तेरे, सहारे जिया है।।
तेरा शुक्रिया.............

ये जायदाद दी है, ये औलाद दी है,
मुसीबत में हर वक्त, इमदाद की है।
तेरा ही दिया, मैंने खाया पिया है।।
तेरा शुक्रिया.............

भरोसा किसी से न कर साथ का।
चले साथ तेरे दिया हाथ का।।

भजन - 138

अच्छे बच्चे ही जगत् में सारे चमके।
जैसे चन्दा चमके जैसे तारे चमके।।

अच्छी बात जहाँ मिल जाये उसे करो स्वीकार।
बुरी बात को सदा छोड़ने को रहना तैयार।।
अच्छे बच्चे ही..........

माता-पिता की आज्ञा पालन जो श्रद्धा से करते।
उन बच्चों की सब खुशियों से प्रभु झोलियाँ भरते।।

नित्य नियम के मात-पिता की चरण-धूल जो लेते।
दुःख तकलीफें रोग-शोक फिर, उन्हें कष्ट नहीं देते।।

जहाँ अपूज्यों की पूजा हो, पूज्यों का अपमान।
वहाँ अकाल मृत्यु और भय का चले तूफान।।

बड़े बुजुर्गों की सेवा जो करे झुका कर माथ।
आयु, विद्या, यश, बल रहते सदा उसी के साथ।।

बड़ों की सेवा कर के, हो गये कितने महान।
"पथिक" प्रभु श्री रामचन्द्र, श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।

आँख दी बन्दे को ठोकर से बचाने के लिये,
दी जुबां उसको प्रभु के गीत गाने के लिये।
दिल मिला है बेकसों पर रहम खाने के लिये,
हाथ इन्सां को दिये, देने दिलाने के लिये।।
पाँव दोनों पाये अच्छी राह पर जाने के लिये,
सर मिला मालिक के चरणों पर झुकाने के लिये।

भजन - 139

प्यारे बच्चो सुनो ध्यान से, काम की बातें तुम्हें सुनायें।
मानव जीवन में उपयोगी, ऋषियों मुनियों की शिक्षायें।।

ऋषियों ने उपकार किया है, ग्रन्थों का भण्डार दिया है।
पढ़ कर ऋषियों के ग्रन्थों को मानवता की शान बढ़ायें।।

ब्रह्मचर्य का पालन करना, ज्ञान से मन की झोली भरना।
घोर परिश्रम कर के सीखें उत्तम सभी कलायें।।

दुर्व्यसनों को दूर हटाना, दुष्ट पुरुष के पास न आना।
सद्गुण सदव्यवहार हमेशा, अपने जीवन में अपनायें।।

पूरा ध्यान लगा कर पढ़ना, कदम-कदम पर आगे बढ़ना।
सत्-पथ पर जो कदम बढ़ाया, कभी न पीछे उसे हटायें।।

सच्चरित्र है असली गहना, सभी महापुरुषों ने पहना।
जान चली जाये तो जाये, सच्चरित्र न कभी गंवायें।।

सदा बड़ों की सेवा करना, दुःखी जनों के संकट हरना।
"पथिक" हमेशा देश की ख़ातिर तन-मन-धन की भेंट चढ़ायें।।

विशेष - वेद चार हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
चारों वेदों की मंत्र संख्या इस प्रकार है -
ऋग्वेद में - 10522 मंत्र हैं।
यजुर्वेद में - 1975 मंत्र हैं।
सामवेद में - 1875 मंत्र हैं।
अथर्ववेद में -5977 मंत्र हैं।
चारों वेदों के मंत्रों की कुल संख्या 20349 है।

भजन - 140

(तर्ज : दिल लूटने वाले)

हम आर्य जाति की कन्या हैं, गौरव को सदा बढ़ायेंगी।
जो जो कुरीतियां हम में हैं, हम सब को दूर भगायेंगी।।
समझो न हमें कन्यायें हैं, हम दुःख नाशिनी दुर्गा हैं।
दिखला कर वीरता अपनी को, दिल दुश्मन का दहलायेंगी।।
समझो न हमें अनाड़ी हैं, और गुड़िया खेलन हारी हैं।
बचपन से ही जो करना है, वह कर के ही दिखलायेंगी।।
हिन्दू समाज दुर्दशा तेरी, ना देखी जाती आँखों से।
हो रहा तुम्हारा घोर पतन, हम सब को आर्य बनायेंगी।।
हैं पड़ी अविद्या में अब तक, इस देख की लाखों ललनायें।
बिन त्याग तपस्या के "प्रकाश", सद्-मार्ग पर न आयेंगी।।

भजन - 141

(तर्ज : तेरे कूचे में)

यदि इन देवियों में, वेद का प्रचार हो जाये।
तो बेड़ा डूबता भारत का, इकदम पार हो जाये।।
सती सीता सावित्री सी, बनें जो गार्गी बहनें।
फैलायें वेद की शिक्षा, सुखी संसार हो जाये।।
करें दो काल यह सन्ध्या, बिठा कर पास बच्चों को।
तो आने वाली नस्लों का, न क्यों उद्धार हो जाये।।
तुम्हारे गोद में खेलें, जो अर्जुन भीम से बालक।
तो क्यों न दुनिया भर में, देश यह सरदार हो जाये।।
कहे "नन्दलाल" बहनों अगर, कौशल्या बन दिखाओ तुम।
तो फिर भारत में क्यों न राम सा अवतार हो जाये।।

भजन - 142

तर्ज : फिरकी वाली तू कल फिर आना

योगी आया वो वेदों वाला, किया उजियाला, दुनिया में सच्चे ज्ञान का।
वो तो देवता था सारे ही जहान का।।

आदि में थी दया जिस के, अंत में आनंद था, नाम भी कितना प्यारा था।
स्वयं पिया ज़हर हम को अमृत पिला गया, कभी न हिम्मत हारा था।।

ईश्वर भक्ति की शक्ति ही इतनी शक्ति रखती, जगती सारी ने ऋषि पहचाना।
वो वेद ज्ञान माना जो कारण था कल्याण का.... वह तो देवता।।

आड़ में धर्म की यहाँ दीन दुःखियों पर ज़ुल्म गुजारे जाते थे।
अनेक ही द्रोपदी सावित्री सतियों के चीर उतारे जाते थे।।

आठ बरस की विधवा रोती रो-रो जीवन खोती, सोती जाति को आन जगाया।
और पूज्य बताया संचार किया प्राण का...वह तो देवता....।।

प्रेम की बहा क़र गंगा मिला गया वो अपने जिगर के टुकड़ों को।
मुद्दत से गुलाम थी मिटा गया वो भारत माँ के दुःखड़ों को।।
देश दीवाना, वो मरदाना, जल गया बन परवाना लाना चाहता था।
वो आज़ादी, मर्यादावादी आर्यों से इंसान का .. वह तो देवता..।।

करने को उपकार ऋषि सारे ही जहान का डट कर चला अकेला था।
चेला था न चेली कोई साथी था न संगी, ईश्वर एक सहेला था।।
विष जब खाया, प्रभु गुण गाया ऋषिवर तब मुस्काया, आया प्रभु।
मैं तेरी शरण में 'सत्यदेव' भजन में मज़ा है स्वर तान का....।।

सूर्य सोने चल दिया, लेकिन सितारों को जगाकर।
एक दीपक बुझ गया, लाखों चिरागों को जलाकर।
कौन? दयानन्द।

भजन - 143

तर्ज : तुम्हीं मेरे मंदिर तुम्हीं मेरी पूजा

महर्षि दयानन्द दया का था सागर,
जगत् के व्यथा की दवा बन के आया।
तिमिर छा रहा था अविद्या का भू पर,
गगन में दिवाकर नया बन के आया।।

किसी का खुदा आसमां में पड़ा था,
किसी का प्रभु क्षीर सागर में सोया।
धरा पर बहुत ईश्वर लग रहे थे,
सभी में है व्यापक ऋषि ने बताया।।

यह मानव भटकता चला जा रहा था,
नहीं जानता था किधर जा रहा था।
दयालु दयानन्द भटकते जगत् का,
सहारा हुआ देवता बन के आया।।

हमारी सरस संस्कृति मिट रही थी,
सरल देव भाषा विदा हो चुकी थी।
ऋणी हम तुम्हारे महर्षि हमारे,
पुनः भारतीयों को तूने जिलाया।।

ऋषिराज मेरी यही अर्चना है,
तुम्हारे चरण में यही वंदना है।
माने न माने कोई पर दयानन्द,
सकल विश्व का तू सखा बन के आया।।

भजन - 144

तर्ज : दमा-दम मस्त कलंदर

ओ देव दयानन्द, देख लिया तेरे कारण,
जन-जन को, हम सब को मिला है ये नवजीवन।
तुझे है सौ-सौ वंदन, करें तेरा अभिनंदन।। ओ देव....

हुआ अज्ञानता का दूर अंधेरा,
घर-घर ज्ञान के दीप जले तेरे कारण।। - जन-जन को....

झाड़-झंखाड़ तूने जड़ से उखाड़ा,
बगिया में नए-नए फूल खिले तेरे कारण।। - जन-जन को...

गैर की धमंकियों से दबने वाले,
खतम हुए हैं सब वह सिलसिले तेरे कारण।। - जन-जन को..

हम एक फूँक से ही उड़ जाते थे,
'पथिक' तूफ़ान से भी अब न हिलें तेरे कारण।। - जन-जन को...

भजन - 145

(तर्ज : न मुंह छिपा के जियो)

प्रभु को ध्याते रहे और कदम बढ़ाते रहे,
कई मुसीबतें आईं वो मुस्कराते रहे।

गिरे हुए थे जमीं पर अछूत जो बन के,
उठा के उनको प्रेम से गले लगाते रहे।

बिछुड़ गए जो ईसाई या मुसलमां हो के,
वो आर्य धर्म में फिर से उन्हें मिलाते रहे।

जहान वाले ऋषि को ज़हर पिलाते थे;
ऋषि तो वेद का अमृत 'पथिक' पिलाते रहे।

भजन - 146

मेरे देवता के बराबर जहाँ में,
कहीं देवता ना कोई और होगा।
ज़माने में होंगे बड़े लोग पैदा,
दयानन्द सा ना कोई और होगा।।

चरित्र हैं देखे बड़े ऊँचे-ऊँचे,
नज़र भर इधर भी ज़रा देख लेना।
चरित्र मिलेगा ऋषिवर का ऐसा,
ना देखा सुना ना कोई और होगा।।

इधर था सिर्फ ब्रह्मचारी अकेला,
उधर था विरोधी यह सारा ज़माना।
विजय पाने वाला दयानन्द जैसा,
न अब तक हुआ न कोई और होगा।।

उठा के ज़माने का इतिहास देखो,
तो अपनों को लाखों हितैषी मिलेंगे।
मगर दुश्मनों का भी हित चाहने वाला,
ऋषि के सिवा ना कोई और होगा।।

कहा मुस्करा के यूँ प्यारे ऋषि ने,
कि इच्छा तुम्हारी प्रभो! पूर्ण होवे।
गया जिस तरह से दयानन्द प्यारा,
जहाँ में गया ना कोई और होगा।।

अगर विश्व भर के बड़े व्यक्तियों की,
निष्पक्ष हो के तुलना करो तो।
दयानन्द जैसा दयानन्द ही था,
"पथिक" फैंसला न कोई और होगा।।

भजन - 147

दुन्दुभि वेदों की, चहुँ ओर बजा दी तुम ने।
आग पानी में दयानन्द लगा दी तुम ने।।

सो रहे थे आर्य, लम्बी चादर ताने।
आ के संजीवनी, ऋषि थी पिला दी तूनें।।

भिड़ गया तू अकेला, भीड़ थी लाखों की उधर,
शान्ति फैलाने गया, तू गया इधर या उधर।
नींव पाखण्ड की, इक बार हिला दी तूने।।

खाई ईंटें कहीं पे, पत्थरों को सहा तुम ने,
आगे गढ़ता ही गया, बन्धनों को तोड़ा तुम ने।
स्त्री जाति के, रोगों को शफ़ा दी तूने।।

ऐसे पत्थर का बना था, कोई हिला न सका,
देश पर हो गया कुर्बान, क्या-क्या तूने सहा।
सत्य का अर्थ है क्या, यह बात बता दी तूने।।

ज़हर पीता रहा, और बाँटता रहा अमृत,
जुल्म सहता रहा और करता रहा सब को मुक्त।
घुट्टी ओ३म् नाम की, आर्यों को पिला दी तूने।।

तेरे रास्ते पे, हज़ारों की कतारें है खड़ी,
तेरे दीवाने ने सर पे है, बाँध ली पगड़ी।
ऐ ऋषि कैसी है, यह प्यास जगा दी तूने।।

हर वर्ष लगते हैं, मेले तेरी ही यादों में,
तेरा यह कर्ज़, चुकाएंगे तेरे दीवाने।
आर्य जाति को, सच्ची राह दिखा दी तूने।।

भजन - 148

(तर्ज : बिना बदरा के बिजुरिया)

सोई कौम को जगाया, स्वामी दयानन्द ने।
चमत्कार था दिखाया, स्वामी दयानन्द ने।।

खुद तो ईंटें पत्थर खाए, खंजर बरछी भाले,
सोलह-सत्रह बार ऋषि ने, पिए ज़हर के प्याले।
सब को अमृत ही पिलाया।। स्वामी..........

उजड़ गया था बाग हमारा, सूखी डाली-डाली,
टंकारा का यह संन्यासी, आ गया बन के माली।
फिर से बाग को महकाया।। स्वामी...........

आसमान को देख-देख कर दुःखी आत्मा तरसी,
प्यासे मन की प्यास बुझाने, बूँद न कोई बरसी।
बादल वेदों का बरसाया।। स्वामी...............

लावारिस लाचार बनी, बैठी थी अबला नारी,
अंदर का विश्वास जगाया, हिल गई दुनिया सारी।
ऊँचे आसन पर बैठाया।। स्वामी...............

पिछड़े हुए समाज के अंदर, आ गई नई बहारें,
छुआछूत और जात-पात की तोड़ गया दीवारें।
चक्कर शुद्धि का चलाया।। स्वामी...............

कितनी सदियाँ बीत गई हैं, गिरते और संभलते,
"पथिक" मिली न मंज़िल कोई, राह पे चलते-चलते।
सीधा रस्ता बताया।। स्वामी...............

भजन - 149

हमारे देश में भगवन्, भले इंसान पैदा कर।
सकल सुख सम्पदा वाली, सुखी संतान पैदा कर।।

यहाँ पर ब्रह्मवर्चस्वी, कुशल विद्वान ब्राह्मण हों,
धनुर्धर वीरवर योद्धा, महारथियों के वर्णन हों।
प्रशासक दुष्ट खलनायक, महा बलवान पैदा कर।।

दुधरु स्वस्थ गौएं हों, अश्व और बैल बलशाली,
विजेत पुरुष रथवाही, गृहणियां सुघड़ घरवाली।
घरों में सभ्यता वाले, युवक यजमान पैदा कर।।

जहाँ जिस वक्त हम चाहें, वहाँ बादल बरस जायें,
फलों से युक्त औषधियाँ, जहाँ जायें सरस जायें।
सदा निरोग रहने के, सभी सामान पैदा कर।।

हमें वह प्राप्त हो जाये, जहाँ जिसकी जरूरत हो,
मगर जो प्राप्त हो उसकी, सुरक्षा की भी सूरत हो।
"पथिक" स्वाध्याय सत्संग का, सदा सद्ज्ञान पैदा कर।।

पुण्य की बेल घटी, पाप बढ़ते जाते हैं।
इसलिए हर जगह, संताप बढ़ते जाते हैं।।
अच्छे पौधे तो पनपते हैं, पानी देने पर।
झाड़-झंखाड़ तो अपने आप बढ़ते जाते हैं।।

भजन - 150

जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी। विश्व प्रेम प्रतिमा अति प्यारी।।

सत्य सुधा बरसाने वाला, स्नेह लता सरसाने वाला।
सौम्य सुमन विकसाने वाला, विश्व विमोहक भव भयहारी।।

इस के नीचे बढ़े अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवे चहुँदिशि सारी।।

इस से सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति, दानव द्वेष दमन हों।
अति उज्जवल अति पावन मन हों, प्रेम तरंग बहे सुखकारी।।

इसी ध्वजा के नीचे आ कर, ऊँच-नीच का भेद भुला कर।
मिले विश्वमुद मंगल गा कर, पन्थाई पाखण्ड विसारी।।

इसी ध्वजा को ले कर कर में, भर दें वेद ज्ञान घर-घर में।
सुभग शान्ति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अंधियारी।।

विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन ज्योति जगावें, त्यागपूर्ण हो वृत्ति हमारी।।

आर्य जाति का सुयश अक्षय हो, आर्य ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी।।

आर्यवीरों राष्ट्र की मशाल को संभाल लो
एक दीप बुझ चले दूसरे को बार लो
यह दयानंद की कसम, श्रद्धानन्द की कसम
वन्दनीय मातृभूमि बोल विश्वमातरम्।

भजन - 151

शान्ति गीत

शान्ति कीजिए, प्रभु त्रिभुवन में-२

जल में थल में और गगन में,
अन्तरिक्ष में अग्नि-पवन में।
औषधि वनस्पति वन-उपवन में,
सकल विश्व के जड़-चेतन में।।

ब्राह्मण के उपदेश वचन में,
क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य जनों के होवे धन में,
और शूद्र के हों चरणन में।।

शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में,
नगर ग्राम में और भवन में।
जीव मात्र के हो तन-मंन में,
और प्रकृति के हो कण-कण में।।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वदेवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।
ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

गायत्री महामंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्

संगठन-सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।१।।

हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन–वृष्टि को।।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।२।।

प्रेम से मिल कर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।३।।

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों।।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिस से बढ़े सुख–सम्पदा।।

पावन स्मृति में :-

स्व० श्री घनश्याम लाल वर्मा

(20.03.1937 - 24.08.2008)

: स्मरणकर्ता :

श्रीमती शशि वर्मा (धर्मपत्नी)
श्री दीपक वर्मा (पुत्र)
श्रीमती तनु वर्मा (पुत्रवधु)
कु० तरुनिमा (पौत्री)
कु० रिधि (पौत्री)

श्रीमती संगीता विज (पुत्री)
श्री संदीप विज (दामाद)
चि० मिहिर विज (दोता)

श्री आनन्द किशोर गण्डोत्रा (भ्राता)
श्रीमती इन्द्रा गण्डोत्रा (भाभी)
श्री राजीव गण्डोत्रा (भतीजा)
श्रीमती अनिता गण्डोत्रा (पुत्रवधु)
श्रीमती पूनम सोनी (भतीजी)
श्री प्रवीण सोनी (दामाद)

श्रीमती दर्शन भण्डो (बहन)
श्रीमती कमला रानी भण्डो (बहन)